ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार
एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ याग के होता (पूर्वार्द्ध) 12-मई-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है तो इसलिए वह अनन्तवान है और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं।

आज का हमारा वेद-मन्त्र यज्ञम ब्रह्मा तपम ब्रहे व्रता वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू तपस्वी बन तपाम भुतम ब्रह्मणा वृतम देवत्वाः जब तू तपस्या में परणित हो जाएगा तो तू देवता की कोटि में और अपने देवत्वः को प्राप्त होता रहेगा। हमारे यहां वेद का मन्त्र प्रायः तपने के लिए अपनी वार्ता प्रगट कर रहा है। उक्त वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा वर्णस्सुतम देवाम भुतम ब्रह्मा-वेद का वाक् यह कहता है कि हे मानव! तू पंच-महाभूतों के लोक में विद्यमान है और यह जो तेरा मानवीय शरीर है यह पंच-महाभूतों का एक पिण्ड है और इसमें चेतना अपना वास कर रही है और चेतना में चेतना का जब भास होने लगता है तो मानव तू अपनी महानता को प्राप्त होता हुआ तू इस सागर से पार होने के लिए तत्पर हो जाता है। परन्तु आज का हमारा वेद-मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है जैसे माता का पुत्र माता का गान गाता रहता है अथवा उसकी गाथा का वर्णन करता रहता है इसी प्रकार जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है। जब भी कोई संसार में विज्ञानवेत्ता होते रहे है उसी काल में उन्होंने पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण किया और पृथ्वी को जानते हुए यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड को मापने लगती है अथवा उसकी गाथा गाने लगती हैं। उसी प्रकार प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है जो परमपिता-परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला है। तो यह बेटा आज का हमारा वेद-मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है जब हम किसी भी वेद-मन्त्र को ले करके अपना उद्गीत प्रारम्भ करते हैं तो प्रायः मानों देखो उसके उद्गीत में कोई न कोई ऐसी प्रतिभा होती है जिस प्रतिभा को अपने में अपनाता हुआ मानव सागर से पार होने के लिए प्रयास करता रहा है।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऐसे ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहां एक वेद का मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है। वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम् ब्रह्मा वर्जसुतम देवाम भुतम भुताम भूतत प्रव्हाः लोकाम वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू याज्ञिक बन मानों यज्ञनम ब्रह्मा संसार में जितना भी सुक्रियाकलाप है उस सर्वत्र का नाम ही एक याग रूप माना गया है। मेरे प्यारे! मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है जो मैंने तुम्हें पूर्व काल में भी वर्णन किया है, आज भी हमें स्मरण आ रहा है। मेरे प्यारे! अमृतम ब्रह्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी यज्ञशाला में प्रायः अपने विद्यालय में विद्यमान रहते थे। प्रातः-कालीन उनके यहां नैतिकता में ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके अपने याग में परणित रहते तो बेटा एक समय वह ब्रह्मचारी अमृतम ब्रह्मा वेद का ऋषि कहता है यज्ञनम ब्रव्हा ऋतम देवा वेद का मन्त्र उच्चारण करता हुआ ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम मानों याज्ञिक बनो और तुम्हारा याग ही तुम्हें ऊर्ध्वा में गमन कराने वाला बनेगा। इस प्रकार जब बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः-कालीन अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को यह उपदेश दे रहे थे तो न्यौदा में उन्होने वेद-मन्त्रों का

उद्गीत गाया और एक वेद-मन्त्र यह कहने लगा अमृतम अमृतम देवाम् भुतम यज्ञनम ब्रह्मा आत्मा-मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियां! वेद का मन्त्र कहता है कि प्रातः-कालीन तुम अपने गार्हपत्य नाम की अग्नि को जागरूक करते हुए तुम अपने में याज्ञिक बनो जिससे तुम्हारा अर्न्तात्मा मानों पंच-महाभूतों का जो लोक है यह जो तुम्हारा मानवीय शरीर है इसमें जो पंच-महाभूतों के लोक में आत्मा विद्यमान है वह मानों देखो उसका पंचीकरण होता रहे।

याग के होता

तो ऐसा बेटा! जब वेद के ऋषि ने वर्णन किया तो इतने में मुनिवरो देखो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने नमः कहते हुए बोले हे प्रभु! अमृतम उन्होंने एक रूपक बनाया एक ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु उपस्थित हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मेरे समीप एक यजमान है वह याग करना चाहता है तो कितने होताआें के द्वारा याग प्रारम्भ करे? याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या वेद का अमृतम मन्त्र कहता है क्या यजमान जब याग करना प्रारम्भ करें तो चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! इन्होंने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? उन्होंने कहा कि सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? तो उस समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया क्या एक यजमान उपस्थित है वह याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा कि अमृतम नौवः बृहे नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! उन्होंने जब पुनः यह प्रश्न किया क्या यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो उन्होंने सप्त होताओं का वर्णन किया। जब पुनः यह प्रश्न किया गया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? तो उन्होंने कहा कि अंग-तम पंचाम भुतम पंच होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया गया कि महाराज यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? तो उन्होनें कहा कि अपम्र तीन के द्वारा याग हो, तीन से दो होताओं से याग होना चाहिए। एक न हो तो अमृतम वेदाम भूतम ब्रह्मा यह जो आत्माम भुते यह सब भूतो को एकाग्र करने वाला एक अन्तर्वती चेतना है उसके द्वारा याग होना चाहिए।

चौबीस-होता

जब मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! यह चौबीस होता कौन से हैं जिनके द्वारा याग करें? उन्होने कहा चौबीस होताओं में देखो दस प्राण हैं-प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत्त, धनञ्जय और कुरू, कृकल यह दस प्राण कहलाते हैं मानों दस इन्द्रियां हैं-पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कमेंन्द्रियां है और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह चौबीस होता कहलाते हैं जिनके द्वारा यजमान याग करना चाहता है अथवा साधना में प्रवेश करना चाहता है। साधना भी इसी के द्वारा होती रही है। तो विचारवेत्ता ने कहा अमृतम याज्ञवल्क्य ने हे ब्रह्मचारियों! तुम मानों देखो सबसे प्रथम प्राण, प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए मानों देखो इसे अमृतम ये प्राणम ब्व्हे कहलाता है। इसको हमारें यहां यह होता कहलाते हैं जिनके द्वारा मानव नाना प्रकार का भक्षण करता है अथवा यही भोगतव्य माना जाता है। तो इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया क्या यह इन्द्रियां हैं सबसे प्रथम ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन आता है। ज्ञानेन्द्रियों को मृत्यु से पार ले जाओ मानों देखो अपने नेत्रों को अग्नि स्वरूप स्वीकार करो और वाणी को मानों रसों में परिणित करते चले जाओ और प्राणम ब्रह्मा व्रतम शब्दों में देखो श्रोतों को शब्दों में, दिशाओं में परिणित कर दो तो यह मृत्यु से पार हो जाऐंगे। इस प्रकार मेरे प्यारे!

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में इस प्रकार का जब वर्णन किया तो उन्होंने कहा मंगलम ब्रहे मानों देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह आन्तरिक जगत कहलाता है मानों देखो मन की धाराएं हैं यह मन बड़ा विशाल यह प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु माना गया है परन्तु देखो मन की धारा चित्त कहलाता है। चित्त में नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान होते हैं और अहंकार मानों देखो उसको सुगठित करने वाला है और मुनिवरो देखो ब्रह्मणे प्राणा कृतम देवा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अपने में ही मानों देखो चित्त संस्कार की प्रतिभा कहलाती है। तो आज बेटा मैं तुम्हें विशेष चर्चा या विशालता से इन वाक्यों को वर्णन नहीं करूंगा केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूं और वह परिचय केवल कि मन की नाना धाराएं है और बुद्धि कई प्रकार की कहलाती है जैसे बुद्धि, मेघा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा कहलाती है यह मानों देखो चार प्रकार की बुद्धि हैं। चित्त में हमारे यहां नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान रहते हैं इन्हीं संस्कारों के आधार पर मानव का यह शरीर, शरीर को आत्मा प्राप्त करता रहता है पंच-महाभूतों के शरीरों में प्रवेश करता हुआ आत्माम भुतम ब्रह्मा।

सत्रह-होता

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा प्रभु! यह तो मैंने कई कालों में आचार्यों ने मुझे पूर्व काल में भी वर्णन कराया है मैं यह जानना चाहता हूं मानों वह सत्रह होता कौन से हैं? उन्होंने कहा पांच ज्ञानेन्द्रियां मानों पंच-महाभूतों मे रत्त होने वाली देखो प्रकृति की यह पंच-तन्मात्रा कहलाती हैं दस प्राण हैं और मन और बुद्धि कहलाते हैं मानों देखो ये अपने में अपनेपन का भान कराते रहतें हैं। तो विचार आता है यह सत्रह होताओं का यह सूक्ष्म शरीर माना गया है। जब यह स्थूल शरीर को त्यागता है तो सूक्ष्म शरीर वायु मंडल में प्रवेश कर जाता है तो मानो देखो अपनी आभा में परणित होता हुआ अपने को प्राप्त होता रहता है। मेरे पुत्रों! इसी में कारण नाम का शरीर होता है आत्मा का जहां ज्ञान और प्रयत्न दोनों ही विशिष्ठ रह जाते हैं।

ग्यारह-होता

तो मेरे पुत्रों! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो यज्ञदत बोला कि प्रभु! यजमान यह जानना चाहता है क्या ग्यारह होता कौन से होते हैं? उन्होने कहा जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो जाए तो मानों देखो दस इन्द्रियां और ग्यारहवां मन कहलाता है यह ग्यारह होताओं के द्वारा यजमान मानों एकाग्र होता है, याग करता है मनम ब्रह्मा मनम ब्रव्हे ऋतम यह मन के द्वारा ही इन्द्रियों का जो स्रोत है जो मन से गुथा हुआ होता है और मन सारथी कहलाता है और मानों देखो उस रथ पर यह इन्द्रियां एक अश्व के समान होते हैं यह जब गमन करता है तो मन मानों देखो सारथी बन करके यह स्वार्थ को न त्यागता हुआ मानों देखो वह उसको अपनम ब्रह्मा त्याग करके वह सारथी बनता है और जो मानों देखो स्वार्थपरता में आता है तो यही मनस्तव कहलाता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो देखो यह रथ का सारथी है और इन्द्रियां इसके अश्व हैं और जब मार्ग में यह देखो कर्म जगत में यह रमण करता रहता है तो मानों देखो इन्द्रियां एकाग्र हो जब यजमान का देखो, यह संसार रुपी याग पवित्र बनता है।

नौ-होता

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने कहा कि महाराज यह नौ होता कौन से हैं? तो उन्होंने कहां नौनम ब्रह्मे देखो हमारे इस मानव शरीर का जब प्रभु ने सृजन किया सृष्टि के प्रारम्भ में अथवा माता के गर्भस्थल में तो मुनिवरो देखो इस नौ द्वारों वाले इस शरीर का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो दो चक्षु छिद्र हैं और दो घ्राण के छिद्र हैं और दो मानों चक्षु हैं इस प्रकार अम्रतम ब्रह्मे एक मानों उपस्थ और ग्रीवा यह नौ द्वार कहलाते हैं और नौ द्वारों पर नौ ऋषि विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे नौ द्वारों को एकाग्र करना उनके विषयों को विचारना अथवा उन

देवताओं के ऊपर अध्ययन करने का नाम ही मानों याग करना है वह साधक मानों इस प्रकार के याग में परणित हो जाते हैं। तो उन्होंने कहां कि नौ द्वारों के द्वारा हम जब याग करते हैं नौ द्वारों के देवताओं को जान करके उसी देवताओं के लिए हूत करते हैं तो मानों हम देवत्व को प्राप्त हो जाते हैं। वह देवम भूतम ब्रह्मा वेद का वाक् कहता है कि वह देवता देव-लोक को प्राप्त होता रहता है।

सप्त-होता

मेरे पुत्रों! देखो पुनः उन्होंने कहा, यज्ञदत जी ने क्या महाराज, हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ कि यह सप्त द्वार सप्तम ब्रहे देखो सात होता कौन से हैं? उन्होंने कहां देखो सप्त होता मानों देखो उनमें एक वाणी है, दो चक्षु मानों दो श्रोंत्रों के छिद्र हैं, एक घ्राण है यह सप्त ऋषि कहलाते हैं मानों किसी में कश्यप है यह वाणी यह अत्रि है इसी प्रकार मानों कहीं वशिष्ठ और विश्वामित्र मानों इन द्वारम ब्रह्मे देखो इन चक्रम मुझे इन द्वार पर विद्यमान रहते हैं इनके द्वारा ही तो याग कहलाता है इनके द्वारा ही तो मेरे प्यारे! देखो प्राण अपने में प्राणत्व का कियाकलाप करता रहता है।

पंच-होता

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा पंचम भूताम भूतम मानों पंच-होताओं के द्वारा याग होता है। यह पंच होता मेरे प्यारे! देखो इस शरीर में जब शरीर की रचना कर्ता ने, प्रभु ने शरीर की रचना की तो बेटा देखो उसमे पंचम महाभूतों का नृत्य किया। सबसे प्रथम इसमें अन्तरिक्ष है उसके पश्चात मुनिवरो देखो वायु है और तेजोमयी अग्नि है और जल तत्व है और यही गुरुत्व माना जाता है। जब मेरे पुत्रों! देखो विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हैं तो विज्ञान में मानों देखो तीन प्रकार के परमाणुओं का व्यवधान होता रहता है और सर्वत्र जितना भी विज्ञान है संसार का वह त्रिवाद में परणित रहता है। मानों देखो तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व यह तीन प्रकार के परमाणु हैं बेटा जिनमें विज्ञान निहित रहता है। इसी से हमारा शरीर कटिबद्ध रहता है इसी में ओत-प्रोत होता रहता है और आत्मा इसमें विद्यमान है जो चेतना बन करके इनका अपना नृत्य करा रहा है। यह पंचा जैसे महात्मा जालवी ऋषि से एक समय महर्षि प्राणकेतु ने कहा हे प्रभु! यह आत्मा का लोक क्या है जो आत्मा मानम ब्रव्हे जहां वास करता है। तो उन्होंने, महात्मा जालवी ने यह कहां कि आत्मा का जो लोक है वह पंच-महाभूत है और पंच-महाभूतों के लोक में यह आत्मा विद्यमान है। तो मुनिवरो देखो यह पंचीकरण हो रहा है इनके द्वारा यजमान जब याग करता है इन तेजोमयी को जान करके अग्न्याधान करता है और तरलत्व को जान करके वह मानों देखो मेखला में जल का व्यवधान करता है और गुरुत्व को जान करके वह साकल्य के द्वारा याग करता है। तो मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन कराया क्या यह पंचीकरण हो रहा है और पांच होताओं के द्वारा यजमान अपने में याग करने वाला बनें।

तीन-होता

मेरे प्यारे! देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैं ये जानना और चाहता हूँ क्या हे प्रभु! यह तीन होता कौन से हैं? उन्होंने कहां तीन होता मानों देखो जब इस शरीर का सुगठित संसार का सुगठिता आ जाती है तो तीन प्रकार के गुणों का व्यवधान होने लगता है और तीन गुणों में मुनिवरो देखो सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो सतोगुण में पालना है और रजोगुण में शासन है और तमोगुण में उत्पत्ति का मूल कहां जाता है। जो हमारे यहां वैदिक साहित्य में हम प्रवेश करते हैं तो मानों देखो उस समय यह माता में तीनों गुण प्राप्त होते रहते हैं। माता मेरे प्यारे! देखो अपने गर्भ-स्थल में धारण करती है वह उत्पत्ति का मूल तमोगुण कहलाता है और उसके पश्चात जब अनुशासन करती है वह रजोगुण कहलाता है जब उसका पालन करती है,

लोरियों का पान करा रही है और माता तीन शब्दों का उच्चारण करती है कहती है बुद्धम, शुद्धम, निरंजनम ब्रह्मा ऋते वेद का मन्त्र उच्चारण कर रही है और यह कह रही है आत्मा तू शुद्ध है, निरंजन है, अखण्ड रहने वाला है। हे आत्मा! तू चैतन्य है मानों ज्ञानवान है इस प्रकार जब माता देखो इस प्रकार का उपदेश देती हुई और लोरियों का पान कराती है तो मानों वह सतोगुण में पान कर रही है और जब मुनिवरो देखो वह अनुशासन में लाती है हे बाल्य! तू योग्य बनों मानों तुम्हारा तुम्हारी प्रत्येक इन्द्रियां अनुशासित होनी चाहिए तो माता उस समय मुनिवरो देखो रजोगुण में परणित होती मानों देखो नाना प्रकार की विद्या प्रदान करती रहती है और देखो जब तमोगुण में माता के गर्भ-स्थल में शिशु विद्यमान है परन्तु देखो उस समय तरंग ब्रह्मा वर्णो देवाम भूतम देखो इच्छा होती है कि पुत्र योगाम् भूतम ब्रह्मे वह कहती है कि हे देवाम मैं पुत्र यागी बनना चाहती हूँ। तो प्रभु से याचना करती है मानों उस समय प्रकृति के मूल में तमोगुण प्राप्त हो जाता है उस समय उत्पत्ति के मूल में तमोगुण प्राप्त हो जाता है। तो वही रजोगुण है, वही तमोगुण है और वही सतोगुण और वही रजोगुण की प्रतिभा में सदैव निहित रहने वाला है। जब हम बेटा इसके ऊपर विचार-विनियम करते हैं तो यह गुणात्मक मानों देखो सर्वत्र ब्रह्मांण्ड हमें प्रायः दृष्टिपात आता रहता है और इसी में बेटा सर्वत्रता में विद्यमान हो करके मानव अपनी मानवीयता का अपने में ध्यान करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया, ऋषि ने कहां है कि तीन होताओं के द्वारा यजमान कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके मानों हूत करना प्रारम्भ करता है।

दो-होता

मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार जब ऋषि ने अपना वाक् ब्रह्मचारियों के मध्य में प्रारम्भ किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु यह भी हमने जान लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं दो होता कौन से हैं जिनके द्वारा यजमान याग करता है? उन्होनें कहा दो होता अमृतम ब्रह्मे देखो वह जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो दो होता मानों ब्रह्म और प्रकृति को दोनों को अपना साथी बना करके देखो यजमान याग करता है और वह कहता है वह मानों जितना भी प्रदार्थतम ब्रहे जैसे प्राण और मन की विवेचना करने वाला साधक कहता है मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है और यह जो प्राण है यह ब्रह्म का सूक्ष्म तन्तु माना गया है परन्तु ज्ञान से दोनों जड़ पदार्थ हैं। एक मानों देखो परमात्मा का प्रतिनिधि चेतना का हमें भान कराता है, गति का भान कराता है और एक ज्ञान का भान कराता है और ज्ञान को मानों देखो एक आत्मा के सन्निधान मात्र से क्रियाकलाप कर रहा है और एक मुनिवरो देखो ब्रह्म के सन्निधान मात्र से अपनी गति कर रहा है और गतियों में रमण करने वाला ही मानों इनको जानना ही हमारा याग है और एकाम भूतम ब्रह्मा ब्रहे। मेरे प्यारे एक ब्रह्म है जिस ब्रह्म के लिए हम सदैव उपास्य बने रहते हैं। यह हमारा उपास्थ देव है और ब्रह्म की याचना करते मुनिवरो देखो इस सागर से मानव पार हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जीवन अपने में बड़ा सार्थक माना गया है। ब्रह्मचारियों को प्रातः-कालीन बेटा वह अपने में उपदेश दे रहा है और उपदेश देता हुआ कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें नैतिकता में परणित होना चाहिए और तुम्हारा नैतिक जीवन इतना उर्ध्वा में गमन करता रहे जिससे तुम्हारा जीवन एक महानता को प्राप्त हो जाए। तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हे विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ विचार-विनियम केवल यह कि हमारे यहां बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों को वर्णन कराते हुए कहां है समभ्वम ब्रह्मा सम्भवे लोकम ब्रहे क्या तुम मानों देखो एक ब्रह्म से लेकर के एक ब्रह्म की उपासना करो और द्वितीय मानों देखो मनस्तव, प्राण का दोनों का मिलान करों और मुनिवरो देखो रजोगुण, तमोगण, सतोगुण इन तीनों को जान करके तुम ब्रह्मांण्ड को

जानने का प्रयास करां और मुनिवरां देखो सप्त होताओं को जान करके तुम अपने मन-मस्तिष्क को एकाग्र करके अपने में रत्त हो जाओ और ग्यारह इन्द्रियों के द्वारा मानों तुम अपने को एकाग्र करते हुए अपने चित्त-मण्डल में प्रवेश हो जाओं और मुनिवरो देखो सत्रह-होताओं के द्वारा अपने इस सुक्ष्म शरीर को जानने का प्रयास करां और मुनिवरो देखो यह चौबीसम् होताम् भूतम सूक्ष्म चौबीस होताओं के द्वारा अपने स्थूल शरीर को जानो। मानों देखो यह विशाल मण्डल है। आज मैं इस विशाल मण्डल की विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट न करता हुआ केवल यह क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब यज्ञदत से यह कहा तो यज्ञदत मौन हो गया और ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा कि प्रभु! आपको धन्य है आप ने मुझे एक महानता का विशेषण कराया है आपको धन्य है प्रभु। उन्होंने कहा वेदोंम भूतम ब्रह्मे यह वेद-मन्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान मानों देखो निहित रहता है। परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने इस संसार की जब रचना की तो मानों देखो यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों का निर्माण किया और दोनो में एक ही तुलना में लाने का इन्होनें प्रयास किया। तो विचार आता रहता है कि हम पिंड और ब्रह्माण्ड में परणित होते हुए मुनिवरो देखो अपने को पिंड पिडंगम् ब्रह्यांण्डम् ब्रहे इस पिण्ड को ब्रह्माण्ड रुप स्वीकार कर उपास्य देव की उपासना करते रहें। तो आओ बेटा! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ।

आज मैं तुम्हें केवल संक्षिप्त सा परिचय देने आया हूँ और परिचय यह है कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहें और इस ब्रह्मांण्ड और संसार को जानते हुए अपने मे मानों देखो अपने में ही समाहित हो जाएं जिससे बेटा देखो, हमारा मानवीयत्व ऊँचा बन जाए। तो आओ मेरे प्यारे! देखो आज का विचार क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार-सागर से पार हो जाएं। तो यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गये और देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में नित्य-प्रति मानों ब्रह्मचारियों को किसी न किसी वेद-मन्त्र को ले करके उद्गीत गाते रहे और उसमें अपना उद्गान गाते हुए ब्रह्मचारियों को ऊँचा बनाना और यह कहना हे मम! हे ब्रह्मचारियों! तो मेरे प्यारे देखो विचार-विनिमय यह कि हम मृत्युंजय बनना चाहते हैं। तुम्हें मृत्यु से पार होना है तुम्हें मृत्युंजय बनना है जिससे तुम मृत्यु से पार हो करके क्योंकि प्रत्येक मानव जितने भी क्रियाकलाप करता है वह मृत्यु से पार होने के लिए करता है और वह यह चाहता रहता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। वह मृत्युंजय बनना चाहता है। तो बेटा मृत्युंजय वह कहलाता है जो अपने ज्ञान में परणित हो जाता है क्योंकि ज्ञानी की, ब्रह्मज्ञानी की मृत्यु नहीं हुआ करती है। जैसे राजा जनक की सभा में बेटा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यही कहा था जब अर्द्धभाग ने यह कहा कि मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा था अमृतम् मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती। अरे! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है। ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती है। तो ज्ञानी बनें और तपस्वी बनें जिससे हमारा ज्ञान तप के साथ होगा तो जीवन हमारा पवित्र होगा।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाए कल प्रगट कर सकूंगा। आज के विचारों का अभिप्राय यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा को जानने वाले बनें और याज्ञिक बनें और अपनी मानवीयता को ऊँचा बना करके सागर से पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। अब वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु गायन्त्वा रथम् माहं प्राची रथाः। ओ३म् रथम्माहं प्राची गतं माः वायु रथा। ओ३म् देवं भविता आभ्यां मनः वाचञ्गताः। ओ३म् सर्वं भू वरूणाऽहं वाचस्वग्नं ब्रह्म आपाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनॉक 12-मई-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : श्री रामनारायण त्यागी, नई-मन्डी, मुज्ञफरनगर।

२ मृत्यु 23-मई-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी मे उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गाया जाता है जो परमपिता-परमात्मा महिमावादी है और जो अमृतम ब्रह्मा जो अमृतमयी है।

चाक्राणी गार्गी रेवक संवाद

उन्होंने उदगीत गाया तो उन्हें कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम सब ब्रह्म का चिन्तन करने वाले हो और तुम मृत्यु को विजय करने वाले हो मैं यह जानना चाहता हूँ कि ये वेद का मन्त्र यह प्रश्न करता है कि मृत्यु क्या है? और वेद का मन्त्र इसका उत्तर भी देता है परन्तु उसको जानना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो ऋषि-मुनि अपने में मौन हो गये। चाक्राणी-गार्गी उपस्थित हुई और उन्होंने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं! यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं ऋषियों के अमृतम ऋषि के प्रश्नों का उत्तर देने का मैं प्रयास करुँ। तो ऋषि-मुनियों ने यह कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है क्या यह शरीर और आत्मा का दोनो का पृथक-पृथक हो जाना ही मृत्यु है। तो मेरे प्यारे! देखो उसमें से महर्षि रेवक ने कहा क्या हे देवी यह वाक् हमारे विचारों में नहीं आ रहा है क्योंकि यह मृत्यु अमृतम देवम् अमृताः अमृतम देवत्वाम वेद का मन्त्र यह कहता है कि मृत्यु तो तम को कहते हैं और तम नाम अन्धकार का है यह प्रश्न तुम्हारा मानो अधूरेपन में हमें दृष्टिपात आ रहा है, परन्तु देखो यह भी अमृतम शरीर के साथ में शरीर तो पंच-महाभूतो का पिण्ड कहलाता है परन्तु आत्मा के साथ जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं वह संस्कार भी ज्यों के त्यों विद्यमान हैं आत्म एक चेतना है और चेतना का किसी भी काल में ह्रास नहीं होता और यह पंच महाभूतो का भी ह्रास नहीं होता तो हे देवी यह मृत्यु क्या है? तो मुनिवरों देखो चाक्राणी तो ऋषि-मुनियों के विचारों को अपने में धारण करके वह मौन हो गई।

महर्षि पिप्पलाद की विवेचना

परन्तु इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने कहा हे प्रभु! वेद का मन्त्र कहता है तमम व्रतम ब्रह्मा अकृतम देवत्वाम लोका। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले कि प्रभु! वेद का मन्त्र यह कहता है कि तम को दृष्टिपात न करो तम को चिन्तन में न लाओ क्योंकि तम अन्धकार को कहते हैं इसलिए मृत्यु भी अन्धकार कहलाती है। उस अन्धकार को अपने समीप न आने दो क्योंकि मृत्यु कहते ही अन्धकार को हैं। अज्ञान का नाम मृत्यु है और मृत्यु का हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में अभाव माना गया है इसलिए मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं होती। यह तो शब्द की एक कृति एक रचना है तो हम देखो इस प्रकार अपने को स्वीकार करते हैं। मृत्युञ्जम ब्रह्मालोकाम क्या ब्रह्म को जानने वाला ही मानों देखो मृत्यु से पार हो जाता है और मृत्यु अन्धकारम व्रत्यम ब्रहे क्या अन्धकार को त्यागने का नाम ही हमारे यहां ज्ञान है। ज्ञान का नाम ही प्रकाश है। तो इस प्रकार मुनिवरों देखो ऋषि ने अपना उदगीत गाया।

शब्द की रचना

ऋषि-मुनि अपने में चिन्तन करने लगे परन्तु इतने में बेटा देवर्षि अमरीककेतु ऋषि ने कहा हे प्रभु! यह वाक् तो आपका यथार्थ है परन्तु इस शब्द की रचना कैसे होती है? उन्होंने कहा शब्दों की रचना जैसे एक चेतना और जन समूहो का समन्वय होने से तृतीय शब्द का जन्म हो जाता है जैसे मानों देखो परमपिता

परमात्मा चेतना है प्रकृति जड़वत है जब दोनो का सम्मिलन होने से तीसरे शब्द सृष्टि की रचना हो जाती है सृष्टि शब्द की रचना हो जाती है। इसी प्रकार जैसे अन्धकारम ब्रह्मे जैसे अन्धकार और प्रकाश दोनो मुनिवरों देखो एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो अन्धकार और प्रकाश जहां दोनो की कृतियां मिलती हैं वही एक मानों देखो अन्धकार मृत्यु में परिवर्तित हो जाता है। तो इसलिए मृत्यु अपने में अन्धकार को कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया संध्या का काल हो गया। संध्या के काल में सब ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्ष में जा पहुंचे। परन्तु इन वाक्यो के ऊपर विचार-विनिमय होने लगा।

महर्षि पिप्पलाद मुनि का अपने आश्रम में प्रवेश

महर्षि पिप्पलाद मुनि का आश्रम निकटतम में था परन्तु वे वहां से सभा विसर्जन करके भ्रमण करके अपने आश्रम में पहुंचे। आश्रम में उनकी पत्नी शकुन्तका थी वह बड़ी अमृतम व्याकुल हो रही थी। बहुत समय के पश्चात ऋषि का आगमन हुआ। देवी ने उन्हें आसन दिया और विराजमान जब ऋषि हुए उन्होंने कहा कहो देवी तुम अपने चित्त के अभंग बन रही हो उसका क्या कारण है? उन्होंने कहा हे प्रभु! मेरा एक पुत्र था वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। हे प्रभु! मैं व्याकुल हो रही हूँ। तो महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले हे देवी मैं एक ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में से मेरा आगमन हो रहा है परन्तु मैं उस ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में यह निर्णय दे करके आया हूँ क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म को जानने वाला ही मृत्यु को विजय कर लेता है। तो हे देवी जब विजय हो गई तो मृत्यु कोई वस्तु नहीं रहती इसलिए मानो देखो मैं यह स्वीकार करता रहा हूँ। मेरा अध्ययन यह रहा, जब मैं विद्यालय में आचार्य के चरणों में विद्यमान होता तो मेरा विषय सदैव यही रहा है कि मृत्यु, अंधकार क्या है? अंधकार के लिए मैं सदैव अपने में संघर्ष करता रहा हूँ और विचार-विनिमय करता रहा हूँ तो इसलिए मैं इसको स्वीकार नहीं करता।

महर्षि पिप्पलाद शकुन्तका संवाद

परन्तु देवी ने कहा हे प्रभु! चलो मैने यह स्वीकार कर लिया परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ यह मृत्यु क्या है? उन्होंने कहा अन्धकार है। उन्होंने कहा अमृतम यह शरीर मेरा क्या है? उन्होंने कहा यह शरीर तुम्हारा परमाणुओं का समूह है और परमाणुओं को एकत्र करने वाली इसमें एक चेतना है उस चेतना का नाम आत्मा है मानो देखो उसी से तुम्हारा शरीर अपनी क्रियाओं में रत्त हो रहा है। तो हे देवी यह परमाणुओं का समूह है। परमाणु मानो अपनी-अपनी आभा में परणित होते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो पिप्पलाद मुनि की देवी शकुन्तका ने कहा प्रभु यह भी मैने स्वीकार कर लिया परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ जब मेरा शरीर इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद कहां रहता था भगवन! उन्होंने कहा यही परमाणुवाद जब तुम्हारा शरीर इस रूप में नहीं था तो यही परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान मानों देखो माता के गर्भस्थल में हमारे मानव शरीर का निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है और वह इन्हीं परमाणुओं से निर्माण होता रहता है। माता के गर्भस्थल में जो परमाणु हैं मानों देखो इसमें तेजोमयी परमाणु हैं, तरलत्व परमाणु हैं और गुरुत्व हैं। इन्हीं परमाणुओं से हमारे शरीर का निर्माण होता रहता है और निर्माण करने वाली वह चेतना है, वह परमपिता-परमात्मा हैं जो मानो संसार का नियन्ता है, नियामक है और वह निर्माणवेत्ता कहलाता है। जब मेरे प्यारे प्रभु ने इस मानव शरीर का निर्माण किया तो बेटा इसमें बहत्तर करोड बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण किया। मानों देखो यह नाड़ियों के मध्य में एक हृदय है उन्ही नाड़ियों के मध्य में मानो देखो लघु मस्तिक है और लघुमस्तिक के साथ में मानो चार प्रकार की बुद्धियों का निर्माण होता है जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा कहलाती हैं। मानों सुनीता का नाम भी हमारे यहां बुद्धि को कहा जाता है और शकुन्तका भी इसी को कहा जाता है। इसी

प्रकार मानो देखो प्रभु! निर्माण करने वाला निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली मां उससे वंचित रहती है। तो विचार आता रहता है जब ऋषि ने इस प्रकार अपनी देवी से वर्णन किया। उन्होंने कहा यही परमाणुवाद है जिससे मानो देखो यहां मन की नाना प्रकार की दशाओं का निर्माण होता रहता है जैसे मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह चारों का आन्तरिक जगत कहलाता है। इस आन्तरिक जगत में जब मानव प्रवेश करता है तो यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड का दोनो का समन्वय करता रहा है। इसी के ऊपर विचार-विनिमय करना यह प्रायः हमारा सब का कर्तव्य कहलाता है।

मेरे पुत्रो! देखो देवी शकुन्तका ने कहा प्रभु यह भी मैने स्वीकार कर लिया परन्तु मेरे आचार्यों ने इस प्रकार का ज्ञान मुझे बहुतायत में प्रगट किया है। मैं यह जानना और चाहती हूँ अमृतम ब्रह्मा अप्रतम देवा हे प्रभु! जब यह माता का गर्भाश्य नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहा रहता है? उन्होंने कहा देवी यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरांगना के रूप में होता है कुछ वीरत्व के रूप में विद्यमान होता है। वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली मानो देवत्व को प्राप्त हो जाते हैं और वीरत्व की रक्षा करने वाला देवताओं की सभा में सुशोभनीय बन जाता है। वह ब्रह्मचरिष्यामि बन करके और ब्रह्मवर्चोसी बन करके अपने जीवन को महान बनाता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया और वीरांगना वह कहलाती है जो मानो देखो इस वीरत्व की जो परमाणुओं की रक्षा करने वाली मानो देखो जो गान गाती है। तो मुनिवरों देखो विषैले परमाणु और विषैले प्राणी भी इसके चरणों में ओत-प्रोत हो जाते हैं और चरणों की वन्दना करने लगते हैं। जब अहिंसा में परणित हो करके गान गाने लगता है तो उसके गान में अमोद्यता आ जाती है पवित्रत्वता आ जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा हे देवी यह मंगलम ब्रहे देखो जब यह परमाणुवाद अमृतम देखो वीरत्व की रक्षा करता है तो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। ब्रह्मचरिष्यामि उसे कहते हैं जो ब्रह्म को अपने में धारण करने वाला जो ब्रह्म और चरी दोनों को तथ्यों से जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को। जो दोनो को अंगो और उपांगों से जानने वाला है वही तो वीरत्व कहलाता है। जो प्रत्येक श्वास को मानों देखो एक मनके में पिरो लेता है उसकी माला बना देता है और माला बना करके उसे अपने कंठ और मन-मस्तिष्क में धारण करता है वह अपने जीवन को ऊंचा बनाता है वह देवताओं की सभा में मानो अपने को ले जाता है और वह सुशोभनीय हो जाता है। देवत्व में तो इसलिए वेद के ऋषि ने कहा देवी मानो देखो यह वीरत्व की रक्षा करना है और वीरत्व ही मानो ब्रह्मचरिष्यामि बन करके वह अपने मूलाधार से ले करके और ब्रह्मरन्ध तक अपने मानो देखो प्राण सहित आत्मा को ले जा करके बेटा अपने में यौगिकता को प्राप्त कर लेता है। वह योगिकत्त्व बन करके देखो वह विष्णु उपाधि को प्राप्त करता हुआ विष्णुत्व को प्राप्त होता रहता है।

सात प्रकार का अन्न

जब इस प्रकार बेटा! देखो, ऋषि ने वर्णन किया तो मेरे प्यारे शकुन्तका मौन हो गई और शकुन्तका ने कहा प्रभु मैं यह जानना और चाहती हूँ क्या हे प्रभु! जब यह वीरत्व और वीरांगनात्व भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहा रहता है? उन्होंने कहा देवी यही परमाणुवाद मानो देखो जब सृष्टि के पिता ने, परमपिता-परमात्मा ने इस सृष्टि का सृजन किया तो सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। उन्होंने सबसे प्रथम अन्नाम भूतम प्रमाणाम लोकाम मानो सबसे प्रथम उन्होंने अन्नाद को उत्पन्न किया। यह प्रभु की महानता है उसकी रचना बड़ी विचित्र है। एक पौधा उस पौधे पर दो प्रकार का अन्न कहलाता है एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपाती है और एक अन्न को उसका निचरला भाग पशु पान करता है। पशु मानों उसी अन्न को पा करके मानो दुग्ध पय प्रदान कर रहा है और मेरे प्यारे मानव पान करके ओज और तेज की उत्पत्ति करता

रहता है। तो सृष्टि के पिता ने देव ने मानों देखो एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्न है वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है कितना मानों नियन्ता और देखो उसका निर्माण कहलाता है। तो वह परमपिता-परमात्मा की महती और उसकी सृष्टि को निहारते रहें, विचारते रहें, कि वह कितना विचित्रत्व कहलाता है जिसके प्रमाणम ब्रह्मा लोकाम व्रतम देवत्वाम ब्रही। इस प्रकार बेटा ऋषि पिप्पलाद ने वर्णन किया हे देवी यही परमाणुवाद है मानो देखो उस अन्न में विद्यमान रहता है और दो प्रकार के जो अन्न हैं एक अन्न हूत कहलाता है। जब पुरोहितजन अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके और यज्ञमान से कहता है तुम देवताओं को हूत दो। मानों देखो अग्नि के मुखारबिन्दु में जब वह स्वाहा कहता है नाना प्रकार का हिंसा से रहित जब देखो पदार्थ को अग्नि में प्रदान करता है वह देवताओं का मुख कहलता है। वह अग्नि है अग्नि हमारे यहां बहुत प्रकार की अग्नि मानी गई है परन्तु अग्नाम देवाम मुखारम ब्रह्मा लोका व्रतम यह अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है। इसके मुखारबिन्दु में जब यज्ञमान बन करके होता-जन हूत करते हैं और वह कहते हैं प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके मेरे प्यारे अग्नि के मुखारबिन्दु में वह चरू को प्रदान करते हैं तो वह हूत कहलाता है वह देवताओं का अन्न कहलाता है। क्योंकि देवता उस अन्न को पान करके नाना प्रकार की वृष्टि प्रारम्भ करते है नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म हो जाता है जिससे मानव के एक दुसरे प्राणी का वनस्पतियों से समन्वय रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो होताम भूतम ब्रह्मा वह हूत करना हमारा कर्तव्य है मानो देखो वह देवताओं के मुख में हूत किया जाता है। मुनिवरों देखो अग्नि यू तो कई प्रकार की कहलाती है जैसे गार्हपत्य, गृहपत्य, वैश्वानर और मुनिवरों आहवनीय नाम की अग्नि कहलाती है। यह चार प्रकार की अग्नि प्रमुख मानी गई हैं। परन्तु यही अग्नि जब आयुर्वेदाचार्यों के द्वार पर जाती हैं तो पचासी प्रकार की अग्नियों की धाराओं का जन्म होता है। जब वैज्ञानिको के कुल में यही अग्नि जाती है तो अनन्तमयी धाराओं का जन्म हो जाता है-अरबो-खरबो प्रकार की तरंगों का प्रादुर्भाव होता है। इस अग्नि के ऊपर बेटा शब्द नृत करता रहता है। इस अग्नि के ऊपर ही मानो अपने नेत्रो से वह नियत करता रहता है। तो मेरे प्यारे अग्नि नाना प्रकार की अग्नियां कहलाती हैं। आज मैं अग्नियों की विवेचना नहीं करने जा रहा हूँ। केवल यह कि अग्नि देवताओं का मुख है। यह जो हूत है यह देवताओं का अन्न है और इस अन्न को देवता पान करके बेटा अपने में प्रसन्न होते हैं और समाज को मानो देखो प्राणी मात्र को सुखद प्रदान करते रहते हैं। तो विचार-विनिमय क्या बेटा चतुर्थ जो अन्न है वह प्रहुत कहलाता है। जो पुरोहितजन होते हैं, जो बुद्धिमान होते हैं पुरोहित कहते हैं जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है, पराविद्या को जो देने वाला है, उसका नाम पुरोहित है। तो राष्ट्र और समाज और मानवीयत्व को, आत्मत्व को ऊंचा बनाता है उसका नाम पुरोहित है। हे पुरोहिता नाम भूतम ब्रह्मा तारो वृत्ति देवत्वाम लोकाः-मेरे प्यारे देखो पुरोहित वह कहलाते हैं जो अपने में नाना प्रकार की विद्याओं के साथ समाज और मानवीयता को सुखद पंहुचाते हैं। जैसे महर्षि विश्वामित्र ने वशिष्ठ मुनि की आज्ञा पा करके मानों उन्होंने देखो दण्डक वनों में धनुर्याग किया था। धनुर्याग में वह धर्नुविद्या को प्रायः वह प्रदान करते रहते थे, तो वह पुरोहित कहलाते हैं। राष्ट्र को जो ऊंचा बनाते हैं वह पुरोहित कहलाते हैं। गृहाश्रम में जब गृह में पुरोहित जाता है तो गृह-स्वामिनी और गृह-स्वामी को आत्मत्व का उपदेश देता है पराविद्या देता है तो वह पुरोहित जन कहलाते हैं। मेरे प्यारे वेद का मन्त्र कहता है पुरोहितानाम ब्रहे वर्णस्सुतम पुरोहित आओ तुम हमारे द्वार पर आ करके तुम ब्रह्म का ज्ञान कराओ। तुम हमारी आत्मा और ब्रह्म के मध्य में जो अन्धकार आया हुआ है उसे मृत्यु कहते हैं वह हमारे समीप नहीं रहनी चाहिए। मेरे प्यारे वह पुरोहित-जनों से प्रार्थना की जाती है तो वह पुरोहित अपने में महानता का उपदेश देते हैं। तो यह चार प्रकार का जो अन्न है बेटा यह सब का साझला अन्न हैं मानो

यह सभी को प्रायः प्राप्त होता रहता है। पुरोहित तो देखो प्राणी मात्र के लिए है और पुरोहित जो शिक्षा देता है वह भी प्राणी मात्र के लिए देता है और एक पौधा है देखो उसमें दो प्रकार का अन्न है उसमें एक पशु का है एक मानव का है एक भोजनालय में तप रहा है एक पशु के आंगन में तप रहा है। परन्तु वह पशु दुग्ध देता है मानव अन्नाद को तेजोमयी बन करके अपने को ओजस बनाता रहता है। तो मेरे पुत्रो देखो इस प्रकार चार प्रकार का अन्न यह सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में सबका साझा अन्न उत्पन्न किया और तीन प्रकार के जो अन्न है वह आत्म तत्व के लिए कहलाते हैं। बेटा जिसको मन, कर्म और विचार कहा जाता है। मुनिवरों देखो वह अमृतम ब्रह्मा देखो जिससे यज्ञमान क्या साधक अपने में साकल्य बना करके मुनिवरो देखो हूत करता रहता है और वह हूत क्या है हूताम ब्रह्मा देवत्वाम। मेरे प्यारे देखो हूत करने वाला कौन है? वह पुरोहिताम भूतम ब्रह्मा साधकाम सुतः देवत्वाम-वेद का मन्त्र कहता है वह साधक ही अपने में साधना करता हुआ मानो देखो मन और विचार और मस्तिष्क की जो चित्त की धाराएं है उनका साकल्य बना करके मेरे प्यारे! देखो अन्तर्हृदय से याग करता है अन्तर्हृदय में उनका हूत कर रहा है। तो यह देखो सात प्रकार का अन्न सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया है। तो मेरे प्यारे! देखो यह मन, मन को शुद्ध विशुद्ध मार्ग पर लगाना, विचारों में ले जाना यह विचार भी अन्न है और मन भी अन्न है और मुनिवरों देखो उसका जो परिणाम होता है जिससे मानव अपनी धारा मन, कर्म, और विचार को ले करके जो अपने आत्म तत्व को ऊंचा बनाता है मेरे पुत्रो! देखो वह महानत्व को प्राप्त होता है। पर विचार आता रहता है जब ऋषि ने अपना वाक् प्रगट करते हुए कहा हे देवी यह सात प्रकार का अन्न है जो सृष्टि के पिता ने जब सृष्टि का सृजन किया तो ये मानों प्राणी मात्र के लिए यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया है। इस अन्नाद को पान करने वाला मानो इस ब्रह्माण्ड को जानने वाला बन जाता है, अज्ञान से दूरी हो जाता है, ज्ञान के क्षेत्र में रमण करने लगता है।

तो मेरे पुत्रो देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो देवी मौन हो गई और देवी ने मौन हो करके कहा प्रभु जब अन्नानाम भूतम प्रव्हे लोकाम् वसुन्धरम ब्रव्हे हे प्रभु! जब यह अन्नाम ब्रहे जब यह अन्न भी नहीं होता तो यह परमाणु कहां रहता है भगवन्। तो उस समय वेद का ऋषि कहता है वेद-मन्त्र का उद्गीत गाता हुआ अन्नम ब्रह्मा देवत्वाम आकारनाम भूतम ब्रह्मे वाचस्सुतम हे देवी यह अपने-अपने कारणो में लय हो जाते हैं। मानो देखो आत्मा इस शरीर में विद्यमान होता है जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है तो मानो देखो अग्नि के परमाणु अग्नि में चले जाते हैं, जल के परमाणु जल में प्रवेश कर जाते हैं और देखो यह पृथ्वी गुरुत्व, गुरुत्व में प्रवेश कर जाते हैं और वायु मानो प्राण प्राण में व्रतम हो जाते हैं और यह अपने-अपने अव्यय अपने-अपने में परणित हो जाते हैं, अपने में लय हो जाते हैं और आत्मा का विनाश नहीं होता आत्मा पृथक हो जाता है। तो देवी यह जो शरीर है यह शून्यत्व को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो देवी अपने में मौन हो गई और मौन हो गई अप्रतम ब्रहे तो ऋषि ने कहा देवी तुम मौन क्यों हो गई हो आगे क्यों नहीं प्रश्न कर रही हो? उन्होंने कहा प्रभु आप को धन्य है आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पहुंचा दिया है। आपने मेरा अज्ञान दूरी कर दिया है। मैं प्रकाश में चली गई हूँ प्रभु आप मुझे अप्रतम मैं आपसे अब क्षमा चाहती हूँ। मैं आत्म देवत्वाम ब्रह्मा-हे प्रभु! मैं प्रकाश हूँ क्योंकि आत्मा ही प्रकाश का पुञ्ज है। आत्मा को जानना ही हमारा कर्तव्य है। यह जो मानव के शरीर में आत्मचेतना है इस चेतना में चेतना का भान करना ही मेरे प्यारे देखो अपनेत्व में मौन हो जाना है।

मृत्यु की मृत्यु

परन्तु ऋषि पिप्पलाद ने कहा देवी मृत्यु भी है। तो उन्होंने कहा प्रभु यह कैसे? उन्होंने कहा देवी जब

राजा जनक की सभा में जहां महात्मा अर्द्धभाग विद्यमान थे और उन्होंने याज्ञम ब्रह्मा व्रतम याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा था प्रभु मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा था हे ब्रह्मे! हे अर्द्धभाग! मत कहो कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती। अरे! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है और ब्रह्म को जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती। जानम ब्रह्मा देवत्वाम क्योंकि जो मृत्यु को जान लेता है, जो प्रकाश में चला जाता है वह प्रकाश में रत्त हो जाता है। आत्मतत्व को ही निहारता रहता है और यह संसार कोई प्राणी प्रवेश हो जाता है। तो हे देव ब्रह्मे, हे देवत्वाम ब्रह्मा महात्मा याज्ञवल्क्य ने कहा था क्यांकि मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है और ब्रह्म को ही जानने वाला मानों संसार में सारस्वत कहलाता है और अपनेत्व में प्रवेश कर जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने यह कहा, याज्ञवल्क्य ने कहा देवी अमृताम ब्रह्मा तुम अमृत को प्राप्त करो यह अमृत ही तो हमारा जीवन है। जब इस प्रकार बेटा देखो ऋषि ने अपना उद्गीत गाया तो ऋषि अपने में तो देखो देवी मौन हो गई और चरणों को स्पर्श करके कहा प्रभु आपको धन्य है मेरा अज्ञान दूरी हो गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो आज का विचार-विनिमय क्या महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज ने यही निर्णय ऋषि-मुनियों की सभा में अपना निर्णय दिया और उन्होंने कहा कि मृत्यु अन्धकार है और ज्ञान का नाम ही जीवन है वही प्रकाश है। मानो देखो जब यह जान लिया जाता है कि यह जो मृत्यु है एक दूसरे का मिलन होता है विच्छेद होता है। विच्छेदाम भूतम अन्धकार अस्तु। विच्छेद होना भी अन्धकार है मानो देखो वह ज्ञान का प्रतीक नहीं कहलाता और इसी का नाम अज्ञान कहलाता है। मिलन अमृतम जैसे माता का पुत्र है न आत्मा किसी का पुत्र होता है न पुत्री होती है परन्तु वह जो संकल्प मात्र से मिलान हुआ है उस मिलान का नाम ही पुत्र पुत्रियां संस्कार बने हुए रहते हैं। तो मेरे प्यारे जब पिप्पलाद मुनि ने वेद के ऋषियों ने जब अपना निर्णय दिया। तो हमारे यहां प्रायः किसी वेद मन्त्र को ले करके नाना प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा है और विचारवेत्ता अपनी अन्तिम चरमसीमा पर जा करके अपना निर्णय देते रहते थे। वह निर्णय अपने में बड़ा अकाटय रहता है उसके ऊपर शंका नहीं हो पाती, तर्क नही हो पाता। तो विचार आता रहता है वेद के ऋषि ने कहा कि मेरे विचार में तो अन्धकार का नाम ही मृत्यु है और ज्ञान का नाम प्रकाश है और प्रकाश में प्रत्येक मानव को जाना चाहिए। प्रकाश कहां रहता है? यह विचारना ज्ञानम् ब्रह्मा ज्ञान करना जिस अन्धकार रूप में मानो यह शरीर में हम यह आत्मा सहित वास करते हैं उस शरीर के अवयो को जानना और जान करके उसको बाह्य जगत में उसी प्रकार प्रयोग करने का नाम ज्ञान कहा जाता है।

तो यह है बेटा आज का वाक्। आज की तुम्हारी यह प्रेरणा जिसमें मृत्याम भूतम ब्रहे क्या मृत्यु के ऊपर कुछ विचार-विनिमय किया जाये। तो मृत्यु क्या है बेटा! क्या मानो देखो यह मृत्यु अपने में अन्धकार है जैसे तीन शब्दों का दो का न होने से तीसरे शब्द का ज्ञान हो जाता है इसी प्रकार यह मृत्यु भी मानो देखो चित्त का शब्द कहलाता है। अन्धकाराम इसका अपने में कोई अस्तित्व नहीं होता यह अभावकृत कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। केवल सूक्ष्मता में मैने इसकी व्याख्या न करते हुए अपना विचार दिया है कि मानव को अपने जीवन को ऊंचा बनाना है और मृत्युंञ्जय बनना है और अपने में मानो देखो आत्म तत्व को जान करके आत्माम भूतम ब्रह्मा आत्मा के लोक में प्रवेश करना है। तो यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाए तो तुम्हें कल ही प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या मुनिवरों देखो मृत्यु अज्ञान है इसको मानवता से दूरी करना चाहिए और ज्ञान का नाम प्रकाश है, ज्ञान और विवेक के द्वारा अपने मानवीयत्व पर विचार-विनिमय करना चाहिए। यह है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त

अब वेदो का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनुः प्राची रथं आपाः। ओ३म् यशश्चाविताः आभ्यां देवाः अनुमाँ रथाः। ओ३म् यो गाताः यन्मया वसो आपाः। ओ३म् यो कृता रथं आप्यां मनुः आत्माम्भू देवाः। ओ३म् यन्मया गतं मां देवं भ्रदा आपाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 23-मई-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : खुर्रमपुर, गाजियाबाद।

३ आत्मा का प्रकाश 28-मई-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी मे उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गाया जाता है जो परमपिता-परमात्मा महिमावादी हैं और जो अमृतम ब्रह्म जो अमृतमयी हैं। तो उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाना प्रायः हमारा कर्तव्य है क्योंकि वह सृष्टि का नियन्ता है, नियामक है, निर्माणवेत्ता है। तो हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः हमें विचार-विनिमय करना चाहिए क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। आज का हमारा वेद-मन्त्र यह कह रहा था अमृतम ब्रह्मण ब्रहा कृतम। मानों वह परमपिता-परमात्मा अमृत है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अमृत है। तो हम प्रायः उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसको गुणों का गुणवादन करते रहें और अपनी अन्तरात्मा को ऊर्ध्वा में ले जाने का प्रयास करें क्योंकि ऊर्ध्ववेत्ता है। अपने को नम्र बनाए क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा नम्र हैं। अपने को हम निरभिमानी बनाए क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा निरभिमानी हैं और हमें मानों अपनी अन्तरात्मा चेतना के ऊपर चेतनित रहना चाहिए क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा चेतना मे रत्त रहने वाले हैं और वह चेतनामयी हैं। तो हम उस परमपिता-परमात्मा की जो अनन्तमयी चेतना है जो चेतना हमारे अर्न्तहृदयों मे विद्यमान हो रही है, और जिस चेतना से मानों यह जगत अपने मे चेतनित हो रहा है।

वेद-मन्त्रों का वेदज्ञ

तो आओं मुनिवरों! आज का हमारा वेद-मन्त्र हमें यह उद्गीत गाता रहता है कि हे मानव! तू अपनी मानवीयता को जानने का प्रयास कर क्योंकि यही तेरा अनन्तमयी है वेदाम भूतम ब्रह्मणं वेदाः अमृतम ब्रह्मे व्रतम। मानों वह जो वेद है वह हमारा प्रकाशक है और वेद हमें प्रकाश में पहुंचाने वाला है। जैसे हमारे नेत्रों का प्रकाश जब सूर्य से हमारा समन्वय होता है तो सूर्य जैसे नेत्रों को प्रकाशित करता है इसी प्रकार वेद-रुपी जो सूर्य है अथवा वेद का जो ज्ञान और विज्ञान है उस ज्ञान और विज्ञान में ही मानों देखो मानव के अन्तः-करण को प्रकाशित करता है इसलिए हमें वेद-मन्त्रों का वास्तव में वेदज्ञ बनना चाहिए क्योंकि वह हमारे अन्तः-करण का सूर्य कहलाता है। जैसे मानव के नेत्रों का सूर्य ये प्रकाश देने वाला है और नेत्र उससे प्रकाशित हो जाते हैं इसी प्रकार हमारा जो नेत्राम् भूतम ब्रह्मा ये हमारा जीवन एक प्रकाशमयी कहलाता है। तो आओ बेटा! देखो इस सन्दर्भ में आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा नही प्रगट करुँगा केवल कुछ वेद-मन्त्रों का कुछ परिचय देना है कि हमारे यहां प्रकाश ज्ञान को कहा गया है।

यम एवम् रूद्र

आज के हमारे वेद-मन्त्र में यमाम ब्रह्मा यमाम देवम ब्रह्मा एवम् ब्रह्मे हमारे यहां यम की बड़ी महिमा का वर्णन आता है और रूद्र का बड़ा वर्णन आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो रूद्र कहते हैं जो रूलाने वाला है और रूद्रम ब्रह्मा देखो जो रूद्र निकल जाता है तो संसार रुदन करता है और यम कहते हैं मृत्यु से पार होने को यम कहा जाता है जो मृत्यु को विजय कर लेता है वह यमराज बन जाता है और यमाम ब्रह्मा देखो अन्धकार को त्यागना ही मृत्यु का सूचक है।

राजा जनक के यहाँ ऋषि-मुनियों की गोष्ठी

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हे एक वाक् उदगीत गाने के लिए आया हूँ कि हमारे यहां ऋषि-मुनि जब भी अपनी एकन्त स्थलियों पर विद्यमान रहे हैं उसी काल में उन्होंने अपना मन्तव्य अथवा उनका जो अध्ययन और उनकी जो विचार धारा जो तपश्चर मे परणित होती रही है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे ऐसे क्षेत्र मे ले जाना चाहता हूँ जहां मुनिवरों! देखो ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो कर अपना निर्णायक विचार-विनियम करते रहे हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो राजा जनक के यहां नाना-ऋषि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो प्रायः अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं। मुझे स्मरण आता रहा है राजा जनक की पत्नि का नाम रम्भेश्वरी में लगी रहती थीं मानों वह सदैव अपनी आत्मा की विवेचना में लगी रहती थीं आत्म-चर्चाए करने में मानों वह उद्धबुध रहतीं।

एक समय बेटा! सांयकाल को महर्षि-अर्द्धभाग का आगमन हुआ और महर्षि-अर्द्धभाग ने देवी को न्यौदा में कुछ मन्त्रों का अध्ययन कराया और न्यौदा में मन्त्रों का उच्चारण करते हुए देवी बड़ी प्रसन्न हुई और उन्होंने कहां ऋकषम ब्रह्मा अकृते मानों जब ऋषि उदगीत गाते रहे तो मुनिवरों! देखो देवी तो निद्रा में परणित हो गईं। तो मेरे प्यारे! अर्द्ध अपने आसन को चले गये और वह देवी जब निद्रा में भूतहे। जब वह निद्रा से देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार की आभा से जब वह निवृत्त हुईं तो मध्य-रात्रि में बेटा निद्रा से जागरूक हो गईं और वेद-मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे जो वेद-मन्त्र उन्हें उदगीत गा करके ऋषि अपने आश्रम को पहुंच गये थे। तो वह वेद-मन्त्र उन्हें पुनः से स्मरण आने लगें और वह वेद-मन्त्रों में गा रहे थे, देवी गा रही थी मृत्युम ब्रह्मा प्रकाशाम भूतम ब्रव्हे कृतम असुतम देवाम भूतम ब्रह्मा मेरे पुत्रों। देखो देवी ने अपने मन में अपने वेद-मन्त्रों का उदगीत गाते हुए प्रश्न किया क्या यह कौन प्रकाशक बना हुआ है कौन प्रकाश के देने वाला है? तो मुनिवरों! देखो वह अपने में निर्णय देने लगी कि प्रकाश को देने वाला सूर्य है यह वास्तव् में हमारा प्रकाशक है और यह प्रकाश के देने वाला है। मुनिवरों! देखो उसे अपने में निपटारा नही हुआ। विचार-विनियम होता रहा रात्रि का अन्तिम चरण आ गया। जब रात्रि का अन्तिम चरण आया तो देवी ने विचारा मैं राजा के कक्ष में पहुंचू और उनसे यह निर्णायक होगा क्या हमारे नेत्रों का प्रकाशक कौन है। मेरे प्यारे! देखो वह राजा जनक की सभा, राजा जनक की उस कक्ष में पहुंची जहां वे निद्रा मे तल्लीन थे। देवी ने राजा को जागरूक किया। राजा जनक ने कहां देवी तुमने यह रात्रि के अन्तिम चरण में मुझे जागरूक क्यों किया है? राजा ने कहा। जब राजा ने यह कहा तो देवी ने कहा प्रभु! मैं कुछ वेद-मन्त्रों को ले करके आपके समीप में आई हूँ। उन्होंने कहां उदगीत गाओं तो उन्होंने कहा सूर्याम नेत्राम प्रकाशाम भूतम प्रव्हे लोकाम। हे प्रभु! यह नेत्रों में प्रकाश कहाँ से आता है और कौन प्रकाश का द्युतक बना हुआ है। तो उस समय राजा जनक ने कहा देवी यह सूर्य ही तो प्रकाश का देने वाला है परन्तु जब प्रकाश के अन्तिम चरण में पहुंचे तो राजा मौन हो गया परन्तु दोनों अपने में विचार-विनियम करते रहे। पति और पत्नि दोनों विचार की गम्भीर मुद्रा मे चले गये परन्तु अपने में कोई निपटारा नहीं हो सका।

जब कोई निपटारा नहीं हो सका तो दोनों बेटा! रात्रि ब्रहे! रात्रि का काल समाप्त हो गया सूर्य उदय होने लगा दोनों ने अपने-अपने आसन को त्याग करके बेटा! देखो अपनी क्रियाओं से, शरीरिक क्रियाओं से निवृत्त हो करके उनके यहाँ जहाँ-जहाँ नाना प्रकार के ब्रह्मवेत्ता विद्यमान होते थे उनकी सभा में वहाँ उनके यहां एक भौतिक याग भी प्रारम्भ होता और वही ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म-याग की अपने में चर्चांए करते रहे। तो राजा जनक उनकी पत्नि प्रातः कालीन अपने क्रियाओं से निवृत्त हो करके बेटा! अपनी यज्ञशाला में पहुंचे और यज्ञशाला में उन्होंने अपने में समिधान करते हुए अग्न्याधान करते हुए उन्होंने बेटा अग्नम ब्रह्मा ऋतम देवा याग प्रारम्भ किया। जब याग प्रारम्भ किया याग होते हुए मेरे प्यारे! देखो वहाँ महर्षि-याज्ञवल्कय मुनि-महाराज सबसे ऊर्ध्वा आसन

पर विद्यमान थे। महात्मा अर्द्धभाग, महर्षि प्रव्हाणा, महर्षि शिलक, दालभ्य, महात्मा दिग्ध और उनके पुरोहित देखो महाराजा अशवह और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे जैसे ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहिणी कृत्तिका, ब्रह्मचारी सुकेता और भी नाना ऋषिवर अपने आसनों पर विद्यमान थे परन्तु देखो सबसे ऊर्ध्वा आसन पर महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान थे। मेरे पुत्रों! जैसे उन्होंने याग प्रारम्भ किया तो वह अपने में मौन रहे और अपने में यह निर्णय किया कि आज हम कोई प्रश्न आचार्य से नहीं करेंगें। मेरे प्यारे उनका भौतिक-याग, अग्निहोत्र जैसे ही समाप्त हुआ समाप्त होने के पश्चात राजा जनक अपने में मौन है और उनकी पत्नि भी मौन है। मेरे पुत्रों! देखो महर्षि याज्ञवल्वय मुनि महाराज व अपने आसन से कहा क्या कोई भी यजम् ब्रह्मा, यज्ञमान कोई भी प्रश्न कर सकते हैं उसका उत्तर दूंगा।

नेत्रां का प्रकाशक कौन है?

राजा जनक व उनकी पत्नि बड़े प्रसन्न हुई और प्रसन्नचित्त हो करके बोले हे प्रभु! हम कुछ प्रश्न करने वाले हैं। उन्होंने कहाँ अवश्य कीजिए। उन्होंने कहा हे प्रभु! वेद-मन्त्र कहता है प्रकाशम भुतम ब्रह्मा लोकम ब्रह्मे सूर्याय ब्रह्मा नेत्रा। राजा ने अमृतम ये वेद-मन्त्र की एक आख्यायिका वर्णन की। उन्होंने कहा हे राजन! अमृतम ब्रह्मा वेदा देवत्वाम् मानों सूर्य हमारा नेत्रों का प्रकाशक है। मानों सूर्य जब उदय हो जाता है तो यह प्रकाश को देने वाला है और यह प्रकाशक बना हुआ है। मेरे प्यारे! देखो राजा अपने में श्रवण करने लगे और ऋषि ने कहा कि यह सूर्य हमारे नेत्रां का देवता है मानों जब सूर्य उदय हो जाता है तो माता अपने पुत्रां को जागरूक कर लेती है और पुत्र को जागरूक करके माता कहती है हे बाल्य! आओ सूर्य उदय हो गया है नाना प्रकार की वनस्पतियां अपने में तपायमान हो जाती है। मेरे प्यारे! यह सूर्य प्रकाश का द्युतक है प्रकाश का द्युव है तो यह भी सूर्य मानों देखो प्रकाशक देने वाला है। जब इस प्रकार अपने में मानों देखो ऋषि ने निर्णय दिया क्या यही सूर्य है जो देखो नाना प्रकार की वनस्पतियों को तपाता है और वनस्पति इसी से तपायमान हो करके अन्नाद को तपायमान करती हैं उससे मानव का जीवन संचालित होता है। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने जब इस प्रकार निर्णय दिया तो निर्णय देने के पश्चात राजा ने कहा हे प्रभु! यह तो हमने जब आचार्य कुल में अपना अध्ययन करते रहे तो आचार्यजनों ने हमें यह निर्णय कराया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं जब सूर्य नहीं होता तो नेत्रों का देवता कौन है कौन नेत्रों को प्रकाशित करता है? उन्होंने कहा जब यह चन्द्रमा मानों प्रकाश का द्युतक बना हुआ है और चन्द्रमा से ही धीमा-धीमा अनुपम प्रकाश आता है और प्रकाश में ही मानों रत्त हो जाती है माता अपने इसी प्रकाश से अपने क्रियाओं को करना प्रारम्भ कर देती है। मानों यही चन्द्रमा है जो अमृत के देने वाला है यह अमृतमयी कहलाता है। माता के गर्भ-स्थल में जब शिशु विद्यमान होता है तो माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है और नाड़ी का जब ब्रह्मणां ब्रहे देवम मानों नाभि का और अमृतम देखो उसी से अमृत को गृहण करती रहती है अन्न के द्वारा और वह चन्द्रमा की क्रान्तियां को गृहण करती रहती है। उसी नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरात्व नाम की नाभि से होता है और पुरात्व नाम का सम्बन्ध माता की पंचम नाड़ियों से होता है और पंचम नाड़ियो का समन्वय मेरे प्यारे! देखो वह वहां अमृतम पंचम नाड़ी जब नाभि से प्रायः अमृत को ले करके जब गमन करती है माता के गर्भ स्थल में जब हम जैसे शिशु अपने में अमृतम ब्रह्मे जब विद्यमान होते हैं तो नाड़ियों के द्वारा अमृत को पाया जा रहा है वह हम जैसे शिशु अमृतमयी बन रहे हैं। यही चन्द्रमा है जिसका समन्वय बेटा! समुद्रों से रहता है और समुद्रों से सोम ले करके और उसकी धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ करते हैं तो सृष्टि महान बन जाती है और पवित्रता को प्राप्त हो जाती है। क्योंकि चन्द्रमा हमें अमृत के देने वाला है और यह चन्द्रमा अमृतमयी कहलाता है मानों देखो चन्द्रमा की क्रान्ति में नाना अपने नाना

प्रकार की साधक साधना में परणित हो जाता है और साधना करता हुआ मानों साधना में ओत-प्रोत होता हुआ साधक बन करके बेटा! सागर से पार होने का प्रयास करता है। यह चन्द्रमा है जो अमृतमयी है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने विचार विनिमय करते हुए कहा हे राजन, हे जनकाम भूतम ब्रहे आदि ऋषियों का ऐसा ही मत माना गया है कि चन्द्रमा अमृत है जैसे वेद मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करता हुआ प्रकाश में ले जाता है इसी प्रकार चन्द्रमा भी समुद्रों से सोम ले करके वृष्टि करता है नाना प्रकार की वनस्पतियों को परिपक्व बनाता है और वही वनस्पतियां मानों नाना प्रकार की ऊर्ध्वा में गमन करती हैं।

मेरे पुत्रों! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो रम्भेश्वरी ने कहा प्रभु! यह भी हमने स्वीकार कर लिया जब हम प्रायः अपने विद्यालय में अध्ययन करते थे तो आचार्यां ने इसी प्रकार निर्णय दिया। अब हम यह जानना चाहते हैं जब चन्द्रमा नहीं होता तो प्रकाश का द्युतक कौन है कौन प्रकाश देता है? तो ऋषि ने कहा जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो देखो यह तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आता है और धीमा-धीमा जब वह प्रकाश है वही हमें मार्ग में मानों देखो हमें पगडंडी को गृहण करा देता है हम मार्ग के पथिक बन जाते हैं। यही मानों देखो नाना प्रकार के तारा-मण्डलों की माला बनी हुई है और यह मानों उसी माला के कारण यह संसार एक ब्रह्माण्ड के रूप में परणित हो जाता है। तो मानों देखो ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा यही मानों देखो तारा-मण्डलों की जो माला बनती हैं। जब भी संसार में विज्ञानवेत्ता पनपे हैं और विज्ञानवेत्ता देखो यहां अणु और परमाणुओ को एकत्रित करना प्रारम्भ किया है तो उन्होंने बेटा! गुरूत्व को जाना है पृथ्वी तत्त्व को जान करके गुरूत्व को जान करके ही मुनिवरों देखो उन्होने पृथ्वी का संगठन किया और मानों देखो उसी से गुरूत्व और तेजोमयी और तरलत्व को ले करके इन तीन परमाणुओं से मेरे प्यारे! देखो लोक-लोकान्तरो की रचना का व्यवधान हुआ और इसी से मानों यह जगत रचा है। यह नाना प्रकार का जो ब्रह्माण्ड है इसमें एक नहीं दो नहीं नाना प्रकार के नक्षत्र-मण्डल कहलाए जाते हैं। आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना तो नहीं चाहता हूँ परन्तु परिचय देने अवश्य आया हूँ वह परिचय यह है कि तारामण्डलो की माला है। जब ऋषि-मुनियों ने बेटा इसके ऊपर अन्वेषण किया और अपनी-अपनी विज्ञानशाला में इसके ऊपर विज्ञान की आभा में मानों रत्त होने लगा। तो बेटा देखो मुझे स्मरण आता रहा है महर्षि भारद्धाज मुनि की विज्ञानशालाएं और भी मुनिवरों देखो जैसे शिकामकेतु उद्दालक के यहां भी नाना प्रकार की शालाओं का वर्णन होता रहा है और वह वर्णन इस प्रकारम ब्रहे मानों देखो जब महर्षि भारद्वाज से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज तुमने विज्ञान लोको को कितना जाना है तो उन्होंने बेटा एक लोक से दूसरे लोक की देखो उनका मापना प्रारम्भ किया और वह विज्ञान से उसे मापने लगे तो बेटा! देखो पृथ्वीयों को मापा गया विज्ञानशाला में दृष्टिपात किया गया अन्वेषण मात्र से मेरे प्यारे देखो ऋषि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में तीस लाख पृथ्वीयों को जानने को प्रयास किया गया। तीस लाख पृथ्वीया उनकी गणना में आई परन्तु देखो वह इतनी विशाल अब्रहे ऐसी मानों देखो ऐसी-ऐसी तीस लाख पृथ्वीयों के सामान्य उस कई-कई को दृष्टम ब्रते यह सूर्य मण्डल को उन्होंने मापा और सूर्य मण्डल को जब मापने का प्रयास किया तो मेरे प्यारे मापते-मापते उन्होंने आगे अग्रणीय अपने जीवन को बनाया। मापने लगे जब बेटा! बृहस्पति को मापा गया तो इतना विशाल पाया क्या जैसे एक सहस्त्र बेटा! सूर्य उसमें समाहित हो जाए। जब मुनिवरों देखो बृहस्पति को मापा गया जब देखा उसके पश्चात् आरूणी मंडल के मापने का प्रयास किया। आरूणी मण्डल को मापने लगे तो बेटा! वह इतना विशाल पाया, प्राप्त हुआ कि उसमें बेटा! एक सहस्त्र बृहस्पति मानों उसमें समाहित हो जायें। मेरे प्यारे! एक सहस्त्र बृहस्पति मण्डल को मापने प्रदे जब उन्होंने आरूणी मण्डल से आगे चल करके ध्रुव को मापा तो एक सहस्त्र मानों आरूणी मण्डल धुरव मण्डल में में

समाते हुए उन्हें दृष्टिपात आने लगे। मेरे प्यारे! देखो जब ध्रुव मण्डल को मापने लगे मापते मापने बेटा उन्होंने एक सहस्त्र धुरवों को मुनिवरों! देखो उन्होंने एक पुष्प नक्षत्र में जाते हुए दृष्टिपात पाया। इसी प्रकार बेटा! एक सहस्त्र देखो वह अमृतम देखो यह धुरव पुष्प नक्षत्र में एक सहस्त्र पुष्प नक्षत्र स्वाति में ओत-प्रोत हो गया और एक सहस्त्र स्वति-मंडल बेटा मौन-कृति मण्डल में और एक सहस्त्र मौन केतु मण्डल बेटा देखो अंचग-मंडल में जाते हुए दृष्टिपात आने लगे। मेरे प्यारे! इसी प्रकार मापने लगे तो बेटा! मूल-नक्षत्र तक चले गये। ऋषि समाधिष्ट होने लगे परन्तु देखो उन्होंने अन्त में एक मनका दृष्टिपात आया जिसको हमारे यहां गन्धर्व कहा जाता है तो गन्धर्व को मापने लगे तो बेटा एक मण्डल एक ब्राह्मण्ड एक दुसरे में समाहित होता हुआ ऋषियो को दृष्टिपात होने लगा। महर्षि भारद्वाज मुनि बोले क्या अमृतम ब्रह्मा लोकाम अस्सुतम वेद की आख्यायिका में आया है कि इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है सब मिल करके जब सौर मण्डल बना तो मुनिवरो देखो अमृतम इतने सौरमण्डल ब्रहे बेटा एक अरब छयानवे करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवे हजार बेटा इतने सौरमण्डलों की एक आकाश गंगा बेटा दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे देखो जब आकाशगंगा को दृष्टिपात करने लगे, निहारने लगे गम्भीरता से तो बेटा! देखो एक यन्त्र विद्यमान है आत्मिक तत्व के द्वारा भी अपने में दृष्टिपात करने लगे। तो बेटा देखो आगे चल करके जब उन्होंने और अन्वेषण किया वेद-मन्त्रां के ऊपर चिन्तन करने लगे तो बेटा देखो एक अरब छयानवे करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवे हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! इतनी आकाश गंगाओं की एक निहारिका हमें दृष्टिपात आई। देखो मेरे प्यारे! जब निहारिका अपने में ओत-प्रोत होने लगी तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि अपने में मौन होने लगे। जब ऋषि मौन होने लगे ब्रहणां ब्रह्मा व्रतम मेरे प्यारे! देखो उन्होनें दो अरब के लगभग निहारिकाओं की एक अवन्तिका दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे! देखो तो ऋषियों ने बेटा! अनन्त कह करके, उच्चारण करके अपने में मौन से गये। तो विचार-विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज हे राजन! जब मानों चन्द्रमा नहीं होते तो तारा मण्डलों का मानों इनका जो धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है उस प्रकाश में हम प्रकाशित होते हैं नेत्र अपने प्रकाश में प्रकाशित हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा सम्भव ब्रहे आचारं ब्रहे मानों राजा ने कहा प्रभु! जब विद्यालय में हम अध्ययन करते थे तो आचार्यों ने हमे इस प्रकार का निर्णय दिया है परन्तु हम यह जानना चाहते हैं जब यह तारा मण्डल भी नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। उन्होंने कहा जब तारामण्डलों का प्रकाश नहीं होता और चन्द्रमा का भी नही होता तो अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। अन्धकार छाया हुआ है गृह में मेरी प्यारी माता अग्नि के प्रकाश से गृह को प्रकाशित करने लगती है और वह गृह जब प्रकाशित हो जाता है तो अपने क्रियाकलाप में प्रकाशित हो जाते हैं, क्रियाक्लाप करने लगते हैं। मेरे प्यारे! देखो यह अग्नि अपने मे बड़ी विचित्र अग्नि है। अग्नि हमारे आचार्यों ने बेटा चार प्रकार की अग्नि का व्यवधान किया है। सबसे प्रथम देखो गार्हपत्य नाम की है जिस अग्नि में ब्रह्मचारी तपता है द्वितीय अग्नि का नाम गृहपत्य है जिसमें पति और पत्नि तपते रहते हैं और तृतीय अग्नि का नाम आवहनीय नाम की अग्नि जिसमें विद्यालय तपते हैं और देखो एक वैश्वानर नामक अग्नि है जिसमें मेरे प्यारे! देखो सन्यास तपता रहता है। ब्रह्मज्ञानी अपने में ब्रह्म-ज्ञान का विचार-विनिमय करता रहता है। इन अग्नियों का चयन करने वाला स्वर्ग का गामी बनता है। इन अग्नियों का चयन करने वाला बेटा ब्रह्म की जिज्ञासा में लगा रहता है। मेरे प्यारे! यहीं अग्नि जब आगे चल करके आचार्यों ने बेटा! आयुर्वेद में पहुंचे तो उन्होंने पचासी प्रकार की अग्नि का चयन किया। आगे चल करके जब यही अग्नि देखो वह वैज्ञानिकों के कुल मे पहुंची अरबों-खरबों प्रकार की अग्नि का चयन होने लगा। मेरे प्यारे! यही अग्नि है

जो मानव के शब्दों को ले करके अन्तरिक्ष में पहुंचा देती है द्यु में रमण करा देती है जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके आचार्य होता-जनों से कहता है हे होताओं! यज्ञमान का हृदय पवित्र होना चाहिए मानों इसकी वाणी द्यु मे प्रवेश हो जाए तो वह वेद-मन्त्रों की धारा पर विद्यमान हो करके अग्नि में स्वाहा कहने से बेटा देखो वह देखो अन्तरिक्ष में वह देखो अग्नि उसके यज्ञमान के चित्रों सहित उन शब्दों को द्यु में प्रवेश करा देती है। यही अग्नि है बेटा जो एक-दूसरे के चयन मे परिवर्तित होती रहती है।

तो विचार आता है ऋषि ने कहा हे राजन! जब मानों देखो ये तारा मण्डलों का प्रकाश नही होता तो इस अग्नि के प्रकाश से हम प्रकाशित हो जाते हैं और अग्नि का प्रकाश एक ऐसा प्रकाश है जो मानव को मानवीयता में क्या अपने में अपने हृदय को उज्ज्वल बना देता है। मेरे प्यारे! देखो रम्भेश्वरी उपस्थित हुई और उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ भगवन क्या आपका ज्ञान बड़ा अनुपम है परन्तु मेरा एक प्रश्न है क्या जब यह अग्नि नहीं होती है तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है? उन्होंने कहा जब यह अग्नि नहीं होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं यही शब्द है बेटा देखो ध्वनि पर ध्वनि हो रही है ध्वनित हो रही हैं। जैसे एक मानव देखो मार्ग में चला जा रहा है परन्तु कुमार्ग मे चला जाता है और कुमार्ग में जा करके अन्धकार छाया हुआ है वह कहता है अरे है कोई मार्ग चेताने वाला। उस समय जो मानों मार्ग में स्थिर है वह कहता है ब्रह्मणे ब्रह्मा आ जाओं मैं मार्ग में स्थिर हूँ तो मेरे प्यारे! देखो उसी मार्ग का वह पथिक बन जाता है और पथिक बन करके मुनिवरों देखो उस मार्ग को वह चयन करने लगता है मार्ग को वह प्राप्त कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो वह शब्द का प्रकाश है जो ध्वनि आ रही है इसी ध्वनि को श्रवण करने वाला योगेश्वर मेरे प्यारे! अपने अन्द्ध रूप देखो उसे अपने में ग्रहण करता है और वह कहता है कि मैं अध्वनि को ध्वनित कर रहा हूँ। मेरे पुत्रों! देखो योगीजन जब साधना करते हैं तो एक दूसरा परमाणु परमाणु से संघर्ष होता रहता है और वही संघर्ष होता हुआ मुनिवरो देखो ध्वनि को योगी अपने में ध्यान करता है उससे ध्यानावस्थित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो वह ध्वनि एक-एक परमाणु में से ध्वनि आ रही है। एक-एक शब्द मानों देखो ध्वनि में ध्वनित हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो यह ध्वनि अपने में ध्वनित होता हुआ ध्वनियों को प्राप्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब अपनी वार्ता उन्होंने प्रगट की सम्भ्वम देवम ब्रह्मणा लोकाम वाचसुतम इस प्रकार मुनिवरो देखो ऋषि ने अपना वर्णन किया और ऋषि ने कहा हे राजन! और मानों देखो यह ध्वनि ही प्रकाश है इस ध्वनि के प्रकाश से ही पाण्डित्व कहलाता है। एक पाण्डित्व देखो वेद का अध्ययन कर रहा है और अध्ययन करता हुआ मानों ध्वनि से ही ध्वनित हो रहा है। जब ध्वनि से ध्वनित हो रहा है। तो मुनिवरो! देखो वही शब्द है जिससे वह कहता है कि यह पाण्डित्व तो सदैव सत्य उच्चारण करता है शब्द ध्वनि को ले करके ही मुनिवरो देखो, पाण्डित्व कहलाता है वह ब्रह्मचरिष्यामी बन करके अपनी ध्वनि को ध्वनि में परणित कर लेता है।

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो दोनों, राजा जनक और उनकी पत्नि ने नमः हो करके कहा हे प्रभु! आप को धन्य है कि आप हमारे अज्ञान को नष्ट कर रहे हैं परन्तु हम यह जानना चाहते है भगवन! क्या यह मानों देखो जब यह ध्वनि भी नहीं होती तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब यह ध्वनि नहीं होती तो हमारा जो प्रकाश है वो अनुपम मानों देखो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं आत्मम भूतम आत्माम देवम ब्रह्मा आत्माम तम ब्रह्मे ऋतम देवाः। मेरे प्यारे! देखो वेद का मन्त्र उच्चारण कर रहा है क्या यह आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है आत्मा का प्रकाश ही बेटा! जब तक मानव के शरीर में आत्मा विद्यमान है यही बेटा देखो प्रकाश को प्रकाशित करती रहती है और प्रकाश को देने वाला एक आत्मा कहलाता है। तो विचारवेत्ता कहते हैं आत्माम भूतम आत्माम प्रकाशम देवम ब्रह्मणा। मेरे प्यारे! देखो

आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है और आत्मा के प्रकाश से ही मानव प्रकाशित होता रहता है। इस प्रकार मुनिवरो! देखो ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया और ऋषि का जैसे ही यह मन्तव्य हुआ तो मेरे प्यारे! देखो आचार्यजन अपने में मौन हो गये। विचारवेत्ता कहते हैं ब्रह्मणा देवम ब्रह्मा वाचन नमम ब्रह्मे देवत्वाम। मेरे प्यारे! देखो आत्मा पर आ करके ऋषि अपने में मौन हो गया और ऋषि मौन होने पर मुनिवरो! राजा और उनकी पत्नि भी मौन गई। उन्होंने कहा धन्य है। तो ऋषि ने कहा हे राजन! जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाता है अरे! उस समय सूर्य प्रकाश दे रहा है परन्तु देखो वही प्रकाश है और अंग-संग देखो मानों यह प्रकाशित क्यों नहीं हो रहा है। जब नेत्र ज्यों के त्यों बने हुए है निर्माण है परन्तु न तो चन्द्रमा अपना प्रकाश दे रहा है चन्द्रमा ज्यों का त्यों है परन्तु मानव के शरीर में एक आत्मा नहीं है। अरे मानव! क्यों नहीं प्रकाशित हो जाता। चन्द्रमा अपनी तारामण्डलों की मण्डली बनाए हुए हैं और वह एक धारा में परणित हो रहे हैं अरे मानव क्यों नही प्रकाशित हो जाते परन्तु प्रकाश का द्युतक मुनिवरों! यह आत्मा है। आत्मा को प्रकाश में लाने का प्रयास करों।

विचारवेत्ताओं ने कहा कि आत्माम भुतम ब्रह्मणा। मेरे प्यारे! देखो शब्द अपनी ध्वनियां कर रहा है नेत्रो के गोलकनें बने हुए हैं अरे मानव! तू क्यों नही प्रकाशित हो जाता परन्तु वह शव्दायमान है क्योंकि आत्मा शरीर में नहीं है। तो वेद के ऋषि ने कहा कि आत्मा को जानने का प्रयास करो आत्मा को जाने बिना मानव का कल्याण नहीं हो सकेगा। अरे! आत्मा को जानने के लिए तुम सदैव तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो इसलिए ऋषि अपने में मौन हो गये उन्होने कहा हे राजन! हम आत्मा के प्रकाश में चले जाते हैं तो आत्मा ही प्रकाश का द्युतक है। मेरे प्यारे! देखो आत्मा को हम जानने का प्रयास करें। राजा बड़े प्रसन्न हुए राजा ने कहा धन्य है प्रभु! आपने हमें प्रकाश में पहुंचा दिया है। आत्मा का प्रकाश ही मुनिवरो! देखो मानव को चेतनित बनाए रहता है। इस प्रकार मुनिवरो! देखो अपना मन्तव्य दे करके और उन्होंने कहा आत्माम भूतम यह ध्वनितं ब्रह्मा यह ध्वनित होता रहता है। तो मेरे प्यारे! इस प्रकार ऋषि ने अपना वर्णन दे करके और अपने में मौन हो गये। राजा और उनकी पत्नि रम्भेश्वरी अपने में सन्तुष्ट हो गये।

तो विचारवेत्ता ने कहा हे मानव! तू अपनी आत्मा को जानने का प्रयास कर। मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र एक-एक वेद का मन्त्र हमें ध्वनि के लिए पुकार रहा है। एक-एक वेद का मन्त्र बेटा! देखो हमें उदगीत गा रहा है क्या तुम प्रयास करो कि आत्मा को जानो। यह है बेटा आज का वाक्। आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह क्या हमारे शरीर में जो आत्मा भास रहा है, चेतनित हो रहा है अरे! उसको जानने के लिए तुम तत्पर हो जाओ और उसी को जानो। मानों देखो वही तुम्हारे कल्याण का एक मार्ग है पवित्रतम में पहुंचाने वाला है। तो राजा और उनकी पत्नि बड़े प्रसन्न हुए और ऋषि ने बेटा वहां से प्रस्थान किया।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानने के लिए सदैव तत्पर हो जाए यह है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या मुनिवरों देखो आत्मा का यह प्रकाश है आत्मा के प्रकाश से ही यह संसार ये प्रकाशित होता हुआ दृष्टिपात हो रहा है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन होगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनाः गायन्त्वाः। ओ३म् ब्रह्म द्यु रथम् आपा रथम् मंगताः। ओ३म् तनु गन्धर्वः आपा रथम् गायाः। ओ३म् मधुमन्था मधुकृताऽहम् आपा ऋषिः गायन्ताम् आभाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 28-मई-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : ग्राम समाज भीकनपुर गाजियाबाद

४ याज्ञिक 29-मई-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतो से ही उस मनोंहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी मानें गये हैं और वह यज्ञोमयी स्वरूप है। याग उसका आयतन है, उसका गृह है और उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। उस परमपिता-परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है उस परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में इस ब्रह्मांण्ड रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया और यह भव्य याग हो रहा है। परमात्मा स्वंय इस याग के ब्रह्मा हैं, आत्मा इसका यजमान है और पंच-महाभूत इसका कोई उदगाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई मानों होता बन करके याग कर रहा है। तो यह कैसा मेरे प्यारे प्रभु का यह ब्रह्मांण्ड याग है जहां लोक-लोकान्तरों की माला बनी हुई है और वह माला मानों एक दूसरे में पिरोयी जा रही है जैसे नाना प्रकार के मनके एक सूत्र में पिरोये जाते हैं और वह माला बन करके ही उसमें सुशोभित हो जाते हैं और मुनिवरों! देखो उस परमपिता-परमात्मा का यह जो जगत है यह भव्यतव में रमण करता रहा है और परमपिता-परमात्मा इसमें वास करता रहा है और उसका आयतन, उसका गृह, उसका सदन है। इस प्रकार मानव का यह जो मानवीय-शरीर है यह भी यज्ञशाला के रूप में विद्यमान है मानों देखो यज्ञमान अग्नि में हुत कर रहा है अग्नि देवताओं का मुख माना गया है। देवता ज्ञानी की सहायता को प्राप्त करके अपने देवत्व को प्राप्त होने लगते हैं। तो आओ मुनिवरों! देखो इसी सन्दर्भ में मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करूंगा।

याज्ञिक बनो

आज का हमारा वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा यज्ञनम सुताः। तो हे मानव तू याज्ञिक बन क्योंकि जितना भी तेरा जीवन का क्रियाकलाप है वह सर्वत्र याग है। मानों जितना भी तेरा सुक्रियाकलाप है चाहे वह नेत्रों के द्वारा होता हो, चाहे वह घ्राण के द्वारा परन्तु वह सर्वत्र एक याग के रूप में परणित माना गया है तो इसी प्रकार हमें याज्ञिक बनना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! मुझे याग के सम्बन्ध में नाना ऋषि-मुनियों की वार्ताए स्मरण आती रही हैं और उस यागाम भूतम ब्रह्मा वर्णस्सुते कही से प्रेरणा प्राप्त हो रही है कि याग के ऊपर अपना विचार दिया जाए। तो आओ मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब महर्षि-याज्ञवल्क्य मुनि-महाराज अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को शिक्षा प्रदान करते रहे हैं और उन्होंने बेटा! देखो प्रातः कालीन नित्यप्रति वह ब्रह्मचारियों को शिक्षा देते रहे और वह यह कहा करते यज्ञनम ब्रह्मा चरिष्यम ब्रह्मा व्रतम् वह कहा करते कि हे ब्रह्मचारियों! तुम आओ याग करो और गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करते हुए मानों उससे नित्यप्रति याज्ञिक बन करके और अपने को ऊंचा बनाने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो याग के सम्बन्ध में विचार दे रहे थे और न्यौदा में मन्त्रों का उदगीत गा रहे थे। न्यौदा में वेद-मन्त्रां का उच्चारण करते हुए ऋषि ने कहा क्या प्रत्येक मानव, प्रत्येक-प्राणी मात्र मानों देखो यहां याज्ञिक बना हुआ है। नाना वनस्पतियाँ अपने समय-समय पर एक दूसरे में सुगन्धित करती रही हैं एक दूसरे को मानों प्रभावित करते हुए लोक-लोकान्तर एक माला के सदृश्य बने हुए हैं। तो यह सर्वत्र याग हो रहा है। मेरी प्यारी माता अपने पुत्र का पालन कर रही है परन्तु अपने गर्भ-स्थल से ले करके और पांच वर्ष तक ब्रह्मचारी को पवित्र बना देती है उसे दीक्षान्त अपनी विचारधारा प्रगट करती हुई मानों उसे ओजस्व बना करके वह याग कर रही है। मेरे प्यारे! देखो यहां प्राण को

अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए मानों देखो मेरी प्यारी माता अपने गर्भ में याग को दृष्टिपात करती रही है। तो विचार आता रहता है प्राणों के सम्बन्ध में या इस विज्ञान में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह क्या यह प्राणों का एक समूह है और यहां एक दूसरा प्राण प्राण में परिणीत हो रहा है और प्राण ही प्राण को मानों देखो गतिवान बना रहा है तो ऐसा एक विचित्र मानों नृत हो रहा है। यह परमपिता-परमात्मा का एक अनूठा जगत है अनूठी मानों देखो उसकी वृत्तिया हैं उसको जानना हमारा बहुत अनिवार्य है।

याग का क्रम

महर्षि-याज्ञवल्क्य-मुनि-महाराज ने जब इस प्रकार का उपदेश प्रारम्भ किया तो ब्रह्मचारियों में से एक मानों यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी उपस्थित हुए और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आप याग के ऊपर नित्यप्रति अपना उद्गार देते रहते हैं हम यह जानना चाहते हैं कि याग करना चाहते हैं परन्तु याग कैसे करे? उसका क्या क्रम वृत्ति है। तो याज्ञवल्कय मुनि बोले कि हे ब्रह्मचारियों! एक पवित्र यज्ञशाला हो और यज्ञशाला मानों खम्भों सहित होनी चाहिए नाना प्रकार का साकल्य हो अथवा चरू हो और अपने विचारां को मन-कर्म-वचन को एक ही सूत्र में ला करके मानों देखो तुम याग का प्रारम्भ करो और यागाम देखो उसमें कहो सबसे प्रथम प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके उसमें हूत प्रारम्भ करों क्योकि यह प्राणो का जगत है यह प्राणो की प्रतिभा को जान करके मानव योगेश्वर बन जाता है। प्राणां की प्रतिष्ठा को जान करके ही मानव देखो एक दूसरे का सहायतार्थ बन जाता है और प्राणों की प्रतिभा को जान करके ब्रह्माण्ड के एक-एक कण-कण में मानव ओत-प्रोत हो जाता है। तो यह प्राण ही मेरे प्यारे! देखो अपने में रत्त हो रहा है। तो कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा और अमृतम सनम ब्रम्हे व्यानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने कहा तो उस समय ब्रह्मणे ब्रहा यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! यज्ञशाला भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा अवश्य होनी चाहिए। उसका निर्माण हमारे आचार्यो ने नाना प्रकार की यज्ञशाला का व्यवधान किया है, अथवा उसके नाना प्रकार के कर्मकाण्डों का कृतियों में व्यक्त करके उन्होंने वेद के मन्त्रों का उदगीत गाया है तुम इस प्रकार की यज्ञशाला का निर्माण करो।

समिधाओं से याग

मेरे प्यारे! देखो उस समय अग्न्याधानम् ब्रह्मा मुनिवरों उस समय यज्ञदत्त ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! यज्ञमान क्या हम याग करना चाहते है परन्तु न तो यज्ञशाला है और न खम्भों वृत्ति हैं और न चरू है प्रभु! हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा यदि तुम्हें इस प्रकार की सुविधा न प्राप्त हो तो तुम मानों देखो अग्नि अमृतम समिधाओं को एकत्रित करके और उसमें अग्न्याधान करो और कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा कह करके उसमें वेद-मन्त्रों का उदगीत गाते रहो जिससे वायु-मण्डल तुम्हारा पवित्र बन जाये और वायु-मण्डल में एक महानता का दर्शन हो जाए। मेरे प्यारे देखो उन्होंने कहा धन्यम् ब्रव्हा वह तुम समिधाओं के द्वारा अग्न्याधान करो और अग्नि को प्रचंड क्योंकि देवताओं का मुख अग्नि कहलाता है। अग्नि ही मानों देखो देवत्त्व को प्राप्त करा देता है यह अग्नि ही जब यज्ञमान याग करता है तो वह अपनी प्रवृत्तियों को अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ-लोक का भ्रमण करता है जब लोक में प्रवेश होता रहा है और वही चित्र मानों देखो तुम्हारें क्रियाकलापों में आते रहते हैं तुम्हारें मानवीयत्व में परिणीत होते रहे हैं।

जल से याग

इस प्रकार बेटा! देखो ऋषि ने जब अपना मन्तव्य दिया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि हे प्रभु! कहीं ऐसा हो मानों कहीं यह सुविधा भी न प्राप्त हो, न तो वहाँ समिधां है, न अग्नि है और हम याग करना चाहते हैं तो कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह समिधा न हों तो मानों तुम जल को अपनी अञ्जलि में लो और जल को अञ्जलि में ले करके कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके देखो अपने में हूत प्रारम्भ करो। मानों देखो जल अग्नि में, जल मानों एक वृत्ति है, जल सान्तवना को देने वाला है। यह जल से ही संसार का पिण्ड बनता है। जितना भी पिण्डाकार ब्रह्मांण्ड का निर्माण है वह सब जल वह आपो ब्रहे अमृतम मानों देखो आपो से निर्वत हो रहा है। मानों देखो यही पिण्डम ब्रह्मा ब्रहे यह जो नाना प्रकार के पिण्ड रूप में हमें दृष्टिपात आ रहे हैं एक माला बनी हुई है और वह माला मुनिवरों देखो एक पिण्ड में बनी हुई सी मानव का शरीर एक पिण्ड है वह भी मुनिवरों देखो आपो से ही ओत-प्रोत हो रहा है। जैसे यह सूर्य पिण्ड है इसमें भी आपो निहित रहता है। यह चन्द्रमा का पिण्ड है यह भी पिण्डाकार केवल जल के कारण है इसमें तरलत्व पदार्थों के कारण ही मानों देखो यह पिण्डाकार बना हुआ है। मेरे प्यारे! देखो यही आपोमयी-ज्योति है जो माता के गर्भ-स्थल में विद्यमान होती है। माता के गर्भ-स्थल में मानों एक बिन्दु है और वह बिन्दु मुनिवरों देखो आपाम ब्रह्मे आपाम वृत्ति देवाः यह भी आपो के रूप में विद्यमान होती है और वही माता के गर्भ में जब प्रवेश होती है तो उसमें बिन्दु में ही शिशु है और शिशु के पिण्डों तरल पदार्थों में से ही मानव के शरीर का पिण्ड का निर्माण होता है और इस मानव शरीर पिण्ड में बेटा! कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है और बुद्धि एक प्रकार की नहीं जैसे मेधा, ऋत्मभरा, प्रज्ञावी कहलाती हैं। इसी प्रकार मुनविरों! देखो मन, बुद्धि और चित्त और चित्त अहंकार के रूप में परिवर्तित होता हुआ यह बाह्य या आन्तरिक जगत का जब निर्माण होता है तो यही बाह्य-जगत में प्रवेश होता है। जब इन्द्रियां बन जाती है मानों देखो उसका बाह्य रूप क्रियाकलाप प्रारम्भ हो जाता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! यह मानव का शरीर रूपी जो पिण्ड का निर्माण है वह कहां हुआ है, कौन इसका निर्माणवेत्ता है। वह जो परब्रह्म परमात्मा है जो सृष्टि का नियन्ता है निर्माण करने वाला है बेटा माता के गर्भ स्थल में निर्माण हो रहा है परन्तु निर्माण जब करने वाला है तो वहां देखो कहीं बुद्धि का निर्माण है तो कहीं हृदय का निर्माण है और हृदय में ही हृदय की नाना प्रकार की तरंगों का प्रादुर्भाव होता रहता है। हृदय भी दो प्रकार के शरीर के मध्य में और एक मानों देखो लघु मस्तिष्क में रहता है। इसी प्रकार हृदय भी हमारे कृतियों में माना गया है इसी प्रकार अमृतम देखो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो निर्माणकर्त्ता वह प्यारा प्रभु है और माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है परन्तु यह पिण्ड कहाँ से बन रहा है? जल को अञ्जलि में ले करके कहो कि प्राणाय स्वाहा। हे प्राण! तू जल को अपने में धारण कर। मेरे पुत्रों! देखो वह जलम ब्रह्मा ऋतम वह अपने में धारण करने वाला अपने को धारयामि बना लेता है।

तो विचार आता है मुनिवरों देखो वह आपो ही एक ऐसा है जो इस संसार का पिण्ड रूप बना देता है इस पृथ्वी का पिण्ड बना हुआ है। इस ब्रह्मांण्ड में जो एक पिण्डाकार हमें नाना लोक-लोकान्तर दृष्टिपात आ रहे हैं यह सर्वत्र मानों देखो आपो के कारण हैं और यह जल पिण्ड का मानों वृत्त कहलाया जाता है। यह जो नाना प्रकार के गृह हैं मानव के गृह मानों कितने प्रकार के है? आत्मा का गृह सबसे प्रथम कारण गृह है उसके पश्चात सूक्ष्म देखो सत्रह तत्वों का गृह है और यह मानव का स्थूल शरीर का गृह है और जब यह जगत में आ जाता है तो बेटा! जगत में पार्थिव-तत्वों को ले करके अग्नि-तत्त्वों को ले करके और यह आपो गुरु-तत्त्व को ले

करके अपने-अपने गृहों का निर्माण कर लेता है। गृह-स्वाभिनी और गृह-स्वामी बेटा गृह में प्रवेश करते हैं। नाना गृहों का निर्माण शरीर के लिए करता है। आत्मा के तीन प्रकार के शरीरों की वृत्तियां विद्यमान रहती हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो यह परमात्मा का अनुपम जगत है और अमृतम ब्रह्मा बेटा देखो माता के गर्भ-स्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली मां उस मानों देखो उस परमपिता-परमात्मा से वंचित रहती है। हे ब्रह्मण ब्रहे माता तेरे गर्भस्थल में तेरे वह प्रभु कितना निकट है परन्तु वह निर्माण कर रहा है। बाह्य का निर्माण हो रहा है तेरे गर्भस्थल में इतना भव्य याग हो रहा है परन्तु उस याग को तू दृष्टिपात नहीं कर सकती। कैसा यह विचित्र जगत है। तो मेरे प्यारे! देखो यहां शरीर में नाना प्रकार की वृत्तियों का निर्माण होता है। इस शरीर में ब्रह्माण्ड की नाना वृत्तियां, नाना तरंगे तरंगित होती रही हैं। तो वेद का आचार्य बेटा इसी वाक् को कहता हुआ कहता है हे यज्ञदतम ब्रह्मा देखो तुम जल को अञ्जलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके और उदानाय कह करके चित्त के मण्डल में प्रवेश कर जाओ।

पृथ्वी की रज से याग

मेरे पुत्रों! देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह भी हमने स्वीकार कर लिया परन्तु कहीं हम ऐसी स्थली पर चलें जाएं जहां जल भी हमें प्राप्त न हो तो प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि जल भी प्राप्त न हो तो तुम मानों देखो पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा कह करके यह जो पृथ्वी की जो रज है यही तो मानों देखो हमारे पिण्ड में सहायक बनती है यही गुरूत्व कहलाती है इसी से सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है। परमात्मा का जो विज्ञान है जिसको मानव जानता रहता है वह विज्ञान इसी के ऊपर निहित रहता है। तो मानों देखो यह जो गुरूत्व पदार्थ है गुरूत्व अपने में गुण अमृतों में परणित हो रहा है। अरे! इसके बिना तो संसार का पिण्ड ही नहीं बनता। मेरे पुत्रों! देखो जब यह प्रभु का निर्माण होता है यह सर्वत्र मानों देखो यह पिण्डम ब्रह्मा ऋतम यह गुरूत्व को लिए हुए नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में विद्यमान होता है जैसे सूर्य मुनिवरों देखो अग्नि तत्त्व प्रधान है परन्तु वहां भी गुरूत्त्व विद्यमान रहता है तरलत्त्व भी विद्यमान रहता है तब ही तो वह पिण्ड बनता है। नाना प्रकार के मानों देखो नाना गंगाओं में और नाना निहारिका में गुरूत्व विद्यमान होता है। तो इसलिए देखो यह पृथ्वी की रज को ले करके जिस रज से ही मनिवरों देखो माता अपने गर्भ में एक मानों शिशु को अपने में दृष्टिपात करती रही है। मुझे बेटा देखो माता मदालसा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। माता मदालसा के गर्भ-स्थल में जब शिशु होता तो वह बेटा देखो अपना समाधिष्ट हो करके प्राण में अपान को, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में दृष्टिपात करती हुई बेटा! अपने शिशु के आत्मा से अपने गर्भ में बेटा! वह वार्ता प्रगट करती रही है। तो विचार आता रहता है कि विज्ञान चन्द्रव व्रते हे मानव! तू विद्या में उस छोर को जानने का प्रयास कर जहां तेरी मानवीयता का निर्माण होता है।

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान प्रायः हमारे वैदिक-साहित्य में विद्यमान रहता है। तो मुनिवरों देखो प्राणम् ब्रह्मा व्रतम देवा तो मेरे पुत्रों! देखो पृथ्वी की रज ले करके जहां प्राण मुनिवरों बिना पृथ्वी की रज के गति नहीं कर सकता, बिना तरल पदार्थ के गति नहीं करता गति कर जाए अन्ताम ब्रह्मा अग्नम् वृत्ति देवा यह अग्नि रूप बन जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो विचार आता रहता है मैं तुम्हें गम्भीर विचारों में नहीं ले जा रहा हूँ। केवल यह क्या यज्ञदत ब्रह्मचारी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे ब्रह्मचारियों तुम याग करो परन्तु पृथ्वी की रज के द्वारा रज को ले करके तुम कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहा और समानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो! यह प्राण ही तो

भोगतव्य है, यह प्राण ही तो भक्षण करने वाला है और प्राण ही मानों देखो वृत्ति कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो मुनिवरों देखो ब्रह्म व्रतम मुनिवरों देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहां धन्य है प्रभु! माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है वहां भी रज पदार्थ विद्यमान हैं और रजम ब्रह्मा देखो रज के द्वारा निर्माण होता रहा है मानों देखो जल में भी रज गमन करता है जब वह गतिवान होता है। मेरे प्यारे! देखो चन्द्रमा में भी जल का उत्थान करता है इसमें रज के कण होते हैं।

रज भी प्राप्त न हो

तो इस प्रकार मुनिवरों देखो ऋषि ने जब वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ। यज्ञदत ने जिज्ञासु हो करके और वह बोले कि हे प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ यदि कहीं भगवन रज भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा कहीं तुम्हें रज भी कहीं प्राप्त न हो तो तुम देखो अपनी अञ्जलि को ले करके और मानों देखो अञ्जाल भूतम यज्ञम ब्रव्हा ऋते यज्ञशाला बना करके वेद-मन्त्रों का उदगीत होना चाहिए। वेद-मन्त्र मौन हो करके कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, जिससे वायुमण्डल तुम्हारी वाणी से पवित्र हो जाए और तुम्हारा मानवीयत्व पवित्रता को प्राप्त होगा। जैसे मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! देखो मुझे स्मरण है काग-भुषण्ड जी ने एक समय महर्षि लोमश मुनि से यह कहा कि हे प्रभु! मैं साधना करना चाहता हूँ मैं साधना कैसे करु? उन्होंनें कहा यदि साधना करना चाहते हो तो तुम्हारा अंग-संग का वायुमण्डल तुम्हारा पवित्र होना चाहिए। बिना वायुमण्डल पवित्र हुए तुम्हारा याग सम्पन्न, तुम्हारी साधना पवित्र नहीं होगी। तो बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है क्या काग-भुषण्ड जी बेटा देखो अनुष्ठान में परिणीत हो गये, अनुष्ठान उन्होंने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और वह मानों प्रातः कालीन बेटा! याग करने लगे। जब प्रातः कालीन याग में परिणीत हो गये, वेद-मन्त्रों का उदगीत गाने लगे। न्यौदा में वेद-मन्त्रों की ध्वनियों से ध्वनित होते हुए वायुमण्डल को और साकल्य अग्नि के द्वारा उसकों पवित्र बनाने में लग गये।

बेटा! एक समय देखो वृत्तिका ब्रह्मचारी देखो वृत्तिका आचार्य अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रहे थे और शिक्षा देते उन्हें किसी कारण से उन्हें तमोगुण छा गया। तमोगुण छा करके ब्रह्मचारी को दण्डित करते हुए रजोंगुण की पुट लगा करके मानों देखो ब्रह्मचारी को दण्डित करके और वहां से सांयकाल को उन्होंने प्रस्थान किया। प्रस्थान करके काग-भुषण्ड जी सांय काल का याग कर रहे थे तो उन्होंने भी बेटा! देखो उसमें हूत प्रारम्भ कर दिया। जब हूत करने लगें तो वायु-मण्डल में बेटा उनके विचारों की तरंगे देखो चित्र के रूप में देखो कागभुषण्ड जी को दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा, याग को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा हे ऋषिवर! तुम्हारा तो हृदय तमोगुण में परणित हो रहा है तुम्हारी जो देखो आहार तरंगे हैं वह रजोंगुण तरंगों में परणित हो रही हैं। तुमने मेरे याग को भ्रष्ट कर दिया है। मेरे प्यारे! देखो मेरी साधना का यह अनुष्ठान है परन्तु यह अनुष्ठान का दिवस भंग हो गया। मेरे पुत्रों! देखो वृत्तिका ब्रह्मचारी ने, आचार्य ने यह स्वीकार कर लिया कि प्रभु! मैं ब्रह्मचारियों को दण्डित करके आया हूँ। वास्तव में मेरे विचारों में देखो दूषितपन आ गया है। तो इसलिए वेद का मन्त्र कहता है कागभुषण जी ने कहा वेद-मन्त्र कहता है प्राणम ब्रह्मा मनस्तव ब्रह्मा मनम ब्रह्मे देवाम भूतप प्रव्हे वेद का आचार्य कहता है कि इसी में वेद-मन्त्र कहता है हे यजमान तेरा मन, कर्म, वचन याग में होना चाहिए अन्यथा देखो तेरे से देवता रूष्ट हो जाऐगे। मेरे प्यारे! देखो वेद-मन्त्र यह कहता है क्या तेरा मन कर्म में देखो उस कार्य को करों वह सर्वत्र याग है परन्तु मन, कर्म, वचन तुम्हारा वहीं होना चाहिए।

तो मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार काग-भुषण्ड जी ने कहा क्या तुमने मेरे अनुष्ठान का यह दिवस समाप्त हो गया है (समाप्त कर दिया है)। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा मैं क्षमा का पात्र हूँ, क्षमा प्रार्थी हूँ। भगवन! मुझे

आप क्षमा कीजिए। मेरे प्यारे! देखो वहां से उन्होंने प्रस्थान किया। तो आचार्य ने कहा, महर्षि ने क्या हे ब्रह्मचारियों देखो तुम याग करो परन्तु यदि तुम्हें कोई भी सुविधा न प्राप्त हो तो वेद-मन्त्रों का उदगीत गाते हुए तुम मानों देखो अंजलि को ले करके और कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा सम्भुति ब्रह्मंणा ब्रह्मे देवत्वाम स्वाहा इस प्रकार तुम उदगीत गाना प्रारम्भ करो परन्तु देखो तुम याज्ञिक अवश्य बनो। यह आचार्य देखो नैतिक-शिक्षा में ब्रह्मचारियों को प्रातः कालीन बेटा! देखो अपने उदगार प्रगट कर रहा है और उदगार प्रगट करता हुआ ब्रह्मचारी उसे स्वीकार कर रहे हैं। तो मुनिवरों देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आप को धन्य है परतु वेद के आचार्य ने, याज्ञवल्क्य ने कहा क्या ये तुम्हारा देखो तपस्या का करूणा में स्वर है क्या जब तुम मानों देखो अपने में हूत प्रारम्भ करोगे अनुष्ठान करो और यही मानों देखो जब मन, कर्म वचन तुम्हारा एकाग्र होगा उसमें तुम्हें ज्ञान की देखो नाना प्रकार की विभुतियाँ तुम्हें प्राप्त हो जाएगी। ज्ञान की तरंगे तुम्हें परणित हो जाएगी इसलिए तुम्हारा हृदय, हृदय और मनमं ब्रह्मा वर्णास्सुते देव प्रवाहा मानों देखो तुम्हारा मन, कर्म, वचन एकाग्र हो करके तुम तपस्वी बनो और तपस्या करने का परिणाम यह होगा कि तुम देवता बन जाओगे और देवताओं की सभा में तुम सुशोभनीय हो जाओगे।

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार ऋषि अपने उदगार दे करके ब्रह्मचारियों से बोले हे ब्रह्मचारियों! तुम अपने विद्यालय में पवित्र बनों और तुम गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करो जिस अग्नि का चयन करके ब्रह्मचारी गार्हपत्य बन जाते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार ऋषि अपना उपदेश दे करके वह मौन हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी ऋषि के चरणों में ओत-प्रोत हो गये और उन्होंने कहा कि प्रभु! आप ने हमें अज्ञान से प्रकाश में पहुंचाया है आप को धन्य है। आप ने न्यौदा में वेद-मन्त्रों का उदगीत गाया है तो मेरे प्यारे! देखो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो जब हम वेद-मन्त्र के ऊपर अध्ययन करते हैं और याग करते हैं तो याग अपने में मानों देखो भव्यतव माना गया है। यागाम् भूतम ब्रह्मा यागाम यज्ञम ब्रह्मे याजाराम जो जागरूक रहता है वही याज्ञिक है और जो मानों देखो अन्धकार ही अन्धकारम् देखो अन्ध समाज में रहता है वह अन्धकार में रहता है तो उस ही अन्धकार को त्यागों और प्रकाश में जाने का प्रयास करो और प्रकाश है तो तुम्हारे अन्तकरण में, अन्तकरण में तुम्हारा जीवन पवित्र हो जाए। तो इस प्रकार अपने में अपनेपन को जानने के लिए सदैव तत्पर हो जाओ।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो आज का हमारा वाक् यह क्या कह रहा है यज्ञनम ब्रह्मा ब्रह्मे देवम् अप्रतम देवा यज्ञा। तो मुनिवरों देखो याग अपने में बड़ा भव्यतव और पवित्र माना गया है। तो आज का विचार-विनिमय क्या हम मुनिवरों देखो याग को पवित्रता में ले जाएं और अपने जीवन को उसमें संलग्न बनाते हुए परमात्मा को यज्ञोमयी स्वीकार करना चाहिए क्योंकि परमात्मा ने जब संसार रूपी याज्ञशाला का निर्माण किया तो वह निर्माणकर्त्ता मानों देखो सृष्टि का विचारक देखो नियामक है, निर्माण करने वाला है। तो उसमें बेटा संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण हुआ और यज्ञशाला का निर्माण इसलिए कि आत्मा यज्ञमान है, परमात्मा स्वयं ब्रह्मा है, पंच महाभूत मानों देखो कोई उनमें से अध्वर्यु है कोई उदगाता है कोई होता बन करके बेटा याग कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो उदगाम उदगीतम् ब्रह्मा वो उदगीतं उदगीत गाता हुआ ब्रह्मा के द्वार पर जा रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो इस प्रकार जब वेद का मन्त्र अपने में उदगीत गाता है तो अपनी धाराओं में परणित होता हुआ इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करता है। तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमारा मानवीयत्व पवित्र बनें, शिक्षा-प्रणाली अपने में मानों देखो ओजस बन करके और ओजस्तव को प्राप्त हो करके सागर से पार होने का प्रयास करें।

तो मेरे पुत्रों! देखो आज का विचार यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महती, उसका अनुपम ज्ञान और विज्ञान को जानते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक होना चाहिए और वह मानव अपनी इन्द्रियों से जय अमृतम मानों देखो वेद-मन्त्रों का उदगीत गा करके सान्तवना को प्राप्त हो करके सागर की आभा को जानते हुए और अपने में धारयामि बन करके सागर को इस संसार रूपी सागर में परणित हो जाना है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करुंगा। आज का वाक् अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्यों का अभिप्राय यह क्या हम मुनिवरों! देखो अपनी उन महान तरंगों को जानने में तत्पर हो जाएँ जो हमारे हृदय से उदगार के रूप में उद्वित होती रही हैं और वह वायुमण्डल में प्रवेश हो करके प्रायः हम ही को प्राप्त होती रहती हैं। तो इस प्रकार हमारा जीवन होना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो हम तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। वेद पाठ-अनुपलब्ध अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 29-मई-1992 समय : प्रातः 9 बजे स्थान : ग्राम समाज भीकनपुर, गाजियाबाद

५ विष्णु के रूप 9-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड़ के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर बड़ा अध्ययन किया है और एक-एक वेद-मन्त्र को ले करके उन्होंने अपनी षोडश-कलाओं को जानने का प्रयास किया। आज के हमारे वैदिक साहित्य में अथवा वेद-मन्त्रों में जहाँ नाना प्रकार की वार्ताए प्रायः आती रहती हैं वहाँ एक वेद का मन्त्र आ रहा था षोडश्चम ब्रह्मा वर्णास्सुतम् आत्माम् भूतम ब्रह्मा विष्णु। वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे मानव तू अपनी षोडश-कलाओं को जानने का प्रयास कर यदि तू अपने जीवन को महान और पवित्रता के आंगन में ले जाना चाहता है तो तुझे षोडश-कलाओं वाला बनना है और षोडश-कलाओं को जानने वाला ही विष्णु कहा जाता है। हमारे यहाँ वैदिक-साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द माने गये हैं, जैसे विष्णु नाम परमपिता-परमात्मा को माना गया है और विष्णु नाम माता का है और यज्ञोमयी-विष्णु क्योंकि यज्ञ का नाम भी विष्णु रूप माना गया है और यहां आत्मा का नाम भी विष्णु रूप में ही माना गया क्या यह आत्मा विष्णु है? जो प्रायः हमारे अन्तकरणीय आभा में रत्त रहने वाली है तो उसका नाम विष्णु कहा जाता है।

विष्णु की व्याख्या

तो आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा है विष्णु ब्रह्मणा व्रत्तम् देवा हे विष्णु तू वास्तव में कल्याण कारक है और पालन करने वाला है। तो हमारे यहां वेद की आख्यायिकाओं में प्रायः इस प्रकार का वर्णन आता रहा है कि विष्णु नाम परमपिता-परमात्मा का है जो संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है और वही विष्णु कहलाता है जो मानो अपनी आभा में रत्त रहने वाला है। विचार आता है कि विष्णु नाम जब गुणों का वर्णन आता है तो सतोगुण में ही विष्णु माना गया है और विष्णु को कहाँ है ध्रुवाम् विष्णु व्रणाम् ब्रह्मा क्योंकि जितना पालना के मूल में आता है उस सर्वत्र का नाम विष्णु है और पालना के मूल में जहाँ परमपिता-परमात्मा सर्वोपरि हैं वहीं माता का नाम भी विष्णु कहा गया है और विष्णु नाम सूर्य को भी कहा गया है और यज्ञोमयी विष्णु क्योंकि यह भी पालन करने वाला है। तो जितना भी पालना के मूल में वाचीशब्द आते हैं वह सर्वत्र विष्णु कहलाते हैं क्योंकि वह ध्रुवा है। जब पालना का प्रसंग आता है तो मानव का धुरवा, ध्रुवा में वो गमन करने लगता है जैसे परमपिता-परमात्मा सत्यमयी धुरवा है। जैसे मानो देखो, एक वृक्ष पर नाना प्रकार के फलों की जब उपलब्धियां होती हैं तो वह फल है क्योंकि वह वृक्ष पालना के मूल में रहता है तो उसका जो फूल है अमृतातयी मानों वह पालना विष्णु बरना है वह मानो उसमें पालना को प्राप्त करता वह भी नीचे को धुरवा में गति हो जाती है इसी प्रकार माता जब अपने बाल्य का पालन करती है तो उसकी धुरवा गति हो जाती है। वह धुरवा में नम्र बन जाता है। इसी प्रकार माता और पिता के रूप में मानो वह वर्णित होने लगता है। आचार्य कुल में ब्रह्मचारी अध्ययन करता है तो अध्ययन करता हुआ मानो वह भी देखो आचार्य धुरवा में रहता है क्योंकि वह पालना में और वह आचार्य अपनी ओजस्वी वाणी से ब्रहस्पति बन करके ही मुनिवरों देखो, वह ओजस्व उपदेश देता है और वह ब्रह्मचारी को कहता है ब्रह्मचारी! तू मृत्यु से पार हो जा जब तू मृत्यु से पार हो जायेगा

तो मानो देखो मेरा जीवन सफलता को प्राप्त होगा।

तो मेरे पुत्रों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है धुरवाम विष्णु ब्रह्मा धुरवाम देवम ब्रह्मा मेरे प्यारे देखो, इसी प्रकार यज्ञोमयी धुरवा है यज्ञोमयी धुरवा विष्णु है मानों देखो जब हूत करने वाला जब हूत करता है तो वह सुगन्ध देता है तो पृथ्वी की आभा में मानो उसकी तलहटी में वो सुगन्ध रूप में ही मुनिवरो देखो वर्जित होने लगती है। तो विचार आता है कि विष्णु नाम पालन करने वाले का जो पालना करने वाला वही विष्णु है। तो आओ मुनिवरो देखो, परमपिता-परमात्मा का नाम विष्णु है जो धुरवा में रत्त रहने वाला है। मेरे प्यारे देखो! वह परमात्मा हमारा सतोगुण में रत्त रहने वाला है और वह सतोगुण में पालन करने वाला है तो उसका नाम विष्णु है। हे विष्णु! तू अमृत है, तू मानों देखो, अमृता कहलाता है और तू ध्रुवा में रमण करने वाला जिससे मानों तू पालना कर रहा है। तो यहाँ बेटा देखो, परमात्मा का नाम विष्णु है और जहाँ परमात्मा का नाम विष्णु है वही माता का नाम भी विष्णु कहा जाता है। माता जब पालन कर रही है, तो मानों अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती कहती है विष्णाम ब्रह्मा ध्रुवा हे बालक! मैं ध्रुवाम ब्रह्मे हे ब्रह्मचारी! मैं तेरा पालन करने के लिए तत्पर हूँ क्योंकि मैं धुरवा हूँ, मैं ध्रुवा बन गई हूँ। तो मेरे प्यारे देखो, माता लोरियो का पान कराती रहती है और उस समय वह बाल्य को शिक्षा देती रहती है तो वह माता मानो देखो, ध्रुवा में रत्त रह करके, वह विष्णु बन करके मुनिवरो देखो कल्याण-कारक है। मेरे प्यारे देखो, वहीं माता संतोगुण में पालना कर रही है, वही माता रजोगुण में अनुशासन कर रही है और वहीं माता तमोगुण में बेटा पालना मानो देखो, वही उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहती है। हमारे यहाँ आचार्यों ने प्रकृति के समूल में मानों तीन प्रकार के गुणों का व्यवधान किया है। सबसे प्रथम सतोगुण कहलाता है उसके पश्चात रजोगुण और तमोगुण में मानो देखो, अमृत है। रजोगुण में मेरे प्यारे देखो, वह अनुशासन है जब राजा अपनी राजस्थली पर विद्यमान होता है तो वह अनुशासन करता है और अनुशासन ऐसा करता है कि वह अनुशासन में रत्त हो करके वह अपने में मानो देखो, अपने को ही जानने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार माता जब बाल्य पर अनुशासन करती है, अनुशासित होती है तो ब्रह्मचारी, मुनिवरो देखो, अपनी मम ब्रह्मा वह उसकी पालना में रत्त हो जाता है और ब्रह्मचारी क्योंकि रजोगुण में अनुशासन है। यदि माता अपने ब्रह्मचारी बाल्य को अनुशासन की शिक्षा नहीं देती तो माता मानों देखो, वह अपने में, अपने कार्यों में अधूरेपन में रत्त रहने वाली है। मेरे पुत्रों! देखो, वही माता रजोगुण में जैसे राजा अपने राष्ट्र का पालन करने वाला है और राजा जब अपने राष्ट्र का पालन करता है तो मानों देखो, वह अनुशासित हो जाता है, स्वयं अनुशासित होता है और प्रजा को, अपने को अनुशासन में लाता है जैसे माता अपने पुत्र को अनुशासन में लाने वाली है। इसी प्रकार उत्पत्ति के मूल में मेरे प्यारे देखो, माता के गर्भ-स्थल में शिशु विद्यमान है और माता उसे शिक्षा देती रहती है, प्राणों की पुठ लगाती रहती है मानो इस प्रकार की विद्या माता के द्वारा होनी चाहिए। जिस विद्या को पान करने वाला अपने में महानता को प्राप्त होता है।

माता का कर्त्तव्य

मेरे पुत्रों! जब मैं देखो, द्वापर के काल में प्रवेश करता हूँ तो उस समय मुझे मानों देखो माताओं का कर्त्तव्य स्मरण आने लगता है। मैं आज प्रत्येक अमृतों में नहीं जाना चाहता हूँ। माता कुन्ती के जीवन में यह प्रायः उनके जीवन में देखो, यह विद्याएँ रही हैं। जिस विद्या को धारण करने के पश्चात् महर्षि दुर्वासा मुनि मन्त्रों के द्रष्टा कहलाते थे। मुझे बेटा! महर्षि दुर्वासा मुनि का जीवन जब स्मरण आने लगता है तो मानो देखो हृदय भी गद-गद हो जाता है। क्या वह मन्त्र द्रष्टा कहलाते थे और मन्त्र द्रष्टा वह होता है जो देखो, वह एक वेद-मन्त्र में जो विद्याएँ हैं जो उसके गर्भ में निहित रहती हैं उन विद्याओं को जो धारण करने वाला उन विद्याओं को

जानने वाले को मानो देखो मन्त्र द्रष्टा कहा जाता है, तो वह उस मन्त्र के द्रष्टा। जब मुनिवरों देखो माता कुन्ती के हृदय में यह विचार आया कि मैं अपने गर्भ से एक धर्मराज की आभा में मानों उसकी उपासना करना चाहती हूँ और मैं धर्मराज को जन्म देना चाहती हूँ तो माता के गर्भ-स्थल में जब शिशु विद्यमान हो गया तो माता बेटा दुर्वासा ऋषि के द्वार पर पहुँची और दुर्वासा से कहा हे प्रभु! मैं अपने गर्भ से धर्मात्मा, एक शिशु को जन्म देना चाहती हूँ। मेरे प्यारे देखो, महात्मा दुर्वासा मुनि ने एक वेद-मंत्र का उदगीत गाया और वेद मन्त्र को कहा धर्म प्रभाः धर्मं ब्रह्मे धारणाम् ब्रह्म श्रुतं देवत्वं ब्रह्मे। हे देवी देखो धारणा में रत्त रहना मानो उसी को धर्म कहा जाता है और धर्म को जानना ही मानो देखो उस विद्या का तुम्हे अध्ययन करना है। मेरी प्यारी माता ने कहा मैं प्रिय ऐसा ही कर पाऊंगी। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है कि माता कुन्ती सदैव देखो, दुर्वासा मुनि के मार्ग को दिये हुए वेद-मन्त्र का उच्चारण करने लगी और वह अपने प्राणों को जानने लगीं। मानो देखो प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करतीं। बेटा! देखो माता इस प्रकार का वेदों का मन, वचन, कर्म को ले करके वह इस प्रकार का अध्ययन किया गया तो बेटा देखो माता के गर्भ-स्थल से धर्मराज का जन्म हुआ। मानो जो धर्म को धारण करने वाला हो और धर्म उसे कहते है जिसकी प्रत्येक इन्द्रियां मानो देखो धर्म में पिरोई होनी चाहिए। धर्मम ब्रह्मा देखो आचार्यों ने कहा कि धर्म कहते हैं जो धारयामि, जो धारण किया जाता हो परन्तु धारयामि ब्रह्मे और भी ऊर्ध्वा गम्भीर एक मुद्रा में जब मनुष्य प्रवेश कर जाता है जब साधक बन जाता है प्रत्येक इन्द्रियों को मुनिवरो देखो वह धारयामि बनाता है। प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है उन विषयों को विचारना और विचार करके मानो उसके अनुसार अपने जीवन को बनाने का नाम धर्म है। जैसा बेटा देखो जब महर्षि पिप्पलाद मुनि के द्वारा जिज्ञासु जाते हैं तो वह कहते हैं कि अमृतम क्या हम ब्रह्म को जानना चाहते हैं तो आचार्य ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम गऊओं की सेवा करो एक वर्ष तक। तो मानों देखो, जहाँ प्रसंग यह आता है कि धर्मम ब्रह्मा ईश्वरम ब्रहे जहां ईश्वर को जानने की उत्सुकता आती है, जहाँ ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रसंग आता है वहाँ इन्द्रियों का, इन्द्रियों को पशु कहा जाता है, गो कहा जाता है। तो गऊ के अमृत मानो देखो, उसको धारयामि बना करके ब्रह्मचारियों ने ब्रह्म जिज्ञासुओं ने बेटा शान्त एक वर्ष तक गऊओं की सेवा की। गऊओं का अभिप्रायः यह है कि प्रत्येक इन्द्री का नाम गऊ है। गौ कहते हैं जो धारयामि मानो जो पशु के तुल्य है मानो जो गति करने वाली मन के अनुसार गति करती है और जहां मन और इन्द्रियों को जब एकाग्र किया जाता है तो मानो देखो वह मानव अपनी इन्द्रियों को संयम में ला करके उसका नाम धर्म है। प्रत्येक इन्द्री को जानने का नाम ही धर्म कहा जाता है। तो यह बेटा, यह देखो अमृतम माता कुन्ती अपने में इस प्रकार के धर्म को जानने लगी तो बेटा उनके गर्भ से धर्म-राज का जन्म हुआ। इसी प्रकार उन्होंने बेटा कहीं महाराजा इन्द्र से इन्द्र वाची मन्त्रों को लिया, कहीं अश्विनी कुमार वाची मन्त्रों को लिया, कहीं वायु मानो देखो, पवन वाची मन्त्रों को लिया और इसी प्रकार उन्होंने मानो देखो अपनी सन्तान को जन्म देने का प्रयास किया।

तो मेरे प्यारे देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह क्या मानो देखो, यह तीन गुण कहलाते हैं। सबसे प्रथम सतोगुण है जिसमें विष्णु रहता है रजोगुण में मानो देखो, अनुशासन रहता है, अनुशासन में जब माता अपने पुत्र को ला देती है तो वह अनुशासित हो जाती है। हे माता तुझे वेद ने मानो देखो, शिव के रूप में वर्णन किया है तुझे मानो देखो, वह रजोगुण में अप्रत किया है और तमोगुण के गर्भ में बेटा देखो उत्पत्ति का मूल हैं इसमें भी सतोगुण, रजोगुण विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे देखो, यह तीन मनके हैं और तीनों मनके एक दूसरे के पूरक कहलाए गये हैं मानों देखो, वहीं रजोगुण है, वही सतोगुण है और वही

तमोगुण माना गया है, एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो इस प्रकार वेद का आचार्य कहता है कि अमृतम हे विष्णु तू पालना के मूल में विद्यमान है। हे माता जहां परमात्मा का नाम वाची विष्णु आता है वहीं माता तेरा नाम भी मानों देखो विष्णु के रूप में वर्णन किया गया है। तू वास्तव में विष्णु है पालन करने वाला है।

आत्मा का नाम विष्णु

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब वेद का आचार्य, वेद का मन्त्र इस प्रकार के मन्त्रों का उदगीत गाता है तो वह कहता है क्या विष्णु नाम जहाँ मुनिवरो देखो, माता का नाम विष्णु है, परमात्मा का नाम विष्णु है वहाँ मुनिवरो देखो आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है। जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है तो यह चेतनामयी बनी हुई है और यह चेतन मानव का शरीर चेतनित रहता है जब यह शरीर से पृथक हो जाता है तो मानव का यह शव मानो देखो, चेतना शून्य हो जाता है। तो चेतना शून्य होने से मानो देखो इसलिए आत्मा का नाम वेद ने कहा आत्माम विष्णु ब्रह्मेण वृतम देवा क्या यह आत्मा विष्णु कहलाता है। मेरे पुत्र महानन्द जी ने एक समय मुझे वर्णन करते हुए कहा था, उन्होंने कहा कि विष्णु तो अक्षय-क्षीर सागर में रहता है और लक्ष्मी चरणों की वन्दना करती रहती है। तो मानों देखो, गन्धर्व अपनी गान-गाने लगता है नारद अपनी वीणा को ले करके मानों देखो अपने में शान्त हो जाता है। तो विचार आता है बेटा यह लोलुक्तियाँ कहलाती हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की लोलुक्तियाँ मानी गई हैं। जहाँ मुनिवरो देखो, वेद-मन्त्र आता है वहां लोलुक्तियाँ आती हैं वहां और भी नाना प्रकार का एक नृत होने लगता है। तो मेरे प्यारे देखो, वेद कहता है विष्णुम ब्रह्मा आत्माम यह आत्मा अक्षय-क्षीर सागर में रहता है आत्मा के कारण ही मानो यह शरीर चेतना बद्ध रहता है। आत्मा इस शरीर से जब निकल जाता है तो चेतना शून्य हो जाता है। कहते हैं जब वेद का मन्त्र कहता है आक्षाम् भूतम विष्णु वर्णनम् देवा क्या यह मानों देखो अक्षय-क्षीर सागर नाम मेरे प्यारे देखो ज्ञान और विवेक के सागर को कहा जाता है। जब यह आत्मा ज्ञान और विवेक में परणित हो जाता है तो उस समय यह अक्षय-क्षीर सागर में चला जाता है। अक्षय क्षीर सागर कहते हैं बेटा ज्ञान और विज्ञान के मार्ग को, ज्ञान और विज्ञान में जब यह आत्मा प्रवेश कर जाता है तो उस समय मुनिवरो देखो, अपनी साम्यावस्था में परणित हो जाता है। तो जब यह आत्मा साम्यावस्था में चला जाता है आत्मा के कारण ही मानो देखो, यह मन अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है और यह मन बेटा देखो, हमारे यहाँ वेद के आचार्यों ने साहित्यकारों ने इस मन को नारद कहा है क्योंकि नारद अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके यह आत्मा के समीप आ जाता है क्योंकि आत्माम भूतम ब्रह्मे व्रता। मेरे प्यारे! देखो, जब यह आत्माम ब्रह्मा ब्रव्हे नारद अपनी चंचलतता को त्याग करके कहता है प्रभु मैं आपकी शरणागत हूँ मानों देखो यह मन अपने विज्ञान में आत्मा के प्रकाश से ही तो प्रकाशित होता है। तो मेरे प्यारे देखो, आत्माम ब्रह्मे और गन्धर्व जो गान-गाने वाला जो बुद्धि है वह भी मुनिवरो देखो बुद्धि चलायमान न रह करके वह भी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे देखो गन्धर्व अपने गान-गाने में असमर्थ हो जाता है नारद अपनी वीणा से असमर्थ हो गया है। इन्द्रियां मुनिवरो देखो, अपने-अपने अव्ययों में परणित हो जाती हैं तो यहां आत्मा का नाम विष्णु है।

योग

मेरे प्यारे! देखो, जब साधक अपने में साधना करने लगता है तो साधना के क्षेत्र में जाता है। मेरे प्यारे देखो, हमारे यहाँ यौगिक प्रक्रियाओं में दो प्रकार के योगों में प्राणी परम्परागतों से जाता रहा है एक मानो देखो ध्यानावस्था के रूप में परणित होता है और दूसरा उसका जो मार्ग है वह मानो देखो अपने हठते योगम् ब्रह्मा ज्ञान के द्वारा मानो देखो किसी वस्तु को अपने अधीन करता है अपने में समन कर लेता है। तो इसी प्रकार

मुनिवरो देखो वह अमृतम हमारे आचार्यों ने बेटा देखो, प्राण, अपान और उदान को जान करके नाग प्राण की पुट लगा करके ही मेरे प्यारे देखो, प्राण और अपान को एकाग्र करते हुए और व्यान को उसमें पुट लगाते हुए सबसे प्रथम वह मानो देखो वह मूलाधार में जाती है और मूलाधार में जहाँ नाना प्रकार के चक्रों का वर्णन आता है। जब मूलाधार में पहुँचे तो उसके ऊपर ले भाग में मानों नाभिचक्र कहलाता है और नाभिचक्र में जब यह आत्माम ब्रह्मे मन के सहित बेटा देखो अपने में विचरने लगती है तो वहाँ मानव को इस पृथ्वी-मण्डल का ज्ञान हो जाता है। मानो उसी प्रकार जब योगेश्वर आगे परणित होता है तो हृदय चक्र में प्रवेश करता है जहाँ यह परमात्मा का जो जगत है यह हृदय है मानो इसमें र्भू, भुवः स्वः यह तीन व्याहृतियाँ लगा करके मुनिवरो देखो यह मानों देखो तीन मण्डलों का स्वामी बन जाता है और यह आत्मा जब मुनिवरो कण्ठ-चक्र में जाता है तो जितना भी शब्द-विज्ञान है चाहे वह अन्तरिक्ष में रमण करने वाला हो किसी भी रूप में हो परन्तु देखो, उसकी प्रतिभा उसे व्यापने लगती है और व्याप करके मुनिवरो देखो, उसमें वह रत्त हो जाता है तो कण्ठ-चक्र में मेरे प्यारे देखो लोकलोकान्तरों का ज्ञान प्रारम्भ हो जाता है और लोको में कौन-कौन सा-लोक कितना विशाल है इसका ज्ञान होने लगता है परन्तु इसी प्रकार जब वह घ्राण चक्र में जाता है तो वायु मण्डल में वायु मण्डल कैसे गति कराता है परमाणुओं को कैसे लोको का भ्रमण कराता रहता है अग्नि की धाराओं को ले करके मेरे पुत्रों देखो वहाँ यह ज्ञान होता है। जब यह त्रिवेणी के स्थान में जाता है तो इंगला, पिंगला सुषुम्ना यह तीन प्रकार की नाडियां कहलाती हैं जो रीढ़ के साथ में रमण करती हुई मानों देखो हृदय चक्र को गमन करती हुई जब मुनिवरो देखो, यह त्रिवेणी में प्रवेश करती हैं एक स्थान से देखो, इंगला चलती है एक स्थान से पिंगला चलती है और सुषुम्ना इनके मध्य में विद्यमान हो करके बेटा देखो योगी जब त्रिवेणी का स्नान करता है और जब त्रिवेणी का स्नान करता है तो वहां मेरे प्यारे देखो, गंगा, यमुना, सरस्वती इन तीनों का ज्ञान होता है। गंगा, यमुना और सरस्वती मानां सरस्वती कहते हैं विद्याम भूतम मानो जिसके मंडल में जो-जो विद्या विद्यमान है उसका ज्ञान होना और लोकलोकान्तरों में रमण करना मानो देखो यह त्रिवेणी के ऊपरले स्थान में त्रिकुटी मानों त्रिवंट कहलाता है जिसको मुनिवरो देखो हम त्रिजटा कहते हैं, तिवर्णा कहते हैं, मानो देखो वहां तीन प्रकार की चित्त स्थितियाँ होती हैं। जब इनकी स्वर ध्वनि आनी प्रारम्भ होती है तो मेरे प्यारे अन्तरिक्ष में रमण करने लगते हैं। जब अन्तरिक्ष में प्रवेश हो जाते हैं तो अन्तरिक्ष में कैसे-कैसे लोक-लोकान्तर गमन करते हैं तो मानो देखो वहाँ यह प्रवेश करता है। यह ब्रह्मरन्ध्र में जा करके बेटा सर्वत्र ब्रह्माण्ड का जो लोक-लोकान्तरों का एक मण्डल बना हुआ है नाना प्रकार से मानव देखो उसको जानने लगता है। भली-भांति बेटा देखो वह त्रिवेणाम ब्रहा वही तो ब्रह्मरन्ध्र कहलाता है जहां ब्रह्मरन्ध्र में बेटा देखो, यह ब्रह्माण्ड एक दूसरे की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। तो आओ बेटा मैं तुम्हें यौगिक क्षेत्र में नहीं ले जाना चाहता हूँ केवल यह कि यह हमारे यहां हटयोग प्रतीक मानी मानो इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान का वर्णन है। महर्षि पतञ्जलि जी ने भी किया है इसी विज्ञान को देखो आदि ब्रह्मा ने भी इस प्रकार वर्णन किया है परन्तु देखो उसको और भी नाना ऋषियों ने इसके ऊपर अन्वेषण किया है। आज मैं इसके ऊपर विशेष विचार देना नहीं चाहता हूँ। यह तो व्याख्या की प्रतिभा है मैं तो केवल तुम्हे परिचय कराने के लिए आया हूँ। विचार विनिमय यह मुनिवरो देखो, आत्मा का नाम विष्णु है आत्मा प्राणो के साथ में मानों देखो गमन करता है एक दूसरे में धुक धुकी दे करके विज्ञानवेत्ता मृत्यु से पार होने का प्रयास करता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। केवल यह क्या मुनिवरो देखो वेद का ऋषि कहता है विष्णुम ब्रह्मा आत्माम भूतम ब्रह्मे लोकामा हे आत्मा तू विष्णु है, हे आत्मा तू मानो देखो विष्णु

उस समय कहलाता है जब तू मानो देखो यौगिक प्रतिक्रियाओं में प्रत्येक चक्र के विज्ञानवेत्ता और विज्ञान में तू रत्त हो जाएगा। मानो उन क्रियाकलापो को तू साक्षात्कार दृष्टिपात करेगा तो तेरा नाम विष्णु है क्योंकि विष्णु वेद के प्रकाश को जानने वाला है। वेद के मर्म को जानने वाले का नाम ही विष्णु कहा जाता है। मेरे पुत्रो देखो, मुझे नाना वार्ताए स्मरण आती रहती हैं आज का विचार विनिमय केवल विशेष नहीं विचार केवल यह कि मुनिवरो देखो, आत्मा का नाम विष्णु है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे आत्मा जब तक तू शरीर में विद्यमान है मानो हे विष्णु उस समय मानव चेतनित रहता है उस समय माता रहती है, पिता रहता है और पुत्र रहता है परन्तु पुत्रियाँ रहती हैं, आचार्यजन रहते हैं यह संसार मानो एक प्रतिभा में दृष्टिपात आने लगता है और जब यह आत्मा निकल जाता है तो बेटा नेत्र अपने प्रकाश से वंचित हो जाता है मानो देखो, घ्राण अपनी सुगन्ध से वंचित हो जाता है और मुनिवरो देखो, हस्त अपने क्रिया कलापों से वंचित है और वाणी मुनिवरो देखो, वाक-शक्ति से वंचित हो जाता है। इसी प्रकार घ्राण देखो सुगन्धम ब्रह्मा व्रतम मानो देखो, रसना अपने आहार से वंचित हो जाता है। तो विचार आता है बेटा आत्मा ही प्रकाश का मूल है। आत्मा को जानना ही विष्णु बनना है और विष्णु बन करके मुनिवरो देखो अपने आत्म कल्याण को प्राप्त करना है। आज मैं बेटा तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया क्योंकि वेद का मन्त्र कुछ इस प्रकार की वार्ताएं प्रगट कर रहा है। तो मेरे प्यारे देखो यहाँ आत्मा का नाम विष्णु है परमात्माम भूत्रम वणाम् मानो देखो वहीं तो संसार का नेतृत्व करने वाला है। तो आओ मेरे प्यारे जहां विष्णु नाम परमात्मा का है वहाँ विष्णु नाम माता का है जहाँ माता का नाम विष्णु है बेटा वहीं मानो देखो यहां आत्माम भूतम आत्मा का नाम विष्णु है और जहां आत्मा का नाम विष्णु है वहां सूर्य का नाम भी विष्णु कहा जाता है। विष्णु प्रातः काल में उदय होता है और प्रकाश को ले करके आता है वह मानो देखो, नाना प्रकार की भग रूपी किरणों से प्रकाश में मानव को रत्त कर लेता है माता अपने पुत्रों को जागरूक कर लेती है। हे बाल्य! जागरूक हो जाओ यह सूर्य उदय हो गया है, विष्णु आ गया है प्रकाश ले करके, नेत्रों का देवता बन करके आता है। मानो विज्ञान का समूह बन करके आता है नाना प्रकार की वनस्पतियों के जनजीवन को ले करके आ रहा है। तो मेरे प्यारे देखो, वह प्रकाश जो ओजस्व है जो नाना प्रकार की ऊर्जा को देने वाला है वह ओजस बनाने वाला है। तो विचार आता है बेटा वह पालना करता है कहीं मानो देखो, नाना प्रकार की किरणों के द्वारा कहीं ऊषा नाम की किरण के द्वारा पालना करता है कहीं कान्ति नाम की किरण के द्वारा पालना करता है, कहीं मानो देखो, वह आवहनीय नाम की अग्नि की ऊर्जा दे करके मानव को अपने में प्रवेश कराता है। तो विचार आता है कहीं वनस्पतियों को जन जीवन देता है। ये वनस्पति जब परिपक्व होती हैं तो मानव का आहार बन जाती हैं। तो विचार आता है बेटा देखो विष्णु नाम सूर्य का है। आचार्यों ने उसे अदिति कहा है और वह अदिति के रूप में विद्यमान रहता है। हे मानव तू मानों देखो, विष्णु की उपासना कर उपासना करने वाला ही उपास्य कहलाता है। वहीं तो विष्णु रूप में रत्त रहने वाला यज्ञोमयी-विष्णु यजमान अपनी यज्ञशाला में याग करता है, कहता है हे यज्ञस्वरूप तू विष्णु है तू पालना करने वाला है जैसे मानों माता ने मेरी देखो विष्णु बन करके मेरी पालना की है परमात्मा जिस प्रकार मेरी पालना कर रहा है नाना प्रकार की ऊर्ज्वा दे करके, नाना प्रकार की प्रतिभा दे करके मुझे प्रतिभाशाली बना रहा है इसी प्रकार अमृतम ब्रह्मा तू अमृत के देने वाला है आ तू मुझे मानो प्रकाश में ले चल। मेरे प्यारे देखो आत्माम भूतम ब्रह्मा वस्तुतम यज्ञम ब्रह्मा देखो, यज्ञ, जितना भी संसार का सुक्रियाकलाप है आत्मा से जिस क्रिया का सम्बन्ध रहता है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है और वहीं याग है जितना भी सुक्रियाकलाप है कर्तव्यवाद में रत्त करने वाला वहीं तो मानो अमृता कहलाता है वहीं विष्णु है और वहीं याग कहलाता है। जितने भी संसार

के सुकर्म हैं आत्मा से सम्बन्धित हैं चाहे वह योग की प्रतिक्रिया में हों चाहे वह मानो सुगन्ध की प्रतिक्रिया में हों चाहे वेद-मन्त्रों के उच्चारण करने में स्वाह की ध्वनि आ रही हो यह सर्वत्र मुनिवरो एक कर्तव्यवाद में निहित रहा है और उन सर्वत्र का नाम विष्णु कहा जाता है।

अक्षय क्षीर-सागर

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ केवल यह आत्माम विष्णु देखो, हम विष्णु की उपासना करें और विष्णु को जानने का प्रयास करें बेटा जो अक्ष्य क्षीर सागर में वास करने वाला है। अक्षय क्षीर-सागर नाम ज्ञान को कहा जाता है और ज्ञान के सागर में आत्मा विद्यमान रहता है। जो आत्मा आत्मवेत्ता बन करके बेटा विवेक के सागर में प्रवेश करता है बेटा! वहाँ लक्ष्मी उसके चरणो की वंदना करती है गन्धर्व गान-गाने लगता है और नारद अपनी चंचलता को त्याग करके उसके चरणों में बद्ध हो जाता है। विचार आता रहता है वह विष्णु है जो अक्षय क्षीर-सागर में रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करें।

सत्यकाम की तपस्या

बेटा! मैं आज उच्चारण कर रहा था वेद-मन्त्र आ रहा था षोडश-कलाओं के सम्बन्ध में। षोडशचम् ब्रह्मा देखो व्रते मानो देखो, षोडश-कलाओं को जानना चाहिए। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब सत्यकाम अपनी माता से कहता है हे माता! मै तपस्या करने जा रहा हूँ मुझे आज्ञा दीजिए। माता देखो, माता ने कहा, माता जाबाला ने कहा हे पुत्रो! ब्रह्मणे वर्णस्सुतम् मानो तुम इस विद्या को पा नहीं सकोगे। सत्यकाम ने कहा माता क्यों नहीं पा सकूंगा? क्योंकि आचार्य तुमसे तुम्हारा परिचय लेंगे तुम्हारा कोई परिचय नहीं है। उस समय कहा मैं प्रभु का पुत्र हूँ, मैं, प्रभु ने मेरा निर्माण किया है आत्माम भूतम आत्मा ज्योति है मैं उसको जानने का प्रयास करूँगा। बेटा देखो सत्यकाम माता की आज्ञा पा करके महर्षि गौतम के द्वार पर जाते हैं और महर्षि गौतम ने कहा आईये ब्रह्मचारी। बेटा ब्रह्मचारी से प्रश्न किया सांयकाल को ब्रह्मचारी तुम्हारा गोत्र क्या है? उसने कहा मैं नहीं जानता मेरा गोत्र क्या है। उन्होंने कहा गोत्राम ब्रह्मा आत्माम भूतम। मेरा ब्रह्मात्मा ही मेरा गोत्र है मानो देखो, माता ने कहा कि मैं तुम्हारे गोत्र को नहीं जानती। मेरे पुत्रों देखो गौतम ने कहा ब्रह्मचारी तुम ब्राह्मण हो क्योंकि ब्राह्मण ही सत्यवादी कहलाता है जो ब्रह्म-विद्या को जानने वाला है। मेरे प्यारे देखो उन्होंने सत्य कह करके शान्त हो गये। रात्रि का समय हो गया ब्रह्मर्षि देखो अपने में चिन्तन करने लगा तुमने ब्रह्मचारी को देखो ब्राह्मण कहा, यह है या नहीं इसकी तुमने कोई परीक्षा नहीं ली परन्तु उसके एक शब्द उच्चारण करने पे तुमने ब्राह्मण की उपाधि प्रदान की है। मेरे प्यारे देखो! वह गौतम अपने में चिन्तन करने लगा। चिन्तन करते-करते रात्रि समाप्त हो गई। प्रातः काल होते ही सत्यकाम उनके द्वार पर। सत्यकाम ने चरणों की वदना की और चरणों की वन्दना करके कहा प्रभु! मुझे तो आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा हे ब्रह्म वर्णे आ व्रतम देवतत्वाम जाओ तुम यह चार सौ गऊए इन्हें ले जाओ और जब तक एक सहस्त्र गऊ नहीं हो जाएगी तब तक आश्राम में तुम्हें प्रवेश नहीं करना है। मेरे प्यारे देखो, सत्यकाम बड़े प्रसन्न हुए और सत्यकाम ने चार सौ गऊओं को ले करके आश्रम से गमन करता है। उसी के दुग्ध का आहार करना है उसी के दुग्ध से धृत और देखो उसमें, दुग्ध में याग करना है, देवताओं का आवाहन करना है। वह करते रहे। तो बेटा! इस प्रकार सत्यकाम अपने में विचरण करने लगे। तो विचार आता रहता है बेटा देखो ब्रह्मविद्या उसी को प्राप्त होती है जो जिज्ञासु होता है जो यथार्थ को ही दृष्टिपात करता है जो सत्य उच्चारण करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो वह अपने में विचार-विनिमय करता

रहता। आज मैनें तुम्हें बहुत सी विद्याओं का वर्णन किया परन्तु संक्षिप्त में मैंने तुम्हें परिचय दिया है। विचार-विनिमय क्या मुनिवरो देखो विष्णु नाम परमात्मा का है, विष्णु नाम आत्मा का है, विष्णु नाम माता का है, विष्णु नाम सूर्य का है और विष्णु नाम मेरे प्यारे देखो यहां यज्ञोमयी-विष्णु। जहाँ भी पालना का प्रसंग आयेगा उसी का नाम वाची-विष्णु कहलाता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं षोडश-कलाओं की चर्चाए तो कल प्रगट करूंगा।

आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुण-गान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह, क्या मुनिवरो देखो, हम अपने में अपनेपन को जानते हुए विष्णु बनें आत्माम भूतम, यह आत्मा ही विष्णु का वाची कहलाता है। यह है बेटा आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा को जानते हुए अपने में देवत्व को प्राप्त करते रहें। यह है बेटा आज का वाक्। अब समय मिलेगा, तो कल मैं बेटा सत्यकाम की चर्चाए कल प्रगट करूंगा क्या उनका जीवन कितना यथार्थी और कितना तपों में रहा है। यह है बेटा आज का वाक्। अब समय मिलेगा शेष चर्चाए हम कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् मनुदधिः वाचाः। ओ३म् यशश्चाम् प्राची रथं दिव्याः आपाः। ओ३म् यशश्च मां मां देवं ग्राह गायाः। अच्छा भगवन्। आज्ञा। दिनाँक : 9-जून-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : चौ. लहरी सिंह कसेरवा खुर्द मुजफ्फरनगर।

६ षोडश-कला 10-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुण-गान गया जाता है जो सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है।

मैं तुम्हें सत्यकाम की चर्चा कर रहा था। उनमें से, गऊगों में से एक वृख कहता है, एक बैल कहता है हे ब्रह्मचारी सत्यकाम! हम मानों देखो एक सह० हो गये हैं और हमें गुरू के आश्रम को अब गमन करना चाहिए। मेरे प्यारे देखो सत्यकाम ने कहा बहुत प्रियतम परन्तु सत्यकाम ने कहा कि मैं यहां से जब अब गऊओं को, तुम्हें यहां से अवृत करूंगा जब मुझे कुछ ज्ञान हो जाए, क्या यह मैं किस प्रकार करूँ? तो उस समय वृख ने कहाँ हे सत्यकाम मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ क्योंकि परमपिता-परमात्मा की यह षोडश-कला कहलाती हैं और षोडश-कलाओं में चार कलाओं का ज्ञान मैं करा देता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने कहाँ हे सत्यकाम सबसे प्रथम मानों देखो प्राचीदिग् और द्वितीय कला का नाम दक्षिणीदिग् और तृतीय कला का नाम मानों प्रतीचीदिग् कहलाता है और चतुर्थ कला का नाम उदीची कहलाता है और मुनिवरो देखो मंगलम ब्रह्मे यह चार कलाओं का ज्ञान मैं तुम्हें करा देता हूँ। जब तुम मानों देखो परमपिता-परमात्मा को जानने का तुम्हारा मन-मस्तिष्क एकाग्र हो जाए तो परमात्मा मानों देखो प्राचीदिग् में तुम तेज को स्वीकार करो और दक्षिणीदिग् में वह परमपिता-परमात्मा हमारा इन्द्र बन करके रहता है और जब तुम देखो प्रतीचीदिग् में जाओगे तो वरूण बन करके रहता है और उदीची में मानों सोम बन करके रहता है। तो ये परमात्मा के गोमिक नामों में नाना प्रकार का मानों ज्ञान-विज्ञान इसमें विद्यमान रहता है। हे ब्रह्मचारी यह चतुष कला कहलाती है।

प्राचीदिग्

मानो सबसे प्रथम प्राची है। प्राची में अग्नि अपना प्रकाश देती है। सूर्य उदय होता है और वह प्रकाश को ले करके मानों देखो अन्धकार को नष्ट करता चला जाता है। तो मानव के जीवन में अंधकार नहीं होना चाहिए।

दक्षिणीदिग्

जब वह मानों दक्षिणायन में प्रवेश करता है तो वहाँ मानों देखो इन्द्र हमारे यहां परमपिता-परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र के यू तो वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गये हैं परन्तु यहां इन्द्र नाम बेटा देखो दक्षिणायन में इन्द्र कहते हैं सोम, इन्द्र कहते हैं जो विद्युत की धाराएं है वह विद्युत की धाराएं मेरे प्यारे देखो अपृतों में वह हिमालय अमृतियों से देखो अपने में मिलान करती हैं। उससे मानों देखो नाना प्रकार का सुखद और वृष्टि का प्रारम्भ होता है मानों उसी को इन्द्र कहते हैं। इन्द्र विद्युत का स्वामी है, विद्युती कहलाता है। तो मेरे प्यारे देखो अमृतम देखो वर्णस्सुतम वह इन्द्र हमारा देवता। हमारे यहां इन्द्र के वैदिक-साहित्य में नाना पर्यायवाची शब्द माने गये हैं। इन्द्र नाम जहां परमपिता जहां मानों देखो यह दक्षिणायन का नाम इन्द्र है वहां इन्द्र नाम परमपिता का है। इन्द्र कहते हैं जो मानों इस संसार का स्वामीत्व है, इन्द्र कहते है जो मानों प्रकृति का नेतृत्व करने वाला है उस परमपिता-परमात्मा का नाम इन्द्र है। इन्द्र नाम राजा को भी कहते हैं जो राजा जितेन्द्रीय होता है और जितेन्द्रीय बन करके मानों देखो राष्ट्र को ऊंचा बनाता है और अपनी मानों ब्रह्म ब्रहे, वह इन्द्र उपाधियों को प्राप्त करता रहता है। मानों देखो हमारे यहां राजा का नाम भी इन्द्र है। तुमने यह श्रवण किया होगा कि देखो सतोयुग और त्रेता के मानों काल की यह बहुत सी वार्ताए हैं, इन्द्र नाम

राजा का है जो इन्द्र उपाधियों में निहित रहने वाला है। एक मानव जब तपस्वी बनता है एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है वह मानव इन्द्र की उपाधि को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे एक सौ एक अश्वमेध याग उसे कहते हैं कि जिसका संसार में कोई शत्रु न रहे और वह इन्द्र बन करके बेटा जब वह याग करता है तो याज्ञिक मानों एक सौ एक याग करने की इस प्रकार वह इन्द्र की उपाधियों को प्राप्त होता रहा है। आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने उसे इन्द्र की उपाधियों से बेटा अलंकृत किया है वह इन्द्र कहलाता है। तो हमारे यहां इन्द्र नाम परमपिता-परमात्मा का है जो प्रकृति का नेतृत्व करने वाला है और इन्द्र बेटा नाम आत्मा का जो शरीर में वास करने वाला इन्द्र है। इन्द्र उसे कहते हैं जो जितेन्द्रीय रहता है, मानों प्रत्येक इन्द्रियों के विषयो को जानने वाले को इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र नाम राजा का है जो एक सो एक अश्वमेध-याग करता हुआ और वह इन्द्र की उपाधियों से अलंकृत किया जाता है उसे इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र नाम बेटा! जो अपने में स्वामित्व की आभा में रत्त रहने वाला है। तो विचार आता रहता है हे इन्द्र! तू हमारा कल्याण-कारक है। तो जो इन्द्रो भव प्रमाणाम ब्रह्मे वृतम वेद की आख्यायिका कहती है कि इन्द्र ही हमारा जीवन है और इन्द्र के द्वारा ही अपने जीवन को ऊंचा बना सकते हैं। तो मेरे प्यारे देखो दक्षिण में इन्द्र रहता है वह इन्द्रो समम ब्रह्मा देखो वही इन्द्र मानों विद्युत के रूप में रहता है। यहाँ राजा को इन्द्र कहते हैं वहां इन्द्र नाम बेटा देखो विद्युत को कहा जाता है।

हमारे एक अलंकार वैदिक-साहित्य में एक अलंकारिक चर्चाए आती हैं। क्या एक समय बेटा इन्द्र अपने स्थान पर विद्यमान हैं। वत्रासुर ने मुनिवरो देखो जब आक्रमण किया तो अ अमृतम उनकी पत्नी शचि ने यह कहा हे इन्द्र मानों देखो इस वत्रासुर का आक्रमण हो गया है अमृतम देखो वत्रासुर का वध किया जाए। तो इन्द्र बेटा अपने प्राण रूपी वज्र को ले करके मानों देखो वत्रासुर का हनन किया उससे धीमी-धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो गई और धीमी वृष्टि प्रारम्भ होकर के मुनिवरो देखो संसार में सुखद हो गया। परिणाम क्या इस अलंकार उच्चारण करने का क्या मुनिवरो देखो इन्द्र नाम यहां मुनिवरो देखो न राजा है, न परमात्मा है, इन्द्र नाम यहां विद्युत को कहा गया है और इन्द्र नाम देखो वायु को भी कहा गया है और शचि नाम मुनिवरो देखो विद्युत के रूप में रहने वाली देखो शचि है जो मुनिवरो देखो वायु अपने स्वामी को आज्ञा देती है। इन्द्र मानों देखो उसे देखो वायु रूपी इन्द्र उसे छिन्न-भिन्न कर देता है वत्रासुर से वृष्टि प्रारम्भ, वत्रासुर हमारे यहां मेघ-मण्डलों को कहा जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा हमारे यहां वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार की विवेचना और चर्चाऐं आती रहती हैं। विचार आता रहता है कि इन्द्रो भवन ब्रह्मा हे इन्द्र तू मानों देखो शचि की आज्ञा का पालन कर विद्युत जब अपने में धर्मंग ब्रहे अस्तुति देवत्वाम जब अपने में धारयामि बनती है तो इन्द्र मुनिवरो देखो उसको अपने में धारण करता हुआ और मुनिवरो देखो वह वत्रासुर का वध करता है प्राण रूपी वज्र को लेकर के इन्द्र मुनिवरो देखो इस वायु को अमृतम और मेघां को नष्ट कर देता है। तो विचार आता रहता है बेटा जब इस प्रकार वेद के ऋषि ने अपनी वार्ता प्रगट की तो उस समय सम्भवा ब्रह्मणे लोकाम वाचस्सुतम देवा।

प्रतीचीदिग्

मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार जब इन्द्र ब्रह्मे और तृतीय कला का नाम हमारे यहां प्रतीचीदिग्ः कहा जाता है। प्रतीचीदिग् में देखो इन्द्र रहता है जो अन्न का स्वामी कहलाता है, वह वरूण कहलाता है। जितना भी वृष्टि का प्रारम्भ होता है वह मानों देखो यह अमृतम ब्रह्मा वह वरूण कहलाता है। हमारे यहां वरूण नाम परमपिता-परमात्मा का है। वेद में मन्त्र आता है वर्णनम् ब्रह्मा वर्णनम् प्रवाह लोकाम हे मानव तेरा वही परमपिता-परमात्मा वरणीय है, तू उस को अपना वरणीय स्वीकार कर और उसे वरने वाला बन क्योंकि जब तू उसे वर लेता है तो वह मुनिवरो देखो वह परमपिता-परमात्मा उसी को प्राप्त हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि इन्द्र नाम

हमारे यहां देखो वह सोम वर्णाम् ब्रह्मा वह उसको वरूण बनाना चाहिए तो वह वरूण कहलाता है। हमारे यहां जल का नाम भी वरूण है वह सोम कहलाता है। जब वैज्ञानिकजन इस संसार में विज्ञान के स्वरूप में प्रवेश करते हैं तो तरलत्व पदार्थ को जान करके ही मुनिवरो देखो, तेजोमयी से मिलान करते है और तेजोमयी और तरलत्व को ले करके गुरूत्व का मिलान करके यह तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके विज्ञान अपने में वैज्ञानिकता को प्राप्त होता है। तो विचार आता रहता है कि वह वरूण कहलाता है वह हमारा वरणीय है। परमपिता-परमात्मा को भी वरूण कहा गया है। तो आओ मेरे प्यारे देखो हम उसे अपना वरणीय स्वीकार करें और वही वरण करने के योग्य है। तो बेटा देखो उसे हम अपना स्वामित्व और उसको वरूण बना करके हम परमपिता-परमात्मा की उपासना करने वाले बनें। तो विचार आता रहता है बेटा वर्णम ब्रह्मा वर्णों देवत्वाम अभयम ब्रह्मे वर्णस्सुतम् हे अमृतम, हे मानव तू उसको अपना वरणीय बना। तो बेटा देखो प्रतीचीदिग् में देखो वरूण रहने वाला है। तो प्रतीचीदिग् की उपासना करें। यह ध्रुवाम भव ब्रह्मे लोकाम।

उदीचीदिक्

मेरे पुत्रो! देखो चतुर्थ में सोम आता है। जब चतुर्थकला का वर्णन आता है तो उसमें सोम आता है। हमारे यहां सोम नाम बेटा ज्ञान को कहा गया है, सोम नाम मुनिवरो देखो अपने में यौगिकवाद को कहा गया है। सोम कहते हैं जो मानों पान करने वाला है। मेरे प्यारे देखो मेरी प्यारी माता के गर्भस्थल में जब शिशु विद्यमान होता है तो माता उस समय देखो कुछ औषधियों का सोम बना करके पान करती है और वह ज्ञान का व्यवधान करती है। मुनिवरो देखो अपने गर्भस्थल में रहने वाले शिशु को वो ज्ञानी बनाती है वह मानों उसी आभा में रमण करती है देखो बाल्य को गर्भ-स्थल में शिक्षा देना प्रारम्भ करती है उस शिक्षा का नाम सोम कहा गया है। औषधियों के रसों को लेकर के जो माताएं जानती हैं मानों वह देखो उसको सोम बना करके पान करती हैं। सोम नाम बेटा जहां औषधियों के रस को कहा गया है सोम नाम बेटा देखो ज्ञान को कहा गया है। जब मेरी प्यारी माता देखो अपने बाल्य को गर्भ-स्थल में कहती है हे बालक! बुद्धोसी, शुद्धोसि, निरंजनसी मानों यह कहती हैं तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है तू मानों देखो अखण्ड रहने वाली ज्योति एक आत्मा है तो मानों देखो अपने में महान है। जब इस प्रकार माता अपने शिशु को आत्मा की आत्मा से वार्ता प्रगट करती है तो बेटा वह बाल्य आत्मवेत्ता बन जाता है। मेरे प्यारे देखो माता मदालसा का जीवन जब मुझे स्मरण आने लगता है तो हृदय गद-गद हो जाता है। माता मदालसा के गर्भ में जब आत्मा का प्रवेश हुआ तो वह तीन शब्दों की विवचेना करती रहती और कहती कि हे आत्मा तू शुद्ध है, हे आत्मा तू निरंजन है किसी काल में तू नष्ट नहीं होती। आत्म ब्रह्मा वर्णस्सुतम आत्माम देह व्रतम तू बुद्धोसी, शुद्धोसी और निरंजनसी तू बुद्धिमान भी है मानों देखो तू अखण्ड रहने वाली अनुपम ज्योति है। इस प्रकार माता जब अपने में उपास्य देव आत्मा की उपासना करती हुई अपने में जानने लगती है तो माता के गर्भ-स्थल में जो शिशु है उन प्रेरणाओं को प्राप्त करता हुआ बेटा अपने में महानता को धारण करने लगता है। तो मेरे प्यारे देखो ध्रुवाम ध्रुवम ब्रह्मा व्रतम अस्सुतम देवा सोमाम् ब्रम्हे हे सोम तू पान करने वाली तू सोम का पान कर।

बेटा! सोम का कौन पान करता है। मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं कागभुषण्ड जी के आश्रम में प्रवेश करता रहा हूँ तो बेटा वह वाक् मुझे स्मरण आते रहते हैं जो उन्होंने एक समय लोमश मुनि से यह कहा कि प्रभु! मैं सोम को पान करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा तुम अनुष्ठान करो। तो बेटा देखो वह प्रातः-कालीन याग करते रहे और याग करके उनमें जो तरंगो का, तरंगे उत्पन्न होती उन पदार्थों में से जो अग्नि में पदार्थ, अग्नि में प्रदान किए जाते हैं वे तरंगे मानों उन तरंगो में जो ज्ञान-विज्ञान विद्यमान था उसको प्रायः वह जानते

रहते। मेरे प्यारे देखो वह अपने में कागभुषरण्ड जी ने देखो बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और वह अनुष्ठान करके मुनिवरो देखो अपनी महानता को प्राप्त हो गये। तो विचार आता रहता है बेटा देखो अपने में कितने विचित्रत्व को प्राप्त होते रहे। तो आओ मेरे प्यारे विचार आता रहता है कागभुषरण्ड जी ने इस प्रकार के मानों देखो पांच अनुष्ठान किए बारह-बारह वर्ष के और अनुष्ठान से ही मुनिवरो वह महान ऋषि कहलाए। विचार आता रहता है अनुष्ठान कहते हैं नियम बद्धता को याग करना और सुगन्ध को देना। मुनिवरो देखो अपने विचारो को वेदा अमृत का पान करते थे वह सोम कहलाता है। ज्ञान में रत्त रहना ही मुनिवरो देखो अनुष्ठान कहलाया गया है। तो उस समय कागभुषरण्ड जी अपने में महान कहलाए।

उत्तरायण

तो विचार आता रहता है बेटा देखो मैं उच्चारण कर रहा था क्या हे अमृतम ब्राह्मणे सोम को प्राप्त करना चाहिए। मेरे प्यारे देखो वह ध्रुवाम विष्णु ब्रह्मा सोमान ब्रह्मे उदीची देखो उदीची सोम ब्रह्मा अमृतम देवा उदीची में सोम रहने वाला है। हम उत्तरायण अपने जीवन को बनाए। बेटा देखो मैनें तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था जिस समय बेटा देखो महाभारत के काल में जब मुनिवरो देखो पितामह भीष्म, जब भीष्म जी मृत्यु की शैय्या पर विद्यमान हो गये तो उन्होंने यह कहा था कि जब तक मैं अपने जीवन को उत्तरायण नहीं बना लूँगा जब तक इस शरीर को नहीं त्यागूगां। मेरे प्यारे देखो पितामह भीष्म अपने में उत्तरायण बन गये। तो मुनिवरो देखो कौन द्रोपताम ब्रह्मा देखो द्रोपदी उसे अन्न का पान कराती रहती। मुझे बेटा स्मरण आता रहता है द्रोपदी अन्न का पान कराती रहती। वह गायत्री छंदो का पठन-पाठन करती हुई अन्न को तपा करके मेरे प्यारे वह स्वयं भीष्म जी को अन्न का ग्रहण कराती और ग्रहण कराते-कराते उनकी पवित्र बुद्धियो को अन्नदान भूतम ब्रह्मा अन्न से मन का निर्माण होता है और मन की तरंगे बेटा देखो वह आत्मा की भूञ्जी कहलाती है। आत्मा में आत्मा से ही वह प्रेरणा आत्मा की आत्मा के प्रकाश में देखो मन अपने क्रियाकलापो में रत्त होता रहता है। तो बेटा देखो उनका मन एकाग्र हो गया और जब मन मुनिवरो देखो छः माह में उनका मानों उत्तरायण जीवन बन गया। उत्तरायण का अभिप्राय बेटा देखो लोक में भी कहा गया है। जब यह सूर्य की दो प्रकार की कलाएं होती हैं एक उत्तरायण होता है एक दक्षिणायन होता है परन्तु मानव का जीवन जहाँ आता है वहां उत्तरायण का अभिप्रायः है कि मानव ज्ञानी और साधक बन जाए। मेरे प्यारे ज्ञान का नाम उत्तरायण कहलाता है। उनका जीवन जब उत्तरायण हो गया तो एक समय वह ब्रह्म की वार्ता प्रगट करने लगे। जब ब्रह्म की चर्चा करने लगे तो महारानी द्रोपदी ने यह कहा हे प्रभु! हे पितामह! आप ब्रह्म की वार्ता आज प्रगट कर रहे हैं परन्तु उस समय तुम्हारा यह मन, तुम्हारा यह ब्रह्म-ज्ञान कहा गया था जब मेरा मानों देखो सतीत्व को हनन करने के लिए तुम्हारे पौत्रों ने मानों अपने क्रियाकलाप को बनाया था तुम वहां विद्यमान थे। तो उस समय भीष्म ने कहा हे देव पुत्री! मानों देखो मेरा अमृतम देखो वह अर्जुन के पीछे की अवृतियों ने देखो वह रक्त मेरा नष्ट कर दिया है जो मानों देखो वह जो मैनें दुर्योधन का पाप का अन्न ग्रहण किया था राष्ट्रीय अन्न और देखो अब तुम्हारे पवित्र अन्न से मेरा मन पवित्र हो गया है इसलिए मुझे ब्रह्म मेरा जीवन उत्तरायण बन गया है। तो मेरे प्यारे देखो हमारे यहां यह कहा गया कि उत्तरायण में सोम रहता है और सोम को पान करने वाला ही ज्ञानी कहलाता है। तो मेरे प्यारे देखो उत्तरायण में गमन करने वाला अपने में महानता को प्राप्त रहता है। जब पितामह भीष्म का जीवन बेटा देखो उत्तरायण में चला गया उस समय उन्होंने देखो वह सब जितना भी कुटुम्ब उनका था वह सब विद्यमान कराए और उन्होंने कहा आज मैं अपने शरीर को त्याग रहा हूँ क्योंकि मेरा जीवन उत्तरायण हो गया है। उत्तरायण का अभिप्राय यह है कि मैं अपने शरीर को स्वेच्छा से त्याग सँकू। तो बेटा देखो वह ज्ञानी बन

करके ही कर सकता है या योगाभ्यासाम भूतम ब्रह्मे अन्न का पवित्र होना ही मुनिवरो मानव के जीवन में एक महानता को जन्म देना है। तो मुनिवरो देखो उन्होंने उत्तरायण जब जीवन बन गया उत्तरायण का अभिप्राय यह है कि उत्तरायण कहते हैं ज्ञान को और दक्षिणायण कहते है अन्धकार को, अज्ञानी को। तो मुनिवरो देखो जब उत्तरायण जीवन बन गया तो उन्होंने गायत्री छन्दो का पठन-पाठन करने के पश्चात अपने शरीर को त्याग दिया। तो विचार आता रहता है बेटा उसे उत्तरायण कहते हैं।

तो मुनिवरो देखो उस समय जाबाला पुत्र सत्यकाम ने देखो वृषभ से कहा धन्य है भगवन् मुझे तुमनें चारो कलाओं का ज्ञान कराया है। चार कलाओं का अभिप्रायः यह है क्या मुनिवरो देखो वह प्राचीदिग् में अग्नि रहता है और मुनिवरो देखो उदय दक्षिणायन में इन्द्र और मुनिवरो देखो वह तत प्रणी कृतम ब्रह्मा और वह मुनिवरो देखो प्रतीचीदिग् में सोम रहने वाला है अमृतम ब्रह्मा देखो वरूण रहता है और उत्तरायण में सोम रहता है। वह सोम ज्ञान को कहते हैं और मुनिवरो देखो प्रति अमृतम सोम कहते हैं अमृत को पान करने वाले को ज्ञानम भूतम ब्रह्मा। तो इस प्रकार बेटा जब ऋषि ने अपना वर्णन किया तो वर्णन करने के पश्चात् वह वृषभ शान्त हो गया और वृषभ ने कहा कि जाओं अग्नि कलाओं का ज्ञान तुम्हे सूर्य देवता कराऐगें।

ध्रुवा कला

तो मेरे प्यारे! देखो अगला जो दिवस आया। प्रातः कालीन जाबाला पुत्र सत्यकाम ने याग किया और याग करके वहां से जब गऊओं को ले करके प्रस्थान किया। तो मेरे प्यारे अगला जो दिवस, अगला जो सायंकाल हुआ, सायंकाल के समय बेटा उन्होंने पुनः याग किया और याग करने के पश्चात उनमें से एक मानों सूर्य देवता प्रगट हुए और यज्ञ के पश्चात् उन्होंने कहा हे जाबाला पुत्र! आओं मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ। उन्होंने बेटा देखो ध्रुवाम अमृतम ऊर्ध्वाम उन्होंने कहा कि देखो चन्द्र कला, सूर्य कला यह चार कला कहलाती हैं। सबसे प्रथम कला का नाम हमारें यहां देखो ध्रुवा कहलाता है। धुरवा कहते हैं जो विष्णु है, पालन करने वाला है धुरवा कहते हैं। जो मुनिवरो देखो धुरव में जो नम्र हो करके गमन करता है वहीं ध्रुवा में रहने वाला है। मेरे प्यारे उन्होंने कहा विष्णु ध्रुवा में रहता है इसलिए उदीचीदिग् सम ब्रह्मा वर्णस्सुते वृथम अब वण देखो वर्ण सप प्रवाह लोकाम हे मानव तू ध्रुवा बन। मानों धुरवा में विष्णु रहता है और वह विष्णु हमारा कल्याण करने वाला वह धुरवा है। जब माता-पिता बनते हैं तो मानों वह ध्रुवा बिना माता पिता नहीं बनते। मेरे प्यारे आचार्य भी ध्रुवा में गमन करने वाला है। विचार आता रहता है ध्रुवा राजा है जो अपनी प्रजा का पालन करके नम्र हो करके पालन किया जाता है तो इसलिए ध्रुवा में रहने वाला मानव विष्णु कहलाता है। अब विष्णु अस्सुतम बन करके अपने जीवन को ऊर्ध्वा में गमन कराते रहें। तो आओ मेरे प्यारे देखो वेदाचार्यो ने इस प्रकार वर्णन करते हुए कहा क्या ध्रुवा में विष्णु है।

मुनिवरो देखो जो ध्रुवा में गमन करता है मुझे स्मरण आता रहता है क्या ध्रुवा कहते हैं जो निरभिमानी होता है। निरभिमानी को ही मुनिवरो देखो ध्रुवा कहते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है साहित्य की चर्चाए हैं जब बेटा देखो एक समय महाराजा विश्वामित्र का और वशिष्ठ मुनि महाराज का दोनो का देखो इन्हीं वाक्यों पर देखो एक विवादग्रस्त उनका एक जीवन बन गया। मेरे प्यारे देखो करोड़ो गायत्रियों का जपन करने के पश्चात् महर्षि विश्वामित्र मेरे प्यारे देखो भयंकर वन में अनुष्ठान करते रहे। एक गऊ को अपने में वशीभूत करने के केवल मात्र से जब वह मुनिवरो देखो केवलम ब्रह्मा जब वह करोड़ो गायत्रियों का जाप करने के पश्चात जब पुनः बेटा देखो अपने अस्त्रां-शस्त्रां से युक्त हो करके वह महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर आये और वशिष्ठ मुनि महाराज को यह उस समय एक निहित था जब तक वह किसी को ब्रह्मवेत्ता उपाधि नहीं प्रदान करते थे

तब तक मानों देखो वह ब्रह्मा वह ब्रह्म उपाधि को प्राप्त नहीं होता था, उसको ब्रह्मर्षि नहीं कहा जाता। तो मुनिवरो देखो, जब महाराजा विश्वामित्र जब अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके और वशिष्ठ मुनि के आश्रम में पहुंचे तो उन्होंने कहा आईये राजर्षि जी। अब राजर्षि जी उच्चारण करते उसके मनों में एक अग्नि प्रदीप्त हो गई और यह कहा हे ब्रह्माण! तू अभिमानी है। उन्होंने क्रोध में आ करके उनके एक ब्रह्मचारी को मानों देखो मृत्यु दण्ड दे दिया। मृत्यु दण्ड दे करके चले आये। तो ऐसा कहा जाता है क्या विश्वामित्र के सात-जन्मो का पुण्य मानों देखो उसी समय नष्ट हो गया। मेरे प्यारे देखो मुझे स्मरण है पुनः वह तपस्या के लिए चले गये और जब तपस्या के लिए चले गये तो पुनः गायत्री छन्दो में पुनः से मानों उसमें रमण करने लगे। ऐसा मानों देखो बारह वर्ष का और बारह क्या बारह अमृतम मानों चौबीस वर्षों का उन्होंने पुनः तप किया। तप कहते हैं इन्द्रियो को संयम में करना और तप कहा जाता है तपम ब्रह्मा परमात्मा को एक-एक कण-कण में स्वीकार करना और इन्द्रियों में मानों इन्द्रियों को मृत्यु से पार करने का नाम तप कहा जाता है। तो मेरे प्यारे देखो महात्मा विश्वामित्र ने जब इस प्रकार का तप किया तो उन्हें होने लगा हे विश्वामित्र तुम्हारा तप पूर्ण हो गया तुम तपस्वयं ब्रह्मा। मेरे प्यारे देखो वहां से वह गमन करते हैं और अपनी राष्ट्रीय वृतियों में आये तो मानों उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके पुनः जब वशिष्ठ आश्रम में पहुँचे तो बेटा देखो उन्होंने कहा आईये राजर्षि जी। राजर्षि जी उच्चारण करते पुनः अग्नि प्रदीप्त हो गई क्रोधाग्नि जागरूक हो गई। उन्होंने कहा इस ब्राह्मण को मृत्यु दण्ड दूँगा यह मानों देखो यह अभिमानी है। तो उस समय उनकी शान्त वाटिका में विद्यमान हो गये और विद्यमान होने के पश्चात् मेरे प्यारे देखो वह शान्त हो गये। चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त थे। चन्द्रमा मानों अपनी पूर्ण कलाओ से युक्त होते हुए उन्होंने अमृतम माता अरूणधति बोली कि हे प्रभु! यह चन्द्रमा अपनी कैसी सम्पूर्ण कलाओं से मानों देखो सुशोभित हो रहे हैं, कैसी कलाए हैं षोडश-कलाओ से युक्त हैं। उन्होंने कहा हे देवी! यह जो चन्द्रमा का जो प्रकाश है यह कोई प्रकाश नहीं है जितना प्रकाश महर्षि विश्वामित्र का है। उन्होंने कहा हे प्रभु! आप भी बड़े विचित्र हैं। आपके एक ब्रह्मचारी को मृत्यु दण्ड दे दिया और आप देखो आपको अशुद्ध वार्ता प्रगट करते रहते हैं उसके पश्चात भी आप प्रशंसा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हे देवी! मैं उनके गुणों की प्रशंसा कर रहा हूँ अवगुणों की प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ। उनमें मानों जितना तप है, तप के पश्चात यदि उसमें नम्रता नहीं आती तो ब्रह्म का, ब्रह्म का ज्ञान उसे नहीं हो सकेगा तो मानों देखो जो वाटिका में शान्त अस्त्रों-शस्त्रों से युक्त हो करके जो विश्वामित्र मृत्यु दण्ड देने के लिए तत्पर थे वह अश्रुपात जाने लगे और मुनिवरो देखो विश्वामित्र महाराज वशिष्ठ के चरणों में ओतप्रोत हो गये और यह कहा हे प्रभु! अब मुझे क्षमा कीजिए। तो उस समय जब वह अश्रुपात हो गये, नम्रता आ गई चरणो की, चरणो की वन्दना में लग गये उस समय उन्होंने ब्रह्मर्षि कहाँ। ब्रह्मर्षि किस समय बनता है, क्या मेरे प्यारे परमात्मा, परमात्मा निरभिमानी है जब तक मानव में अभिमान रहेगा तब तक जीवन उसका प्रिय नहीं बनेगा। इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि परमात्मा तो निरभिमानी है और जब तक निरभिमान नहीं आ जायेगा तब तक परमात्मा को प्राप्त नहीं हो सकेगा। मेरे प्यारे उन्होंने ब्रह्मर्षि कह करके सम्बोधित किया तो वह ब्रह्मर्षि बन गये। तो विचार आता रहा है बेटा देखो नम्रता ही मानव का जीवन है और ध्रुवा में गमन करने वाला ही विष्णु कहलाता है, वेद का आचार्य कहता है वह विष्णु है।

ऊर्ध्वाकला

मेरे पुत्रो! देखो ऊर्ध्वा बृहस्पति ब्रह्मा लोकम रचितम मानों देखो ऊर्ध्वा में बृहस्पति रहता है। बृहस्पति कहते हैं जो देवताओ का मानों देखो आचार्यत्व कहलाता है। आचार्यों का कौन गुरू है? जो बृहस्पति है। मेरे प्यारे देखो देवताओं का गुरू बृहस्पति कहलाता है बृहस्पति कहते जो आचार से मानों पवित्र होता है और वह

ब्रह्मचारियों को आचार की शिक्षा दे करके और उनको महान बनाता है मृत्यु से पार कर देता है। मृत्यु से पार होना ही बेटा देखो मृत्युञ्जय बनना है और वही मुनिवरो देखो ब्रहस्पति कहलाता है। तो विचार आता रहता है बेटा यह कलाए कहलाती हैं इनको जानना है। देखो नम्रता का आ जाना नम्रता में परणित होना और बुद्धिमत्ता है जो अपने को अपने में धारण करने वाला है। तो आओ मेरे प्यारे मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मुनिवरो देखो हमें अपने जीवन को अपनी कलाओ से सुशोभित करना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो यह कला कहलाती हैं सबसे प्रथम मानों ध्रुवा में विष्णु गमन करता है। विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है। नम्रता से पालन किया जाता है जैसे मैं इससे पूर्व काल में बेटा माता की चर्चा कर रहे थे। माता को विष्णु कहते हैं क्योंकि वह पालन करने वाली है, परमात्मा को विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है, सूर्य को विष्णु कहते हैं जो सहस्रों किरणो से संसार को प्रकाश में रत्त करने वाला है और नम्रम ब्रह्मा देवतत्वाम वह नम्र है मानों सबको एकसा प्रकाश देता है इसी प्रकार ध्रुवा में विष्णु रहता है। हे विष्णु मानों तू नम्र है, तू अपने में, देखो माता-पिता भी जब ही नम्र बनते है जब ही पालना में प्रवेश होता। तो मेरे प्यारे देखो ध्रुवाम मम ब्रह्मणे धुरवा अस्सुतम देवम ब्रह्मा सोमन ब्रह्मे क्रमत। मेरे प्यारे! देखो ध्रुवा में विष्णु रहता है ऊर्ध्वा में बृहस्पति है। बृहस्पति कहते हैं जो बेटा ऊर्ध्वा में अपने जीवन को बनाता है, बुद्धिमान बनता है और जो मानव देखो विद्या का अध्ययन करता हुआ वह मुनिवरो देखो ध्रुवाम ब्रह्मण व्रतम देवा वह ध्रुवा में गमन करने वाला है तो वही तो मुनिवरो देखो संसार में कल्याण के मार्ग पर चलता है।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या मुनिवरो देखो मैनें छः-कलाओं का तुम्हें ज्ञान कराया है। छः-कलाओं में क्या है बेटा देखो प्राचीदिग्, दक्षिणीदिग् और प्रतीचीदिग् और उदीचीदिग् और ध्रुवाम ब्रह्मा देखो वह ध्रुवा में विष्णुदिग् और ऊर्ध्वा में बृहस्पति गमन करने वाला है। तो मेरे प्यारे जब परमात्मा को हम देखो सर्वत्रता में दृष्टिपात करेगें तो हमारी साधना पूर्ण हो जायेगी। साधक बन करके बेटा, परमात्मा को, निरभिमानी बन करके मुनिवरो देखो उसको हम प्राप्त कर सकते हैं। तो यह बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए मेरे प्यारे! देखो हम स्वयं अपने में इन्द्र बनें और स्वयं विष्णु बनें और मुनिवरो देखो बृहस्पति बन करके अपने जीवन को महानता मे ले जाएँ जिससे हमारा जीवन एक पवित्रता को धारण करता रहे। इसी प्रकार बेटा देखो छः-कलाओं का ज्ञान इसमें पूर्व काल में प्रगट करेंगे।

आज का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाएँ। प्रत्येक इन्द्रियों पर संयम करके उन्हें मृत्यु से पार ले जाएं। इन्द्रियों को बिना मृत्यु के पार लिए बिना बेटा देखो मानव मृत्युञ्जय नहीं बनता। नम्रता, ज्ञान और प्रकाश में नही पहुंच पाता इसलिए प्रकाश में रत्त होना हमारा कर्तव्य है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा यह कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए अपने मानव जीवन को हम सार्थक बनाएं और अपने जीवन की धाराओं को जान करके सागर से पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन। ओ३म् देवा आभ्यां मनाः रथं आप्यां दधिः। ओ३म् रथं मनः गायन्त्वाभिः देवा आभ्यां मनः प्राची रथं आप्यां मनाः। ओ३म् यश्चाहं ब्रह्मण दधि वाचन्नमः दधिस्सर्वं ब्रह्म आपः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 10-जून-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : चौ. लहरी सिंह, कसेरवा खुर्द, मुमफ्फरनगर।

७ याग 11-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जो उस परमपिता-परमात्मा की महिमा से निहित है और वेद का मन्त्र कहता है यज्ञनम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम् वह परमपिता-परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। क्योंकि हमारे आचार्यों ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना प्रकार के यागों का व्यवधान किया है और उसके ऊपर उन्होंने गम्भीरता से अध्ययन किया और परमपिता-परमात्मा को वेद-मन्त्रों ने यज्ञोमयी स्वरूप कहा है क्योंकि वह याग में रमण करने वाला है और वह यज्ञोमयी स्वरूप है। इस परमपिता-परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो यह मानों यह ब्रह्माण्ड अयम् अमृतम ब्रह्म ब्रहे अव्रतम् यज्ञम् ब्रहा यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और यज्ञशाला में मानों विद्यमान हो करके स्वयं इसका नियमन कर रहे हैं। मेरे प्यारे आत्मा यज्ञमान है परमात्मा स्वयं ब्रह्मा हैं और पंच-महाभूत मानों कोई उनमें से उदगाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई मानों देखो इसमें होता बन करके याग हो रहा है।

याज्ञिक

तो विचार आता है कि परमपिता परमात्मा का यह जो भव्य ब्रह्माण्ड है इसमें प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बन करके आया है और याग करना उसका मानों एक कर्तव्य माना गया है। प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। मेरी प्यारी माता के गर्भ-स्थल में जब शिशु होता है तो वह अपने में याज्ञिक बन करके याग करती है और उसे नाना प्रकार की शिक्षा से सुशोभित कर देती है। इसी प्रकार मेरे प्यारे देखो, प्रत्येक मानव, प्रत्येक प्राणी मात्र एक दूसरे का सहायक बना हुआ है। एक दूसरे में मानों एक दूसरे की आभा में निहित होने से एक प्रकार की यह यज्ञशाला है। इस प्रायः यज्ञशाला में प्रत्येक मानव अपने में याग कर रहा है। तो आओ मेरे प्यारे देखो, यज्ञशाला में हम विद्यमान हो करके अपनी मानवीयता को अपने में विचारते रहें। परन्तु जहाँ वेद का मन्त्र यह कहता है कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है वहीं परमात्मा ने इस मानव शरीर की रचना की और यह शरीर की रचना भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ बेटा देखो, आत्मा ब्रह्मा है और पंचो मंगलम प्राणाय यह प्राणो में उदगाता, अध्वर्यु बने हुए हैं और मन इसको संचालित कर रहा है। वह इन्द्रियों का सारथी बन करके मानों देखो इस रथ को अपने में धारण करा रहा है। तो इस प्रकार बेटा देखो अलंकारिक वैदिकता में जब मानव अपने में विचारने लगता है तो बेटा उसका स्वरूप प्रायः उसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। तो मेरे प्यारे देखो जहां इस प्रकार की वार्ताएं वैदिक-साहित्य में हमें प्राप्त होती हैं क्योंकि आचार्यों ने याग के ऊपर अपना अनुसन्धान किया है और इसके ऊपर उन्होंने गम्भीरता से अध्ययन करते हुए नाना प्रकार की प्रतिभा में मानव को ले गये हैं।

विद्यालयों में नैतिक-शिक्षा

तो आओ मुनिवरो! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि-मुनि बेटा देखो अपने विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को नैतिक-शिक्षा दे करके उनको शिक्षित बनाते हैं। मेरे प्यारे मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का यह वाक् मैने कई समय वर्णन किया है आज भी मुझे प्रायः स्मरण आ रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान, मेरे प्यारे प्रातः काल का समय है

ब्रह्मचारी-जन एक पंक्ति में विद्यमान हैं और एक पंक्ति में विद्यमान हो करके ऋषि का आसन ऊर्ध्वा में गमन है। वह न्यौदा में कुछ वेद-मन्त्रों का अध्ययन करने लगे और न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते बोले हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मानों वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम यज्ञनम ब्रह्मा आक्रतम देवा। हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो मानों प्रत्येक मानव याज्ञिक बनें परन्तु याग करना चाहिए। मेरे प्यारे देखो, इस प्रकार का जो उपदेश दे रहे थे ऋषिवर तो उन्होंने कहा अमृतम यज्ञनम ब्रहा यह विद्यालय एक प्रकार का यज्ञक्षेत्र है यहां प्रत्येक मानव, प्रत्येक ब्रह्मचारी अपने में याग और योग्यता के आधार पर अपने जीवन को महान बनाने के लिए उपस्थित हुआ है। इस प्रकार बेटा देखो जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने वाक् प्रगट किए। प्रगट करने के पश्चात उनमें ब्रह्मचारियों में एक यज्ञदत नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आप नित्यप्रति हमें याग का उपदेश देते हैं और सुकामना का उपदेश देते हैं परन्तु मेरा यह प्रश्न है क्या हम याग कैसे करें? तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि तुम मानों एक भव्य यज्ञशाला हो, नाना खम्बों वाली यज्ञशाला हो और उसमें मानों देखो, वह सुन्दर रूप से सजातीय होनी चाहिए जैसे परमपिता-परमात्मा ने प्रकृति को आभूसित किया है और यह प्रकृति मानों देखो नाना प्रकार की वनस्पतियों से सजायित रहती है अपने में मानों देखो अपने-पन का गुण गान गाती रहती हैं। इसी प्रकार तुम मानों देखो यज्ञशाला को सुशोभनीय बनाओं। तो उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञनम ब्रह्मा और यज्ञशाला में नाना प्रकार का साकल्य होना चाहिए और यज्ञशाला भव्य रूपों से उसका सुगठितता में मानों शिल्पकारों के द्वारा शिल्पकार उसे अपने में धारण करते रहें। इस प्रकार मुनिवरो देखो ऋषि ने वर्णन किया और यह कहा कि यज्ञमान अपने में स्वाहा कहता हुआ मानों नाना प्रकार के साकल्य को ले करके स्वाहा उच्चारण करे। मेरे पुत्रो उन्होंने कहा कि यज्ञशाला में ऊर्ध्वा आसन होना चाहिए उसमें ब्रह्मा हो, उदगाता हो, अध्युर्व हो, यज्ञमान विद्यमान हो करके अपने स्वामीत्व का अपने में धारण करने वाला हो।

अग्न्याधान

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उसका व्यवधान किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु मानों देखो कहीं ऐसा हो, न तो यज्ञशाला हो और न मानों देखो वह शिल्पकारों से निर्माणित हो और ना साकल्य हो और हम याग करना चाहते हैं तो प्रभु कैसे करे? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक वेद का मन्त्र उच्चारण किया और उन्होंने कहा अग्नम ब्रह्मा अग्नि व्रतम देवस्सुइ तमन ब्रह्मा समिधनम् वृति देवाः वह मेरे प्यारे याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे ब्रह्मचारियों यदि तुम्हारी यज्ञशाला नहीं है खम्बो वाली तो तुम मानों देखो अग्न्याधान करो और अग्नि को समिधा के द्वारा प्रदीप्त करके तुम याग करो और उसमें कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। मानों देखो वही तो हमारा यज्ञोमयी स्वरूप कहा जाता है वही तो एक आभा में निहित रहने वाला एक कृत है। तो मेरे प्यारे देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया, ऋषि ने कहा है सम्भवम ब्रह्मा मानों देखो इस प्रकार तुम अग्नि के द्वारा समिधाओं को प्रदीप्त करके तुम याग करो। अग्नि तुम्हारी प्रचण्ड है क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और अग्नि ही मानों देखो देवत्व को प्राप्त कराने वाली है। तुम अग्नि को अपना देवताओं का मुख स्वीकार करके उसको स्वीकार करो और मानों उसमें कहो कि प्रणाम ब्रह्मा प्रणाम रूद्रो भावा प्रव्हा इस प्राण की महिमा का गुण-गान गाते रहो।

आहुति देने का अधिकार

मेरे प्यारे देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा कहीं प्रभु ऐसा हो हम ऐसी स्थली में चले जाए कहीं हमें समिधा भी प्राप्त न हों और अग्नि भी हमारे समीप न हो तो याग कैसे करे? उन्होंने कहा

यदि तुम्हारे द्वारा न तो साकल्य है और न समिधा है, न अग्नि है मानों उस समय तुम याग करना चाहते हो तो जल को अंजलि में लो और जल को अंजलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। उन्होंने कहा इस प्रकार आहुति देने का तुम्हें अधिकार प्राप्त होगा, अधिकारी बनो। तो मेरे प्यारे ब्रह्मचारी बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि अंजलि में जल को ले करके क्योंकि जल तो संसार में पिण्ड का नेतृत्व करने वाला है जितना भी यह जल है मानों तेजोमयी को ले करके गमन करता है यह उत्पात बन जाता है। मेरे प्यारे देखो जल ही तो अमृत कहलाता है जो समुद्रो से जो पृथ्वी की मेखला बना हुआ है और समुद्र इसे अपने में चन्द्रमा अपने में धारण करके समुद्रों से अपना समनव्य करता है। वही माता के गर्भस्थल में बेटा देखो वह अंजालम भूतम ब्रह्मा जलप व्रते वही जल को ले करके बेटा माता अपने गर्भ में शिशु का निर्माण, निर्माणवेत्ता निर्माण करता है परन्तु माता उससे प्रसन्न होती है। तो बेटा! देखो वह जल को अंजलि में लेकर के स्वाहा उच्चारण करो।

ब्रह्माण्ड की कल्पना

मेरे प्यारे! देखो इतने में ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा प्रभु! कहीं ऐसी स्थली पर चले जायें कि हमें कहीं जल भी प्राप्त न हो तो प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें कहीं जल भी न प्राप्त हो तो तुम मानों देखो, पृथ्वी की रज को लो और पृथ्वी की रज को ले करके तुम याज्ञिक बनो और पृथ्वी की रज के द्वारा कहो अमृतम ब्रह्मा देवतत्वम् ब्रह्मे प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। मानों देखो यह पृथ्वी की रज के द्वारा यह पृथ्वी की रज और देखो तरलत्व जल प्राप्त हो करके मानों संसार में पिण्डों का निर्माण होता है, यह नाना प्रकार के जो पिण्डां का निर्माण होता है। कहीं माता के गर्भ-स्थल में देखो हम जैसे शिशुओं का निर्माण होता है और वह मानों पिण्ड के रूप में होता है। कहीं मुनिवरो देखो, नाना प्रकार के ग्रहों का निर्माण होता है उस ग्रह के निर्माण में भी मेरे प्यारे देखो, जल और गुरूत्व अथवा पृथ्वी के परमाणुओं का सब का मिलन होता है और मिलन हो करके मुनिवरो देखो पिण्डों का निर्माण होता है। माता के गर्भस्थल में जब मानव शरीर का, पिण्ड का, निर्माण होता है तो बेटा बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण होता है। मानों देखो यह जितना भी पिण्ड है चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में क्यों न हो चाहे वह माता के गर्भस्थल में शिशु के रूप में हो यह सर्वत्र मानों देखो एक पिण्डाकार बना हुआ है और पिण्डाकार बनने से ही मानों देखो पिण्डम ब्रह्मा अव्रतम यह पिण्ड ही मानों देखो ब्रह्माण्ड की कल्पना का एक क्षेत्र माना गया है। तो विचार आता रहता है, ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों तुम आओ और मानों देखो यदि तुम्हें कोई वस्तु न प्राप्त हो तो पृथ्वी की रज को लो और कहो कि प्राणाय स्वाहा। यदि प्राण में पृथ्वी के गुरूत्व परमाणु नहीं होंगे तो प्राण अपनी क्रिया नहीं कर सकता, मन अपनी विभाजन क्रिया नहीं कर सकता। इसी प्रकार तुम गुरूत्व देखो जितना विज्ञान है संसार का वह तेजोमयी और तरलत्व देखो गुरूत्व परमाणुओं के ऊपर निहित रहता है। यही तीन प्रकार के परमाणु अपने में गतिवान रहते हैं चाहे वह लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाला हो चाहे मेरे प्यारे अपने में अपनी आभा में परणित होने वाला हो। इसी प्रकार देखो जितने भी लोक-लोकान्तरों के पिण्डाकार बने हुए हैं चाहे वह सूर्य है, चाहे वह मंगल है, चाहे वह मानों देखो बुद्ध, शुक्र है कोई भी मण्डल हो मानों देखो मण्डलों का जो निर्माण हो रहा है वह केवल देखो इसी गुरूत्व और तरलत्व को, तेजोमयी को ले करके निर्माणीत हो रहा है। यह पिण्डों का निर्माण का निर्माण-दाता है यह मानों देखो पिण्डां का जन्मदाता है इसके ऊपर प्रायः हमें अपने में विचार-विनिमय करना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का जब विचार वैदिक-आचार्यों ने अपना मन्तव्य दिया तो मुनिवरो देखो ऋषि

कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम मानों इस प्रकार के गुरूत्व माता के गर्भ से ले करके और युवा तक मानों देखो इसी की कल्पना करते रहो और विचारते रहो। तो मानों तुम्हें एक पिण्डाकार जगत दृष्टिपात आता रहेगा। यह पिण्डाकार वाला जो जगत है यही मानों देखो परमात्मा का एक अनुमोदन कर रहा है चित्रण कर रहा है। जिस चित्रण को ले करके अपने जीवन को ऊँचा बनाया जाता है। तो आओ मेरे प्यारे देखो आज का हमारा वेद का मन्त्र हमें यह उद्गीत गा रहा है क्या मंगलम ब्रह्मा व्रतम देवा हे ब्रह्मचारी तुम मानों देखो गुरुत्व को ले करके पृथ्वी के परमाणुओं को ले करके कहों प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो।

मन्त्र-द्रष्टा

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी उपस्थित हो करके बोले हे प्रभु! कहीं ऐसा हो कहीं भगवन् हमें रज भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करें? तो मुनिवरो देखो ऋषि ने कहा कि तुम एकन्त स्थली में विद्यमान हो जाओ और मन-कर्म-वचन को एकाग्र करते हुए, मन-मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए मानों देखो तुम कहो वेद-मन्त्र का उद्गीत होना चाहिए-प्राणम ब्रह्मा वृतम प्राणो वर्णनम् ब्रहे। मेरे प्यारे प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए और वह शान्त मुद्रा में विद्यमान है परन्तु मुद्रा में विद्यमान हो करके वह याग कर रहा है और वेद-मन्त्रों का उद्गीत गा रहा है। वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ अपने में याग कर रहा है तो वह याग अपने में याज्ञिक बना हुआ है। तो विचार आता है बेटा! न तो साकल्य है, न पृथ्वी की रज है तो उस समय तुम्हारे मुखार-बिन्दु में वेद-मन्त्रों की ध्वनि होनी चाहिए इसी ध्वनि को अपने में ध्वनिवान हो करके मुनिवरो देखो अपने में ध्वनियों में ध्वनित होता रहा है और वही ध्वनि मुनिवरो देखो हमारे मन-मस्तिष्को की आभा बन करके और वह हमारे देखो मस्तिष्क में एक अनहृद ध्वनि बन करके रहती है। तो विचार आता रहता है कि वेद-मन्त्र तुम्हारे समीप है और कहते है उच्चारण करते हुए प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो जिससे तुम्हारे हृदय में एक उज्ञवलता का जन्म हो जाता है और वेद-मन्त्रों का तुम्हें ज्ञान होने लगता है और वेद-मन्त्रों के तुम द्रष्टा बन जाओगे। मेरे प्यारे! देखो वेद-मन्त्रों का जो द्रष्टा होता है, मन्त्र द्रष्टा, वेद द्रष्टता नाना प्रकार की दृष्टियों से अपने को जानने के लिए तत्पर हो जाओ। तो बेटा देखो वह याज्ञिक बना हुआ है। हमारे यहां याग का बड़ा वर्णन आ रहा है, याग का अपना बड़ा महत्त्व माना गया है। तो आओ मेरे प्यारे मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता-परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप को जानने का प्रयास करें।

आत्मा का लोक

तो बेटा! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो से कहा तो ब्रह्मचारी यज्ञदत ऋषि के चरणो में ओत-प्रोत हो गये और यह कहा कि प्रभु आपको धन्य है आपने हमारे अज्ञान को समाप्त किया है। उन्होंने कहा है कि माता के गर्भ-स्थल में जो पिण्ड का निर्माण होता है वह आत्मा का लोक है परन्तु बाह्य-जगत में आ करके मानों अपने शरीर का लोक बना लेता है और वही मुनिवरो देखो जैसे आत्मा का शरीर सूक्ष्म शरीर कहलाता है इसी प्रकार मुनिवरो देखो इस ब्रह्माण्डम ब्रह्मा इस अमृतम ब्रह्मे यह माता का अवृत देखो पञ्च-महाभूतों का लोक है जो पिण्डो के रूप में परणित होने लगता है। तो विचार आता रहता है बेटा इस प्रकार जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो को अपना मन्तव्य दिया तो ब्रह्मचारी अपने में बड़े प्रसन्न हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी उनके चरणो में ओत-प्रोत हो गये और यह कहा कि धन्य है प्रभु! आपने हमें प्रकाश में पहुँचाया है आपने हमारे अन्धकार को समाप्त किया है।

स्वर्ग का मार्ग

तो वेद का ऋषि वेद-मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा यज्ञनम दिव्यम् व्रतम देवा हे मानव तू याज्ञिक बन और तू अपने में याग करने वाला बन क्योंकि परमात्मा ने यह जो ब्रह्माण्ड, यह जो पिण्ड है यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में इसका निर्माण किया है और निर्माणशाला में विद्यमान हो करके अपने में महान बन। तो बेटा! कहीं से मुझे यह प्रेरणा मिली, क्या तुम याग के ऊपर अपना विचार दो तो बेटा याग के ऊपर हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत अन्वेषण किया और यह विचारा कि याग अपने में कितना अद्वितीय क्रियाकलाप है। जिस क्रियाकलाप को ले करके हमारे यहां सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक मानों इसका व्यवधान चला आ रहा है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से और सृष्टि की अन्तिम प्रक्रिया तक याग अपने में याग बना रहेगा। इस प्रकार मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है और आचार्यों ने इसका वर्णन किया है। अब मुनिवरो देखो मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द जीः ओ३म् देवाम् भूतम् भविवर्णश्चमं वाचन्नमः। मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि-मण्डल अभी-अभी मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव अपने उद्गार दे रहे थे और वह गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे अथवा उसको भरण कर रहे थे। तो विचार आ रहा था कि मैं अब क्या उच्चारण करूँ परन्तु जहाँ हमारी यह वाणी जा रही है वहां एक याग सम्पन्न हुआ है और मेरा जो अर्न्तात्मा है वह यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तेरे गृह में जो द्रव्य वरणान्तु यज्ञे असुतः है तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना ही मानवीयता कहलाती है। जिन गृहों में देखो द्रव्यों का दुरूपयोग होता है वह गृह नारकिक बन जाते हैं और जिन गृहों में द्रव्यो का सदुपयोग होता है वह गृह स्वर्ग बन जाते हैं। मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव ने अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना की उन्होंने याग के ऊपर अपना कितना उद्गार दिया है और ऋषि-मुनियों का अपना-अपना जो विचार है वह भी उन्होंने प्रगट किया। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हे यज्ञमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी कामना रहती है।

राजा का कर्तव्य

परन्तु देखो यहां आधुनिक काल में या राष्ट्रवाद में मैं जाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि राष्ट्रवाद अपने में कोई अद्वितीय क्रियाकलाप नहीं है। विचार आता रहता है कि राष्ट्र अपनी प्रजा और मानवीयता के सम्बन्ध में कोई चिन्तन नहीं कर रहा है कोई मनन नहीं कर रहा है। शिक्षा-प्रणाली, उसका जो अपना मानवीय जीवन है वह मानों देखो वह द्वितीय रूप में चला गया है। राजा को चाहिए यदि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राजा को चाहिए कि राजा देखो राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। मैं अपने पूज्यपाद-गुरूदेव से यह उच्चारण करता चला आया हूँ क्या राजा को ऊँचा बनना है तो रूढ़ि नहीं होनी चाहिए। जब ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन जाती हैं वह एक दूसरे के रक्त के पिपासी बन जाती हैं, वह रक्त की पिपासी रूढ़ि देखो राष्ट्र का विनाश कर देती हैं, समाज की मानवीयता नष्ट हो जाती है। तो इसी प्रकार राजा को चाहिए यदि वह अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करे और उनका विचार-विनिमय शास्त्रार्थ के तर्क के आधार पर होना चाहिए और होने के पश्चात मानों देखो उसकी प्रतिभा देखो वह निर्णायक राजा होना चाहिए। वह अपना निर्णय देने वाला हो, और राजा देखो वेदां के मर्म को जानने वाला हो, ज्ञानी हो और कर्मकाण्डी होना चाहिए। राजा यदि ज्ञानी है और कर्म काण्डी है तो वह राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है। तो विचार आता है प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों का शास्त्रार्थ हो और राजा जो तर्क और विज्ञान पर जो स्थिर हो जाए उसी विचारों को स्वीकार करके अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाए। यह राजा का कर्तव्य

है। राजा के राष्ट्र में यदि रूढ़ियाँ पनपती रहेगीं तो राजा का राष्ट्र कदापि ऊँचा नहीं बनेगा। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके उनका विचार-विनिमय होना चाहिए। मेरा यह सदैव मन्तव्य रहा है कि एक ही विचार हो, एक ही मानों एक ही कर्तव्यवादी राजा के राष्ट्र में प्रजा होनी चाहिए एक ही प्रकार का ईश्वर के नाम पर क्रियाकलाप होना चाहिए जब मुनिवरो देखो यह राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता है। राष्ट्र और समाज में नैतिकता की और मानवता की आवश्यकता रहती है। जब देखो राजा सुरा और सुन्दरी और द्रव्य का लोलुप्तवादी बन जाता है तो समाज का ह्रास होना प्रारम्भ हो जाता है, शिक्षा-प्रणाली देखो ह्रासता में चली जाती है और वह ह्रास होना ही समाज के लिए हानि-प्रद कहलाता है तो इसीलिए राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाए। आज मैं विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा केवल यह क्या हे राजन तेरे राष्ट्र में रूढि ईश्वर के नाम पर नहीं होनी चाहिए, तेरे राष्ट्र में मानवता होनी चाहिए, कर्तव्यवाद होना चाहिए और वैदिक-मर्म का जानने वाले देखो पाण्डित्व तेरे राष्ट्र में होने चाहिए जिससे गृह ऊँचा बने मानवीयता तेरे जीवन में आ जाए तेरा इन्द्रियो पर जय होना चाहिए।

अमृतम ब्रह्मा देखो मेरे पूज्यपाद-गुरूदेव ने अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना की है। मैं केवल एक अपनी वेदना राष्ट्र के प्रति देता रहता हूँ। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए क्या यह मोहम्मद के मानने वाला है, यह ईशु के मानने वाला है यह कला मुक्ता को देखो मानने वाला है, धर्म एक होना चाहिए, पद्धति एक होनी चाहिए वह परमात्मा के नामों पर विभाजन नहीं होना चाहिए। परमात्मा के नाम जब विभाजन होता है, तो समाज में विकृतता आ जाती है, समाज में रक्त भरी क्रांति के अवशेष बने रहते हैं। तो इसलिए मेरा यह एक वाक् कहता है कि अमृतम हे राजा तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना। तो ऐसा उपदेश दे करके मैं अपने विचारो को विराम दूँगा। क्योंकि राजा ब्रह्मवेत्ता हो, वेदज्ञ हो जिससे वह अपनी प्रजा के भाव को जान सके और प्रजा के विचारों को जान करके उसी एक ही विचारधारा वाला व्यक्तित्व होना चाहिए।

अब मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पाने से पूर्व कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह गृह, वह द्रव्य उस गृह को नहीं त्यागता और गृह द्रव्य को नहीं त्यागता। इसी प्रकार जहां दुरूपयोग होता है एक समय वह होता है कि मानव के जीवन का साथी द्रव्य न रह करके वह उसे हीन बना देता है हीनता को प्राप्त करा देता है। तो यह आज का वाक् मैं अपने पूज्यपाद अमृतम भुवम् ब्रह्मे अमृतम पूज्यपाद-गुरूदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने राष्ट्रीय उद्गार दिये क्या राष्ट्र कैसा होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में रूढि नहीं होनी चाहिए। ईश्वर के नाम की जो रूढ़ियाँ हैं यह समाज का विनाश करती रहती हैं तो यह रूढ़ियाँ समाप्त हो, राजा का राष्ट्र पवित्र हो और मानवता का प्रसार होना चाहिए। तो यह आज का वाक् मानों देखो मैं अपनम ब्रह्मे आज का विचार यह चल रहा था कि प्रत्येक मानव को अपने में याग करना चाहिए वेद के मन्त्रो के द्वारा उद्गीत गा करके। तुम मानों देखो जैसा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियो को उपदेश दिया और आदेश दिया उसी के अनुसार समाज और विद्यालयों में उनका संगठन होना चाहिए। विद्यालय ही तो ऊँचा बनाते हैं वहां निर्माण होता है, वर्ण व्यवस्था का निर्माण विद्यालयों में प्रायः होता रहा है। तो आज का वाक् यह क्या कह रहा है कि परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और हम मानों देखो रूढ़िवाद को नष्ट करें और राजा के राष्ट्र में देखो निर्वाचन की प्रणाली पवित्र हो। तो यह आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, याग करना चाहिए। साकल्य न हो तो वह समिधा के द्वारा, समिधा न हो तो वह अंजलि में जल के द्वारा, जल न हो तो वह मानों देखो अपने में पृथ्वी की रज के द्वारा, रज भी न हो तो एकन्त स्थली पर विद्यमान हो करके वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाता रहे जिसमें वायु मण्डल पवित्र बन जाए। तो आज का वाक् अब यह सम्पन्न होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या विद्यालयों में आचार्य इस प्रकार की नैतिक-शिक्षा देने वाले हों और न ब्रह्मऽपाना ब्रहे पान करने वाला अपने में देखो ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाएँ यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओइम् देवा आभ्याम् मनु रथम आप्याः रथाः शेष अनुपलब्ध अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 11-जून-1992। समयः प्रातः 10 बजे स्थान : चौ. लहरी सिंह कसेरवा खुर्द, मुजफ्फरनगर।

८ तप 14-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगाण गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गाण गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महान हैं और वह प्रतिभाशाली हैं और वह इस संसार के एक-एक कण-कण में व्याप्त हैं तो हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुण-गान गाते रहते हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा सीमा से रहित हैं और वह सीमा में आने वाले नहीं हैं इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणो का गुण-वादन करते रहे हैं। हमारे यहां ऋषि-मुनि एक-एक वेद मन्त्र को ले करके अन्वेषण करते रहे हैं और ज्ञान और विज्ञान की प्रायः उड़ाने उड़ते रहते हैं। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निंतान्त माना गया है जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ही विचार विनिमय करता रहा है और अन्वेषण करता रहा है कि वह परमपिता परमात्मा की महिमा और उसकी महानता में उसके विज्ञान में रत्त हो जाऊं।

तप की व्याख्या

तो आओ बेटा! आज का हमारा वेद-मन्त्र यह कह रहा है यम ब्रह्मा वर्णस्सुतम देवत्वाम लोकाम भवि वह तम मानों वह परमपिता-परमात्मा अमूल्य और देवत्वम को प्राप्त होता रहता है। तो हम मुनिवरो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में ही मानों तपो में परणित हो जाएँ। प्रत्येक मानव के हृदय में एक आकांक्षा लगी रहती है क्या मैं तपो में परणित हो जाऊँ और मैं तपो में अपने को ले जाऊँ। तो विचार आता रहता है कि तपम भू वक्षणाम् मानों तप किसे कहा जाता है? तो वेद का आचार्य कहता है कि तप कहते हैं जो अपनी इन्द्रियों को तपो में निष्ठ बना लेता है अथवा अपनम ब्रह्मे मानों अपने आत्मा को ब्रह्म में और ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करता वही इन्द्रियों के ऊपर संयमी, तो यह हमारे यहाँ तप कहा जाता है।

याग

तो आओ बेटा! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की विवेचना करने लगता हूँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके नाना प्रकार का यशोगान गाते रहते और वह नाना प्रकार की आभा में परणित होते हुए मेरे पुत्रो यागाम भूतम ब्रह्मा वह ब्रह्मचारियों को प्रातः कालीन नैतिक-शिक्षा में परणित करते हुए कहा करते हे ब्रह्मचारियों! तुम आओ अपने में याज्ञिक बन जाओ। क्योंकि याग ही संसार में सर्वत्र जीवन है, क्योंकि प्रत्येक मानव याग से पिरोया हुआ है। तो हमारे आचार्यों ने कहा कि जितना भी आत्मीय कर्म है अथवा जितना भी मानव की मौलिकता को ले जाने वाला श्रोत्रिय कर्म कहलाते हैं उन सबका नाम याग कहा गया है। याग कहते हैं जहां मानव को ऊर्ध्वा में शिक्षा प्राप्त होती है याग कहते है जितना भी सुकर्म है सर्वत्र का नाम याग माना गया है। एक विज्ञानवेत्ता है वह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ता रहता है और उसमें विचार-विनिमय करता हुआ अन्वेषण कर रहा है। वह याग कर रहा है। एक माता अपने गर्भस्थल में अपने शिशु को अपनी लोरियो का पान कराती मानों उसे नाना प्रकार की आभा में परणित कर रही है तो वह भी याग कर रही है। एक मानव देखो प्राणायाम कर रहा है प्राण को अपान में प्रवेश कराता है और प्राणो में प्राण की अपने में मानों देखो अवृत्तियों को दृष्टिपात कर

रहा है वह भी याग कर रहा है। एक मानव देखो अग्नि देवता को देवताओं का मुखारबिन्दु स्वीकार करता है, उसमें स्वाहा देता है वह भी याग कर रहा है। तो मुनिवरो देखो एक मानव अपनी साधना के लिए गऊआम भूतम ब्रह्मे अपनी गऊओं की सेवा कर रहा है। हमारे यहां नाना प्रकार के रूपों में नाना प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन होता रहा है। हमारे यहां गौ नाम इन्द्रियों को कहा गया है। जो गौ नाम की इन्द्रियों को संयम में लाता है उनके ज्ञान और विज्ञान में परणित होता है वह देखो अपने में आध्यात्मिक-याग कर रहा है।

याज्ञिक

तो आओ बेटा देखो मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। यहाँ नाना रूपों में बेटा देखो जब ब्रह्मचारी याज्ञिक बन जाता है, ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है वर्चसुतम ब्रह्मा लोकाम वह वर्चस्वी कहलाता है। तो आओ बेटा देखो मुझे स्मरण आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते हुए बोले हे ब्रह्मचारियां! तुम याज्ञिक बनो और यागाम तपम ब्रह्मणां व्रतम देवा हे ब्रह्मचारी! तुम तपो में परणित हो जाओ क्योंकि संसार का एक-एक कण अपने में तपायमान रहता है। एक-एक कण-कण में मानों देखो मानों तप की सुगन्ध आती रहती है तुम भी अपने में, तपों में ही निष्ठ हो जाओ। जैसे राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए तपो में परणित हो जाता है और तप करता है। देखो जैसे यहाँ नाना राजा इस प्रकार के जिन्होनें तप किया है और तप से अपने राष्ट्र को उन्नत बनाया है इसी प्रकार तुम भी अपने में तपस्वी बनों। तो मेरे प्यारे! देखो जैसे वह ब्रह्मचारी को याग का उपदेश दे रहे थे क्या तुम याज्ञिक बनो और अपनी विचारधारा को याग में परणित कर जाओ प्रत्येक मानव।

प्रदूषण

देखो जब भी जिस भी काल में समाज में प्रदूषण आता है या प्रदूषण की प्रतियाँ उत्पन्न होती हैं तो वह विचारो से होती हैं। सबसे प्रथम मानव के प्रत्येक गृह में विचार होना चाहिए जब विचारों में विकृतता आ जाती है विचारों में दूषितपन आ जाता है ब्रह्मचर्य भ्रष्ट हो जाता है तो मानव की प्रदूषण की प्रतिभा का जन्म होना प्रारम्भ हो जाता है। तो इसलिए वेद के आचार्यों ने कहा है कि प्रत्येक मानव को अपने यहाँ देखो याज्ञिक होना चाहिए। मुझे बेटा वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान राम प्रातः-कालीन मानों अपने गृह में याग करते और मानों देखो ऋषि-मुनि भी विद्यमान होते तो राम का यह उपदेश चलता कि राजा का राष्ट्र वह पवित्र बनता है जिस राजा के राष्ट्र में प्रातःकालीन प्रत्येक गृह में मानों देखो नाना प्रकार की सुगन्धियों का व्यवधान होता हो और वह सुगन्धि एक नये विचारों की सुगन्धि है। तो कहीं मानों वेद-मन्त्रों की ध्वनियो की सुगन्ध आ रही है, कहीं साकल्य की सुगन्धि है जो अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है। तो भगवान राम यह कहा करते थे क्या अयोध्या में यह घोषणा होनी चाहिए क्या प्रत्येक गृह में मानों तीन प्रकार की सुगन्ध होनी चाहिए। सबसे प्रथम मानों देखो उसके विचारों की सुगन्धि और द्वितीय सुगन्धि वेद-मन्त्रों की ध्वनि होनी चाहिए और तृतीय सुगन्धि मानों साकल्य अग्नि में परणित होना चाहिए। तो मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं उस काल की विवेचना करने लगता हूँ या वह काल स्मरण आता रहता है तो प्रत्येक गृह में बेटा देखो याग होते और सुगन्ध होती मानों देखो प्रदूषण का अभाव हो जाता। तो विचार आता रहता है कि प्रत्येक गृह में प्रत्येक मानव के हृदय में विचार की प्रतिभा आनी चाहिए। मेरे प्यारे देखो विद्यालयों में जब आचार्य ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान होता है वह यह विचारता है कि मेरे विद्यालय से प्रदूषण का जन्म न हो तो वह ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा देते हैं और वह कहते हैं ब्रह्मचरिष्यम ब्रह्मा ब्रह्मण ब्रह्मे ऋतम देवा हे ब्रह्मचारियों! तुम ब्रह्मवर्चोसी बनों और

ब्रह्म का अपने में चिन्तन करो ब्रह्म को अपने में विचार-विनिमय करने का प्रयास करो। ब्रह्मचारी कहते ही उसे हैं जो ब्रह्म और चरी दोनों को जानने के लिये तत्पर होता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरी कहते हैं प्रकृति को। जब प्रकृति और ब्रह्म को जानने में लग जाता है वह तो ब्रह्मचरिष्यामी कहलाता है। तो इसी प्रकार जब वेद का ऋषि ब्रह्मचारियों को इस प्रकार अपना उपदेश देता है और उच्चारण करता है कि जनन्म ब्रहा ऋतम मानों वेद का मन्त्र यह कहता है कि अपने में तुम ब्रह्मवर्चोसी बन जाओ। एक-एक श्वांस की प्रत्येक गति को मानों ब्रह्म में पिरोने का प्रयास करो। एक सूत्र बना लो क्योंकि जब तक एक सूत्रित तुम्हारा जीवन नहीं होगा मन, कर्म, वचन का एक सूत्र नहीं बनेगा तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकेगा।

याग के लिये प्रेरणा

तो मेरे प्यारे! देखो यह उनका एक उपदेश प्रारम्भ हो रहा था तो उस समय मुनिवरो देखो उन ब्रह्मचारियों के मध्य में एक ब्रह्मचारी उपस्थित हुए जिनका नाम यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी थे जो गार्गेपथ्य गोत्र में जिनका जन्म हुआ था। तो मेरे प्यारे देखो ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! आप याग के लिए हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं कि याग करो। हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं कि हम याग कैसे करें? तो मुनिवरो देखो ब्रह्मचारी को याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि तुम एक स्थली पर विद्यमान हो जाओ और विद्यमान हो करके तुम अपने में याग का अपना विचार बनाओं। जैसे हमारे यहां सत्यकामाम भूतम ब्रह्मे वाचस्तुम देवा जैसे ऋषि देखो वाजश्रवा ने अपने जीवन को यागमय बनाया, जैसे मानों सत्यकाम ने अपने आत्मा के कल्याण के लिए षोडश-कलाओं को जानने के लिए उन्होंने अपने जीवन को देखो गऊओं को समर्पित कर दिया था इसी प्रकार तुम अपने में याज्ञिक बनों और यागाम भूतम ब्रहे मानों देखो याग एक संसार का सबसे महान ऊर्ध्वा में कर्म और क्रियाकलाप माना गया है। इस विचार को ले करके तुम प्रारम्भ करो। उन्होंने कहा प्रभु हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा याग में देखो तुम्हारी यज्ञशाला हो और यज्ञशाला में नाना प्रकार के खम्ब होने चाहिए। जैसे मुझे स्मरण है महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने जब अपने विद्यालय को त्याग करके ब्रह्मचर्य-क्षेत्र में गये मानों देखो विज्ञानवेत्ता बने और विज्ञानवेत्ता बन करके उन्होंने चौबीस खम्बों की यज्ञशाला का निर्माण किया और मानों क्योंकि हमारा जो मानवीय शरीर है उन्होंने कल्पना की क्या हमारा शरीर भी मानों देखो चौबीस खम्बो वाला है। इसमें दस प्राण हैं, दस इन्द्रियाँ है, मन, बुद्धि और चित्त अहंकार कहलाते हैं यह सर्वत्र मानों प्रकृति का मंडल आ जाता है। इसी प्रकार उन्होंने कल्पना करते हुए कहा इस प्रकार की यज्ञशाला होनी चाहिए जो चौबीस खम्बों वाली हो और चौबीस कोणो वाली होनी चाहिए। मेरे प्यारे देखो जब उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्मे और उसमें नाना प्रकार का साक्लय होना चाहिए। सबसे प्रथम उसमें मधु साकल्य में मधुपन होना चाहिए, सुगन्धित होना चाहिए और रोगनाशक होना चाहिए और अमृतम ब्रह्मा वह सुगन्धम् ब्रह्मे यह नाना प्रकार के साकल्य पौष्टिक साकल्य होना जिससे देखो उनकी तरंगे वायु मण्डल में परणित हो जिससे वह जो प्रदूषण है वह समाप्त हो जाएँ। इस प्रकार का ऋषि ने बेटा अपना मन्तव्य दिया। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी इस प्रकार देखो तुम्हारी यज्ञशाला में साकल्य होना चाहिए और साकल्य के द्वारा मानों देखो अग्न्याधान हो समिधाओं के द्वारा अग्न्याधान हो करके और तुम कहो सबसे प्रथम प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके तुम हुत प्रारम्भ करो जिस हूत के द्वारा तुम्हारा जीवन वास्तव में कल्याण को प्राप्त हो जाए और तुम्हारे गृह में सुगन्ध, तुम्हारे गृह में देखो मानवीयता का प्रसार हो जाए।

निर्वाचन

इस प्रकार देखो जब ऋषि ने कहा तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ऐसा वर्णन किया तो यज्ञदत

ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! अमृतम ब्रह्मा उन्होंने कहा उसमें निर्वाचन होना चाहिए एक उदगाता हो, एक अध्वर्यु हो और यजमान होना चाहिए वह ब्रह्मत्व को ब्रह्मा पद का अमृत को प्राप्त होना चाहिए। इस प्रकार मानों देखो अपना उद्गीत गाने वाला देखो उद्गीत गाता रहता है। वह जटा पाठ गाता है, घन पाठ गाता है और वह उदात्त और अनुदात्त में गान गाता हुआ माला पाठ को प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार देखो जब यज्ञ का प्रारम्भ होता है तो उसमें देवताओं की पुरी होनी चाहिए और वह साकल्य मानों देवत्व को प्राप्त होना चाहिए।

अग्न्याधान

मेरे प्यारे! देखो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! देखो हम यह जानना चाहते हैं क्या याग जैसे आप ने यह वर्णन किया है देखो यज्ञशाला हो और उसमें देखो इतने खम्बे हों प्रभु साकल्य भी होना चाहिए परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि हम याग करना चाहते हैं परन्तु देखो यह सुविधा यदि न प्राप्त हों तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि तुम्हें यह सुविधा न प्राप्त हों तो तुम मानों देखो अपने यहां देखो समिधाओं को ले करके अग्न्याधान करो और अग्नि प्रदीप्त करते हुए कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके हुत प्रारम्भ करो। मानों देखो वह तुम्हारी समिधाओं के द्वारा याग करो समिधा अग्नि में प्रदीप्त करो और यह कहो प्राणाय स्वाहा प्राण को प्राप्त होनी चाहिए अपान को प्राप्त होनी चाहिए क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड है यह नाना प्रकार के प्राणो से सुशोभित हो रहा है मानों उसी में निहित हो रहा है तो इस प्रकार तुम याग में प्रारिप्त हो जाओगे।

जल के द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने कहा तो ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कहीं मानों देखो ऐसी स्थली पर चले जायें जहां भगवन् देखो समिधा भी हमें प्राप्त न हों और अग्नि भी न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह भी, यदि समिधा तुम्हें न प्राप्त हो तो तुम मानों जल को अंजलि में लो और जल से कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उसे अमृतम उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि जल ही मानों अमृत है यह सर्वत्व कहलाता है और यह जल को अंजलि में ले करके तुम स्वाहा उच्चारण करते रहो और उसे जल के द्वारा ही जल को प्रोक्षण कहते हैं। विचार आता रहता है कि तुम जल के द्वारा अंजलि में ले करके उसको प्रोक्षण करो उसको स्वाहा कह करके देवताओं को प्रदान करते रहो क्योंकि यह जल है यही तो पिण्ड का प्रतिनिधि कहलाता है। जब भी मानों किसी भी प्रकार का देखो पिण्डाकार बनता है वह जल के द्वारा ही मानों देखो उसका प्रारम्भ होता है। मेरे प्यारे देखो उन्होंने कहा जलान्धम् वर्णा ब्रह्मा जल को अंजलि में ले करके याग करो।

पृथ्वी की रज से याग

तो मुनिवरो ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह भी मैनें आचार्यों ने मुझे वर्णन कराया है। मैं यह जानना चाहता हूँ भगवन् कहीं जल भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें जल भी कहीं प्राप्त न हो तो तुम पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके तुम प्रारम्भ करो। क्योंकि यह तो तुम्हारा गुरूत्व है यही तो मानों देखो पिण्डाकार का निर्माण करने वाला है। माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है और उस बिन्दु में मानों देखो तेजोमयी है, तरलत्व है और गुरूत्व है मानों देखो उस समय उसका पिण्ड बनना प्रारम्भ होता है। वह पिण्डाकार बन करके बेटा निर्माण करने वाला वह मेरा प्रभु निर्माण करता है। मानों देखो माता के गर्भस्थल में जब निर्माण होता है तो बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियो का निर्माण होता है। कहीं बेटा देखो हृदय का निर्माण हो रहा

है, कहीं लघु-मस्तिष्क में बेटा देखो नाना प्रकार की ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का देखो उसमें तरंगित होती हुई वह मानों देखो ब्रह्माण्ड की प्रतिभा उसमें जन्म ले रही है। तो विचार आता है कि हृदय भी दो प्रकार के हैं एक शरीर के मध्य में होता है और एक लघु मस्तिष्क में होता है। तो इसका निर्माण कौन करने वाला है? इसमें बेटा पंच-प्राण हैं पांच-उप-प्राण हैं, पांच-ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पांच-कर्मेन्द्रियाँ हैं, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मानों देखो इसी में निर्माणीत होते है। तो मेरे प्यारे निर्माण करने वाला वह मेरा प्यारा प्रभु है जो निर्माण कर रहा है। निर्माणवेत्ता मानों देखो निर्माण कर रहा है। परन्तु प्रकृति के अव्ययों से निर्माण कहां कर रहा है, माता के गर्भस्थल में मेरे पुत्रो देखो पिण्ड कैसे बन रहा है। मानों पिण्ड में गुरूत्व है, तरलत्व है, तेजोमयी है यह तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर बेटा सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है। जब भी विज्ञानवेत्ता इस संसार में होते हैं तो वह तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण करते रहते हैं। सबसे प्रथम तेजोमयी उसके पश्चात तरलत्व और गुरूत्व मानों देखो पिण्डो के निर्माण की प्रतिभा आती है। जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो महतत्व से बेटा एक तरंग का जन्म होता है और वहीं तरंगे मानों देखो उस तरंग के गर्भ में नाना प्रकार के परमाणु गति करना प्रारम्भ करते हैं। उसी से मेरे प्यारे वही तरंगे देखो अन्तरिक्ष में जाती हैं और अन्तरिक्ष से वही देखो वह तेजोमयी अग्नि के परमाणाओं में गति लाती हैं और वही देखो तरलत्व पदार्थों को परमाणुओं में गति और मानों वही गुरूत्व में मिश्रण हो करके नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का निर्माण हो जाता है। वह निर्माण करने वाला बेटा मानों तेजोमयी वह प्रभुत्व कहलाता है तो ब्रह्माण्ड की रचना हो जाती है। तो विचार आता रहता है, यही तो गुरूत्व है, यही तो विज्ञान है जिसके ऊपर मानव देखो अपने विज्ञान की धारा में रत्त होता रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारी! तुम यदि अमृतम ब्रह्मा तुम्हें कोई वस्तु प्राप्त न हो तो तुम जल को मानों जल न हो तो तुम पृथ्वी के परमाणु वह गुरूत्व को ले करके कहो प्रणाय स्वाहा क्योंकि जितना भी पिण्ड का निर्माण होता चाहे वह माता के गर्भस्थल में है, चाहे वह मानों शिशु के रूप में है, चाहे और भी नाना प्रकार के प्राणियों के रूप में हो, चाहे लोक-लोकान्तरों के रूप में हो तो बेटा वह निर्माण मानों देखो तीन प्रकार के परमाणुओ से हो रहा है और यह ही तीन प्रकार की प्रतिभाओं को ले करके विज्ञान उसी में रत्त हो रहा है तो वह परमपिता-परमात्मा देखो उनका स्वामित्व कहलाया गया है। तो विचार आता है बेटा पृथ्वी की रज का लेकर के कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और अव्रतम ब्रह्मा, व्रतम और वह उदानाय स्वाहा कह करके बेटा चित्त का मण्डल आ जाता है। तो विचार आता रहता है आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा जितना भी यह ब्रह्माण्ड है नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा है जो माला बनी हुई है और वह एक सूत्र में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात होता है। बेटा प्राण में भी जब श्वांस की गति प्रारम्भ होती है तो वहां भी देखो गुरूत्व है तरलत्व है और तेजोमयी यदि यह परमाणु नहीं होंगे तो मानव श्वांस की गति को प्राप्त नहीं होगा। मानव देखो वायु मण्डल में इसी प्रकार की प्रतिभाओं का जन्म होता रहता है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! देखो हम इन वाक्यों को जान करके अपने ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाए।

आत्मा का याग

मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! यह भी वाक् देखो मैने स्वीकार किया। यह मेरे आचार्य-जन मुझे बाल्यकाल में मुझे सर्वत्र विद्याओं का अध्ययन कराते रहे हैं। हे प्रभु मैं यह जानना चाहता हूँ भगवन् यदि मानों देखो यह पृथ्वी की रज भी वह कहीं प्राप्त न हों ऐसी स्थली पर चले जायें और हमें याग करना है तो कैसे करें? उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! यदि तुम्हे याग करना है और कहीं मानों तुम्हें पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो तो तुम वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो न्यौदा में वेद-मन्त्रो का

उद्गीत गाते हुए प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, वसुनम ब्रह्म वर्णा देवत्वाम ब्रह्मे वाचस्सुतम नाना प्रकार के वेद-मन्त्र तुम्हारे कण्ठों में सुशोभित होने चाहिए और एकन्त स्थली में विद्यमान हो करके तुम अपने में भहतरी वाणी में उद्गीत गाना प्रारम्भ करो और प्रारम्भ करते हुए मानों देखो कहो क्या प्राणाम ब्रह्मा व्रतम देवम ब्रह्मा व्रतम स्वाहा ऐसा उद्गीत गाते हुए चले चलो और वेद-मन्त्र क्योंकि इससे तुम्हारे अंग-संग का वायुमण्डल तुम्हारा पवित्र हो जायेगा। जैसा मैनें तुम्हें कई कालों में वर्णन किया क्या देखो महर्षि काग-भुषण्ड जी ने देखो अपने जीवन में लगभग देखो बारह अनुष्ठान किए थे और देखो बारह अनुष्ठानो में याग करते रहे और याग करने से ही मुनिवरो देखो उनके अंग-संग का वायुमण्डल पवित्र हो गया, प्रदूषण से रहित हो गया जब साधना साधक की मुनिवरो देखो सिद्ध हुआ करती है। विचार आता रहता है क्या मुनिवरो देखो जब काग-भुषण्ड जी बाल्य-काल में तो माता स्नेहलता यह कहती रहती अमृत ब्रह्मा देवत्वाम हे पुत्र! तुम्हें याज्ञिक और योगेश्वर बनना है क्योंकि माता उसे प्रायः शिक्षा देती रहती थी। विचार आता रहता है बेटा! महर्षि लोमश मुनि के सम्पर्क में आकर के उनका जीवन पवित्र बन गया। माता की वही आज्ञा होती है जो मानों देखो वेदाम् भूतम ब्रह्मा लोकाम व्रतम मेरे प्यारे देखो इस प्रकार का मैं विचार देना नहीं चाहता हूँ। मैं किसी की ऋषि की देखो वह उनकी गाथा का वर्णन नहीं केवल यह कि उन्होंने अपने जीवन में कितने ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप किए हैं। विचार आता रहता है बेटा देखो यहां अमृतम देखो उन्होंने कहा कि तुम वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाते रहो और एकन्त स्थली में विद्यमान होकर के याग करो क्योंकि वह अपने आत्मा का याग है। जिससे मुनिवरो देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार एकाग्र करते हुए मुनिवरो देखो मन-मस्तिष्क को उस समय तुम वेद-मन्त्रो का उद्गीत गाओगे तो तुम वेद-मन्त्र दृष्टा हो जाओगें। मन्त्र द्रष्टा उसे कहते हैं जब मन, मष्तिष्क एकाग्र होता है और मन्त्र को उच्चारण कर रहे हैं और मन्त्रो में जो गुण है वह गुण देखो उस ऋषि के समीप देखो आने प्रारम्भ हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो वेदाम् भूतम ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्सुतम ब्रह्मे तो यही बेटा देखो हमारा उद्गीत वेद-मन्त्रों का। तो वेद का ऋषि कहता है कि हे ब्रह्मचारी! तुम याज्ञिक बनो और तुम मृत्यु से पार होने का प्रयास करो क्योंकि संसार में जब तुम्हारा अनुष्ठान तुम्हारा पवित्र होगा तो तुम्हारे जीवन में ज्ञान होगा, प्रकाश होगा और जब प्रकाश होगा तो मृत्यु से तुम पार हो जाओगे और यदि तुम्हारे जीवन में अन्धकार होगा और अन्धकार अन्धकारम भूतम अज्ञान होगा तो मृत्यु हो गई और मृत्यु ही मुनिवरो देखो अन्धकार को त्यागने के लिए मानव परम्परागतों से प्रयास करता रहा है इसलिए जीवन में अन्धकार नहीं होना चाहिए, मृत्यु नहीं होनी चाहिए। मृत्यु उसे कहते हैं जो अज्ञान है, अज्ञान नहीं रहना चाहिए तो इसीलिए मानव को ज्ञान और विज्ञान में परणित होते हुए ही परमात्मा को स्मरण करते हुए और मानों वेदों का उद्गीत उसका ज्ञान-विज्ञान हमारे समीप होना चाहिए। तो आओ बेटा देखो मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट नहीं कंरूगा केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए जैसा यज्ञदत ब्रह्मचारी ने अपने आचार्य से प्रश्न किया और महर्षि ने उसका उत्तर दिया तो उत्तराणाम ब्रह्मे मानव को उत्तरायण में जाना चाहिए दक्षिणायन को त्याग देना चाहिए। बेटा देखो दक्षिणायन कहते हैं अन्धकार को और उत्तरायण कहते हैं प्रकाश को। मेरे प्यारे! देखो हमारे जीवन में दो ही पक्ष होने चाहिए। हमारा जीवन उत्तरायण में होना चाहिए। उतरायण कहते हैं पराविद्या को धारण करना और दक्षिणायन कहते हैं देखो यह संसार की अमृतियों विद्याओं को अज्ञान में प्रवेश होना। तो अज्ञान को त्यागो और प्रकाश में जाने का प्रयास करो।

आओ बेटा! देखो आज का विचार हमारा क्या कह रहा है। आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल सूक्ष्म सा परिचय यह है कि हमें अपने में याज्ञिक बनना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो यज्ञशाला हो

पवित्रतम देखो जैसे ब्रह्मपुरी होनी चाहिए और यदि यज्ञशालाम ब्रह्मे बेटा! समिधाएं होनीं चाहिए समिधा न हो तो जल को अंजलि में लेकर के याग करो, जल न हो तुम देखो पृथ्वी की रज को ले करके याग करो और पृथ्वी की रज न हो तो अपने मन-मस्तिष्क को एकाग्र करके एकान्त-स्थली में विद्यमान हो करके वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाओ। श्रद्वाम भूतम ब्रह्मा श्रद्धा के द्वारा हृदय को हृदय से मिलान करते हुए मुनिवरो परमात्मा को प्राप्त हो जाओ। यह है बेटा आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हम अपने जीवन में हमारा मानवता को पाने का सदैव प्रयास करें और अपने वेद-मंत्रो का उद्गीत गाते हुए मानों अपने जीवन को उज्ज्वल बनाए, पवित्र बनाए। देखो वेदाम प्रकाशाम भूतम ब्रह्मा व्रतपते यह जो वेदम ब्रह्मा है यह वेद ही तो प्रकाश है, वेद ही तो मानव को ऊंचा बनाने वाला है। वेद नाम प्रकाश का है और उस प्रकाश के गर्भ में बेटा! तीन प्रकार की विद्या विद्यमान है ज्ञान, कर्म और उपासना मानों देखो ज्ञान में ऋत् है और मुनिवरो कर्म में यजु है और साम में मुनिवरो देखो उपासना मानी गई है।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूगा। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते इस संसार-सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या प्रत्येक मानव बेटा! उस परमपिता-परमात्मा की महिमा को निहारता रहे उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारण करता हुआ इस संसार-सागर से पार हो जाए। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे। अब वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मना दधिः वाचन्नमः। ओ३म् यशश्चाहं ब्रह्मणा वाचस्वर्णां आभ्यां देवाः। ओ३म् मधु मन्था मायशश्चाहं आपाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 14-जून-1992 स्थान: लाजपत नगर, नई दिल्ली

९ विष्णु के स्वरूप 20-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी मान गये हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता-परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं क्यांकि वह चैतन्य हैं विज्ञानमयी हैं। क्यांकि उसका जो ज्ञान और विज्ञान है वह अनन्तमयी है। क्योकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं और परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता-परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में रत्त हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान इतना अनन्तमयी है क्या कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा से रहित हैं हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें। वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी यह जड़ और चैतन्यमयी जगत दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड का वह मूलक बना हुआ है और उसका ज्ञान और विज्ञान इतना महान और पवित्रतम कहलाता है क्या सृष्टि के आदि से ही मानव उसके ऊपर अन्वेक्षण करता रहता है। तो हम सर्वत्र प्राणी जितने भी हैं वह सर्वत्र उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का अन्वेक्षण करते रहें अथवा उसके ज्ञान में ही रत्त रह करके अपने मानवीयत्व को ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें कि वह अनन्तमयी हैं।

विष्णु शब्द की व्याख्या

तो आओ मुनिवरों आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है कि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में प्रायः विष्णु का वर्णन आ रहा था और यह उच्चारण किया जा रहा था विष्णु ब्रह्मा, ब्रह्मा ऋतम वाचन नमम ब्रम्हे ऋतम देवा। वेद का मन्त्र कहता है कि परमात्मा का नामोकरण विष्णु माना गया है क्योंकि वह पालन करने वाला है और पालना का मूलक माना गया है। तो वह परमपिता-परमात्मा का नामोकरण विष्णु है परन्तु जब हम पर्यायवाची शब्दों में प्रवेश करते हैं और पर्यायवाचियों में अमृतम मानों देखो यहां नाना रूपों में विष्णु दृष्टिपात आता रहता है। जैसे विष्णु नाम परमात्मा का है इसी प्रकार विष्णु नाम आत्मा का है और विष्णु नाम सूर्य का है और विष्णु नाम माता का है और विष्णु नाम और भी नाना प्रकार के प्रयायवाची माने गये हैं। परन्तु आज मैं पर्यायवाची शब्दों में न जाता हुआ केवल यह कि वह परमपिता-परमात्मा विष्णु है और वह पालन करने वाला है। परन्तु जहां भी पालना का मूलक आता है, प्रसंग आता है वही विष्णु शब्द हमें दृष्टिपात आने लगता है और वह नाना मानों रूपों में दृष्टिपात आने लगता है जैसे विष्णु नाम परमात्मा का है तो आत्मा का नाम भी है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा जो सृष्टि का नियन्ता अथवा निर्माणवेत्ता है, नियामक है। तो हम उस परमपिता-परमात्मा विष्णु की याचना करते रहें। परन्तु देखो जहां विष्णु नाम बेटा परमपिता-परमात्मा जो पालना में नियमित रहने वाला है जैसे मानों देखो पालना में परमपिता-परमात्मा इसी प्रकार पालना के मूल में माता भी विद्यमान होती है। तो माता का नाम भी विष्णु माना गया है। मेरे प्यारे देखो पालना में हम जैसे शिशुओं का पालन करने वाली वह अमृतम ब्रह्मा वह माता कहलाती है। माता ही बेटा पालन कर रही है। लोरियों का पान करती कहती है बुद्धम, शुद्धम, निरंजन। इस प्रकार मुनिवरों देखो अपने

उदगार गाती रहती है और लोरियों का पान कराती मानों देखो उसका पालन कर रही है तो इसलिए माता का नाम भी विष्णु माना गया है क्योंकि वह पालना के मूल में विद्यमान रहती है, पालना करने वाली लोरियों का पान कराती है। तो माता अपने विचारों को महान और विचित्रता में ले जाती है मानों देखो उसे लोरियों का पान कराती है। तो उस माता का नाम विष्णु है क्योंकि वह पालना के मूल में सदैव विद्यमान रहती है।

तो जहां माता का नाम विष्णु है वही बेटा देखो माता तीनों गुणों में निहित रहने वाली है मानों देखो तीनों गुणात्मक यह ब्रह्मांण्ड अपने में परणित होता रहा है। त्रिगुणात्मक मानों देखां सत, रज और तम मानों देखो यह तीन प्रकार के गुणों से यह ब्रह्मांण्ड अपने में सुशोभित हो रहा है और यह ब्रह्मांण्ड मानों तीनों गुणों में निहित रहने वाला है। प्रत्येक मानव के अन्त जीवन में बेटा देखो यह तीन गुण विद्यमान होते हैं। सतोगुण में पालना है और रजोगुण में अनुशासन है और तमोगुण में मेरे पुत्रो देखो अमृतम् उत्पत्ति का मूल विद्यमान रहता है। तो इसीलिए माता में तीनां गुणों का व्यवधान प्राप्त होता रहता है। माता बेटा सतोगुण से पालन करने वाली है और रजोगुण में उसको हम अपने में अनुशासन करती है और तमोगुण में मानों देखो उत्पत्ति के मूल में वह माता विद्यमान रहती है। तो बेटा देखो उस माता का नाम विष्णु है और वेद मन्त्र कहता है विष्णु ब्रह्मा व्रते देवत्वाम हे माता तू विष्णु है। वेद ने तुझे विष्णु कहां है परन्तु जहां विष्णु है वहां अनुशासन में रहने वाली मानों देखो रज में विद्यमान है और तमोगुण में बेटा देखो उत्पत्ति का मूल है परन्तु वहां भी एक दुसरे का एक दुसरे में समावेश होता हुआ दुष्टिपात होता रहता है, वही सतोगुण है, वही रजोगुण है, और वही तमोगुण के मूल में विद्यमान रहता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा जो तमोगुण के रूप में विद्यमान जो माता को अपने में मानों देखो निहित हो के अपने में मानों पालना का मूल विद्यमान रहता है।

आत्मा का नाम भी विष्णु

आओ बेटा! देखो जहां परमात्मा का नाम विष्णु है वहां विष्णु नाम बेटा देखो माता को भी कहां गया है जहां माता का नाम विष्णु है वही आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है। मेरे प्यारे आत्मा जब तक मानव के शरीर में विद्यमान रहती है तो देखो यह मानव का शरीर चेतनित बना रहता है, वह चेतना में पालना के मूल में विद्यमान रहती है। यदि आत्मा जब इस शरीर से निकल जाती है तो मानव का शरीर एक बिन्दु की नाइ बन जाता है परन्तु जैसे बिन्दु अप्रतम मानों शून्यत्व को प्राप्त हो जाता है, इसी प्रकार आत्मा भी मानों देखो पालना के मूल में विद्यमान है। जब तक आत्मा इस शरीर में मानों विद्यमान रहता है तब तक मानव का शरीर चेतनित बना रहता है और जब आत्मा निकल जाता है तो यह मानव का एक शरीर नहीं मानों शव के रूप में विद्यमान हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि विष्णु नाम बेटा जहां पालना का मूलक माना गया है वही विष्णु शब्द की विशेषता मानी गई है। तो इसीलिए आत्मा का नाम भी विष्णु माना गया है।

अक्षय-क्षीर-सागर में विष्णु भगवान

तो मेरे प्यारे! देखो जालवी ऋषि एक समय महर्षि आस्काचार्य के द्वार पर विद्यमान थे। तो महर्षि आस्काचार्य और देखो जालवी ऋषि दोनों विद्यमान थे। महर्षि जालवी जी ने यह प्रश्न किया कि महाराज यह आत्मा मानों देखो वृत्त कहलाता है और यह मानव ब्रह्मणा व्रतम देवत-प्रवाहः। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने ऋषि से प्रश्न किया क्या महाराज ये जो अक्षय क्षीर सागर में रहने वाला विष्णु है तो उस समय आस्काचार्य ने उत्तर देते हुए कहां क्या यह आत्मा ब्रह्मणां ब्रहे कहते हैं कि अक्षय क्षीर सागर में विष्णु वास कर रहा है और वह अक्षय क्षीर सागर में जब वास करता है तो वही विष्णु है जो कल्याण कारक है। मानों देखो वह अप्रतम नारद अपनी वीणा को लिए हुए और गन्धर्व अपने में गान गाता हुआ बेटा अपने में मौन हो जाता है और लक्ष्मी चरणों में

ओत-प्रोत हो जाती है। तो विचार आता रहता है कि वह आत्मा का नाम यहां विष्णु शब्द से सम्बोधित किया गया है। मेरे प्यारे देखो जब यह आत्मा जब यौगिक बन जाता है, यौगिक मानों क्षेत्र में प्रवेश करता है तो उस समय यह अक्षय क्षीर सागर में वास करता है और अक्षय-क्षीर-सागर में जब पहुंच जाता है तो बेटा देखो वही नारद अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके इसके समीप आना प्रारम्भ हो जाता है और नारद अपना गन्धर्व गान गाता हुआ मंगलम ब्रह्मे देखो गन्धर्व गान गाने लगता है। आचार्यों ने इसकी विवेचना करते हुए कहाँ है क्या नारद वह कौन है जो ज्ञान गाता अपनी वीणा के सहित बेटा वही तो नारद कहलाता है। यह चंचल है और मन चंचल होने से इसको नारद कहां गया है और मुनिवरों देखो अक्षम ब्रह्मा यह अपनी चंचल रूपी जो वीणा है उसको उसका तारतम्य बना लेता है और वह तारतम्य बना करके उसको स्वरों में परणित कर देता है वह स्वर सगम में प्रवेश करता हुआ मानों देखो अपने में अपनेपन का व्यवधान करने लगता है और वह जो गन्धर्व जिसका नाम बुद्धि वाचक है मानों वह गान गाने लगती है अमृतम ब्रह्मा वर्णस्सुतम ब्रह्मा मेरे प्यारे देखो वह अपने में गन्धर्व बन करके गान गाना प्रारम्भ करती है। अपराम भूतम ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो वही तो अपने में वृत्ति कहलाता है। तो विचार आता रहता है कि गन्धर्व नाम बुद्धि का है और मन नाम नारद का है और लक्ष्मी बेटा देखो उसके योगी के चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है।

हृदय का परमपिता-परमात्मा से मिलान

जब यह योगाभ्यास करता है मानों वह आत्मा को जानने के लिए तो बेटा देखो यह अपने में योगाभ्यास करता है यह मानों देखो कहीं हठ योग प्रदीपका में रमण करने लगता है कहीं ध्यानावस्थित हो जाता है। तो विचार आता है बेटा देखो वह जो आत्माम भूतम ब्रह्मा यह जो विष्णु है जब यह प्राण के साथ में धुक-धुकी लगाता है तो बेटा सबसे प्रथम यह मूलाधार में जाता है। सबसे प्रथम मानों देखो मूलाधार से गमन करता हुआ नाभि चक्र में प्रवेश करता है और नाभि चक्र में बेटा जो नाना प्रकार के मानों वायु गमन करती है उस पर अधिपत्य करने लगता है। आगे गमन करता है तो वह हृदय चक्र में प्रवेश हो जाता है जिस हृदय का मिलान योगीजन परमपिता-परमात्मा से किया करते हैं मानों उसी में यह रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे देखो हृदय-स्थली में जब प्रवेश होता है तो नाना प्रकार के हृदयों का गम-स्वामी बन जाता है उसके पश्चात जब यह प्राणों की धुक-धुकी लगाता हुआ जब यह पंच चक्र में जाता है तो उदगीत गाना शान्त हो जाता है परन्तु देखो वहां संसार में कंठित हो जाता है और अपने में अपनेपन को भासने लगता है।

त्रिवेणी का स्नान

तो मुनिवरों! देखो उसके जब यह मानों देखो स्वाधिष्ट और व्रेत चक्र में जब प्रवेश करता है वहां से आगे बेटा देखो यह त्रिवेणी का स्नान करता है। त्रिवेणी उसे कहा जाता है यौगिक परिभाषा में जहां इंगला, पिंगला, सुषुम्नां तीनों नाड़ियों का मिलान होता है और तीनो नाड़ी मानों देखो उसमे स्नान क्या मानों उसमें अपना स्वर संगम मिलाता हुआ और उसी में रत्त हो करके बेटा स्नान की कृतियों में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब आचार्यों की वार्ताए मुझे स्मरण आने लगती हैं तो आचार्यों ने बेटा इसमे अपना-अपना मन्तव्य दिया है और मन्तव्य देते हुए कहां है कि त्रिवेणी कहते हैं इगला, पिगला, सुषुम्ना यह तीन प्रकार की मानों देखो नाड़ियां कहलाती हैं। देखो इंगला, पिंगला, सुषुम्ना का जहां मिलान होता है उसको त्रिवेणी कहते है और अगले स्थान में बेटा देखो त्रिजटा आती है जहाँ तीनो नाड़ियां मिल करके बेटा देखो वह त्रि देखो त्रिजटा में अप्रतम मानों उसमें प्रवेश करते हुए यह तीनों नाड़ियों का एक स्वर बन जाता है और वहां से चल करके बेटा देखो यह ब्रह्मरंध में प्रवेश हो जाता है जहाँ जितना भी परमात्मा का ब्रह्माण्ड है वह योगी

मानों देखो बेटा उसे अपने में साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगता है। तो बेटा देखो उस आत्मा का नाम विष्णु है जब इस प्रकार का योगेश्वर बन जाता है तो बेटा लक्ष्मी उसके चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है और मन अपनी चंचल रूपी वीणा को ले करके संगत आ जाता है और गन्धर्व गान गाता हुआ मानों देखो वह यशोगान गाने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो वह अक्षय-क्षीर-सागर में जहां विवेक में प्रवेश करता हुआ बेटा यह अक्षय-क्षीर सागर में शेषनाग की शैय्या पर विद्यमान हो जाता है ऐसे यौगिक आत्मा का मेरे प्यारे देखो वह पांच फनो वाला जो शेष नाग है बेटा देखो उसको योगी नीचे दबा कर लेता है और दबा करके मानों उसको अपनी शैय्या बना लेता है। मेरे प्यारे देखो पांच फनों वाला शेष-नाग कौन है? मेरे प्यारे आचार्यों ने कहा समधन्म् ब्रह्मी कृपा। मेरे प्यारे देखो वह तीन प्रकार का जो मानों फनों वाला शेष नाग है वह मुनिवरों देखो काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि यह पांच फनों वाला शेष नाग कहा जाता है। तो मेरे प्यारे देखो जब यह शेष नाग की शैय्या पर विद्यमान होता है तो उस समय अमृतम ब्रह्मा यह लक्ष्मी जो संसार को लुभाने वाली है उस संसार को मानों अपने में रत्त कराने वाली है। तो मुगमः ब्रह्मे यह उसकी आत्म ब्रह्मा यह लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है।

यौगिक-पार-लौकिक-परिभाषाएँ

मेरे प्यारे देखो यह हमारे यहां आत्मा का नाम विष्णु माना गया है। विष्णु के वैदिक-साहित्य में बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। बेटा! हमारे यहां दो प्रकार की परिभाषाएं मानी जाती हैं। एक मानों यौगिक है एक पारलौकिक है। लौकिक उसे कहा जाता है जहां शब्दों को सजातीय बनाया जाता है और पारलौकिक उसे कहा जाता है जब अलंकार को ले करके बेटा आत्मा और परमात्मा से जिसका मिलन होता है मानों देखो उसको हमारे यहां अमृतम देखो पारलौकिक कहा जाता है। तो आओ मेरे प्यारे आज का हमारा वेद-मन्त्र अपने में उदगीत गाता हुआ कहता है विष्णु ब्रह्मा, ब्रह्मा आत्माम यह आत्मा का नाम विष्णु है और विष्णु ही बेटा देखो हमारा कल्याणकारक है। जहां परमात्मा का नाम विष्णु है जहां विष्णु नाम आत्मा का है जहां विष्णु नाम अक्षय-क्षीर-सागर में रहता है वहीं बेटा देखो विष्णु नाम राजा का है। उस राजा का नाम विष्णु है जो बेटा अपनी प्रजा को आनन्दित मानों अपने में क्रियाकलाप ऊर्ध्वा में गमन करता है। वह क्रियाकलापी देखो राजा ही अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता हुआ विष्णु रूप बन जाता है। इसी प्रकार बेटा देखो अमृतम प्रवहे जैसे परमात्मा इस संसार का पालन करने वाला है ऐसे ही राजा अपने राष्ट्र का पालन करने वाला है और वह पालना के मूल में जब ही रहता है जब कि स्वयं राजा अपनी इन्द्रियों पर जय करने वाला होता है। इन्द्रियों पर जो संयमी है वही पुरूष बेटा देखो अपने को अपनेपन में गमन कराता रहता है अपने में धारयामी बनाता रहता है जिससे बेटा देखो विष्णु की संज्ञा उसे प्रदान की जाती है और राजा का नाम विष्णु है क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों में देखो वह अपने में ही मानों देखो रजतव में विद्यमान होता है। मेरे प्यारे! देखो जहां विष्णु नाम देखो यहां राजा का है वहीं विष्णु नाम मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म सुर्य को कहा जाता है। सुर्य का नाम विष्णु है क्योकि वह पालना करने वाला है-प्रातः काल में जब उदय होता है तो यह नाना प्रकार की किरणों को ले करके उदय होता है। मानों देखो एक उषा नाम की किरण है एक कान्ता नाम की किरण कहलाती है मानों देखो एक किरण हमारे यहां उषाजंलि कहलाती है जो अहिल्या के रूप में विद्यमान होती है। तो मेरे प्यारे यह नाना प्रकार की किरणों वाला जो मानों देखो यह सूर्य हमें प्रकाश देता है और नाना प्रकार की उर्ज्वा देता है उस उर्ज्वा से पालन कर रहा है। तो जहां भी पालना के मूल में आता है उसी का नाम विष्णु के रूप में बेटा वर्णन किया गया है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! हम तेरी उपासना करते रहें। तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं विष्णु की प्रत्येक अमृतम ब्रह्मा देखो उसकी विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि

विष्णु ही मानों देखो हमारी पालना के मूल में विद्यमान रहता है। आज जब हम उसकी महिमा को अपने में धारण करते हैं तो अपने में ही मानों अपनेपन का हमें भान होने लगता है। तो विचार आता है कि विष्णु नाम बेटा जहां हमारे यहां पर्यायवाची शब्दों में दो प्रकार की परिभाषाओं में निहित रहता है। एक वह जो देखो वास्तविक साहित्य का जिससे निर्माण होता है और एक मानों देखो वह जिससे पार-लौकिक आध्यात्मिकवाद में जब मानव प्रवेश करता है तो वह बेटा देखो उसमे रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे देखो विष्णु राजा वह कहलाता है जो चार भुजो वाला होता है और चार भुजां वाले को विष्णु कहां जाता है।

भगवान् राम द्वारा विष्णु की विवेचना

मेरे प्यारे देखो मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा त्रेता के काल में मानों देखो भगवान् राम महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा बेटा अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन करते एक समय प्रातः-कालीन बेटा देखो राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी दोनां विद्यमान थे और दोनों ने कहां प्रभु! हमें कोई उपदेश दीजिए जिससे हम मानों कुछ अध्ययन कर सके। तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने प्रातः-कालीन बेटा उन्होंने एक मन्त्र का उद्गीत गाया और वेद मन्त्र में यह अमृतम विष्णु आत्माम भूतम ब्रह्मा राजन नमम् ब्रव्हे कृतम देवों विष्णु लोकाम पंचनम ब्रव्हे व्रताः ऐसा वेद-मन्त्र का बेटा न्यौदा में से उन्होंने उद्गीत गाया और उद्गीत गा करके उन्होंने कहां जाओ इस वेद मन्त्र को लेकर के अध्ययन करो। मेरे प्यारे देखो वह अध्ययन करने लगे और वह अपने में दोनों अध्ययन करने लगे कहीं विष्णु राजा का वाची बन जाता है कहीं वही वेद-मन्त्र बेटा देखो वह अपने में ही मानों देखो परमात्मा का गुण गाता है कहीं वही वेद-मन्त्र बेटा देखो लोक-लोकान्तरों में विष्णु की मानों समावेषता उन्हें दृष्टिपात आने लगी। मेरे प्यारे! देखो दोनों अपने में अध्ययन करते रहे, ब्रह्मचारी थे, ब्रह्म का चिन्तन करने वाले थे। मेरे प्यारे देखो उन्होंने प्रातःकाल से सायंकाल हो गया परन्तु अपने में कोई निपटारा नही कर सके।

जब अपने में निपटारा नहीं कर सके तो मेरे प्यारे! देखो वह सायंकाल को रात्रि का जब प्रहर प्रथम पड़ा मानों चरण आया तो उन्होंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानों विष्णु के सम्बन्ध में जानना चाहा। तो मेरे प्यारे देखो दोनों ने कहा हे प्रभु! अमृतम् वह अपने में ध्यानावस्थित थे। मेरे प्यारे उन्होंने वेदमन्त्र का उद्गीत गाया और उद्गीत गाकर ये कहां मातृम ब्रह्मे अमृतम हे प्रभु इसको हम नहीं जान सके हैं। तो मेरे प्यारे! देखो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहां विराजो। वे दोनों विराजमान हो गये। उन्होंने कहां तुमने क्या जाना हैं विष्णु के सम्बन्धों में? तो भगवान् राम उपस्थित हुए दोनों ब्रह्मचारी उपस्थित हुए उन्होंने कहा प्रभु हम विष्णु के शब्द में ये जाने हैं क्या विष्णु लोक-लोकन्तरों को कहते हैं। जो लोक-लोकान्तर एक दूसरे में एक दूसरे का पालन कर रहा है जैसे सूर्य के अन्तर्गत नाना पृथ्वियाँ देखो अपने में गमन करती हैं और वह उसी को लेकर अपने में पालना में मानों सहवर्तम मानों वह अपने में देखो सहपृथ्वियों का पालन कर रहा है और वह पालक है मानों देखो जो पृथ्वी किसी लोक का पालक है। इसी प्रकार सूर्य मानों देखो बृहस्पति का पालक है और बृहस्पति आरूणी का पालक है और आरुणी मानों देखो ध्रुव आरुणी देखो अमृतम आरुणी देखो धुरव आरुणी का पालक है और मानो देखो धुरव देखो मूल नक्षत्रों का पालक अम्ब्रहे कहा गया है इसी प्रकार भगवन् देखो एक दूसरे में लोक समावेश होते हुए मुझे दृष्टिपात आ रहे हैं और वह एक दूसरे का पालक है। परन्तु जहाँ पालना का प्रसंग आता है वही भगवन् देखो ब्रह्मणे व्रतप प्रवाहा असुति दिव्याः मानों मुझे देखो वहीं विष्णु का शब्द सिद्ध होता है। हे प्रभु! एक दूसरे के पालक का नाम वैदिक-साहित्य में विष्णु कहा जाता है सिद्ध हे प्रभु! हम तो ये जान पाये हैं परन्तु देखो पुनः वशिष्ट ने कहा क्या तुमने और क्या जाना है? उन्होंने कहां कहीं प्रभु! हम राजा को देखो विष्णु शब्द में दृष्टिपात किया है और वह राजा विष्णु जो चार भुजों वाला चार प्रकार की नियमावलियों का जो

निर्माण करने वाला है उस राजा का नाम विष्णु है और मानम ब्रह्मा कृतो मानों देखो विष्णु जो पालक है और वह चारों भुजो वाला है। चार प्रकार के देखो भुज नाम नियमों को कहा गया है और वेद-मन्त्र कहता है विष्णु ब्रहण ब्रह्मा अतुमजन्म ब्रही कृतम देवाः अस्सुतम थम नाम भूतम ब्रह्मा विष्णु नमम ब्रह्मा कलम ब्रहे ऋतम हे राम! संगम ब्रव्हे ऋतम देवत्वाम् वेदमन्त्र की विवेचना करते हुए दोनों ब्रह्मचारियों ने कहां प्रभु यह राजा का वाचक शब्द है। राजा के सबसे प्रथम जब राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाने के लिए नियम बनाता है तो सबसे प्रथम वह पदम का निर्माण करता है उसके पश्चात गदा का, उसके पश्चात वह चक्र का और शंख का मानों देखो वह चार प्रकार के नियमों का निर्माण करता है। सबसे प्रथम मानों देखो वह जो अमृतम जो नव गृहा वृति कहलाते हैं उसको पदम कहते हैं वह सदाचार का प्रतीक है और भगवन् देखो गदा नाम मानों देखो वह प्रहार का प्रतीक है और देखो वह जो ध्वनि है अमृतम देखो चक्र है वह संस्कृति का प्रतीक कहा गया है और जो मानों देखो जो ध्वनि है वह देवन का प्रतीक माना गया है। हे प्रभु! मेरे विचार में तो यह आता है जिस राजा के राष्ट्र में मानों पदम होता है पदम कहते हैं, चरित्र को जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र होता है मानवीयता होती है वह राजा ऊँचा कहलाता है। वह राजा देखो मानों अपने में पदम धारी है और वह परमात्मा भूतम ब्रह्मा देवत्वाम एक कन्या राष्ट्र के छोर से एक छोर से दूसरे छोर पे चली जाए परन्तु देखो उसे पुत्री, माता की दृष्टि से पान करने वाला यह समाज हो। समाज का इतना ऊर्ध्वा में देखो निर्माण होना चाहिए और अग्नम ब्रह्मा ब्रव्हे व्रतम जैसे मानों देखो पदम अवृति अन्तरिक्ष को कहा जाता है और देखो उसमें जो भी क्रियाकलाप हो रहा है वह प्रत्येक प्राणी के लिए एक तुल्य हो रहा है इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में एक सा नियम होना चाहिए। राजा और प्रजा मानों में किसी प्रकार को अन्तर्द्धन्द नही होना चाहिए। यदि राजा मानों दूषित हो गया है तो प्रजा उसे देखो पदम के आधार पर दण्डित करने वाली हो और प्रजा दूषित हो गई है तो राजा अपने पदम को ले करके उसको दण्ड देने के लिए तत्पर हो तो मानों देखो उसका नाम पदम है और द्वितीयाम ब्रह्मा कृति मानों देखो द्वितीय उस राजा पर गदा होनी चाहिए। गदा कहते है क्षत्रिय हों और वह मानों देखो वह अपने में किसी प्रकार का दूषितपना न हो, न्यायक हो अपने में ज्ञान का प्रतीक ज्ञान को भी गदा अमृत कहते हैं। मानों देखो इस प्रकार राजा के राष्ट्र में तृतीय जो नियम है वह चक्र होना चाहिए। अपनी संस्कृति का प्रसार होना चाहिए। जिस संस्कृति को लेकर के राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बना सके अपने ऊंचे राष्ट्र को अपनाता रहे और उसमें सदाचार की शिक्षा दे करके और चक्र को ले करके अपनी संस्कृति इतनी ऊर्ध्वा में गमन करने वाली हो। मेरे प्यारे! देखो तृतीय वेद का प्रतीक वेद का गान गाने वाला ब्राह्मणत्व होना चाहिए, बुद्धिमान होना चाहिए। वह राजा के राष्ट्र में वेदों का गान गाने वाला जैसे जटा पाठ, घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त् और अनुदात्त में गान गाने वाला हो तो मानों देखो इस प्रकार का जो गान गाने वाला राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण है तो राजा का राष्ट्र ऊंचा बनेगा। ध्वनि भी पवित्र हो। वाणी के ऊपर देखो हमारा आधिपत्य होना चाहिए। तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार विनियम यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते बेटा! देखो विष्णु के रूप में अपने को दृष्टिपात करते हुए।

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा मन्तव्य बहुत ऊंचा है मानों देखो तुमने जो विष्णु की विवेचनाएँ जानी है वह बड़ी विचित्र हैं परन्तु देखो यह अमृतम ब्रह्मा व्रती देवा यही विश्णु की विवेचना मानी जाती है। परन्तु भगवान राम ने कहां प्रभु! और भी शेष है जिसका आपको हमें निर्णय देना है क्योंकि हम अपने में मानों जान नहीं सके हैं। कल आप से हम प्रश्न करेगे उसका उत्तर आपको देना होगा। वशिष्ठ ने बेटा! यह स्वीकार कर लिया। मेरे प्यारे! उन्होंने कहां जाओ तुम विश्राम करों और अब यह तुम्हारा

अध्याय समाप्त हुआ कल इसके ऊपर विचार-विनियम करेंगें।

तो बेटा! आज का हमारा विचार क्या मेरे प्यारे! देखो विष्णु की इतनी विस्तृत विवेचना है मैं इन्ही शब्दों की व्याख्या तुम्हें बेटा परिचय रूप में दे सका हूँ। समय मिलेगा तो बेटा शेष चर्चाएेें कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या है क्या वह परमपिता-परमात्मा विष्णु है पालन करने वाला वह नियामक है निर्माण करने वाला है और वही मानों देखो ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला है। हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें और उसकी महिमा को जानते रहें। बेटा! जो परमात्मा हमारे अन्तः-करण में विद्यमान है और जहां भी पालना का मूलक है वही मानों विष्णु को प्रसिद्ध किया गया है विष्णु की विवेचना की जाती है। वहीं विष्णु हमें दृष्टिपात होता है चाहे वह सूर्य के रूप में हो, चाहे वह आत्मा के रूप में हो, चाहे वह माता के रूप में हो। बेटा! देखो उसको मैं उसी प्रकार दृष्टिपात करूंगा जैसा हमारा वेद-मन्त्र कहता है।

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए विष्णु रूप में हम परमात्मा को दृष्टिपात करते रहें। यह है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें बेटा देखो राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी मानों जब दोनों अपने गुरू से प्रश्न करें वह उसका उत्तर हम कल दें सकेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या क्या बेटा! देखो यौगिक आत्मा का नाम विष्णु है, पालना करने वाली माता का नाम विष्णु है, परमात्मा का नाम विष्णु है। तो हम विष्णु की याचना करते हुए इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करें। तो यह है बेटा आज का वाक् कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवा आभ्याम् रथम्म वाचन्नमः। ओ३म् तनुः प्रजाम् आपा रेवाः। ओ३म् यशश्चां वायु शतः मन्प्रणहम् आपाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनॉक : 20-जून-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थानः आर्य समाज इन्द्री, करनाल, हरयाणा

१० याग के होता (उत्तरार्द्ध) 21-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गया जाता है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है इस सर्वत्र ब्रह्मांण्ड के मूल में वह विद्यमान हैं। वे एक-एक कण-कण में व्याप्त हैं। कोई स्थली ऐसी नहीं है जहां वह परमपिता-परमात्मा न हों। समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नहीं है जहां वह परमपिता-परमात्मा न हों और पर्वतों की कोई भी गुफा ऐसी नहीं है। वह सर्वत्र में विद्यमान रहते हैं। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा को सर्वज्ञता में दृष्टिपात करते रहें और जब मानव के हृदय में यह नृत बना रहेगा कि जहाँ तेरा मन जाता है वहीं वह परमपिता-परमात्मा विद्यमान हैं तो मानव नाना प्रकार की त्रुटियों से दूरी हो जाता है। तो इसीलिए परमपिता-परमात्मा को हम सर्वज्ञ और उसको मानों सर्वव्यापी हमें स्वीकार करना चाहिए। हमारे ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। कहीं मानां इस शरीर के अर्न्तजगत में पहुंचने के पश्चात मानव ने यह विचार आत्माम भूतम भू वर्णास्सुतम-वेद का मन्त्र ये कहता है कि आत्मा का जो लोक है वह पंच-महाभौतिकवाद कहलाया जाता है क्योंकि आत्मा पंच-महाभूतो में रत्त रहने वाला है और यह पंच-महाभूतों का एक शरीर विद्यमान है जिसमें यह आत्मा वास करता है आत्माम लोक स्पचितम् चितम ब्रह्मा-मानों वह देखो अपने में ही यह अत्रीखम आत्मा का लोक यह पंच-महाभूत है। नाना, ऋषि मुनि बेटा! अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं और विचार-विनिमय करते रहे हैं कि वह परमपिता-परमात्मा जो अनुपम है मानों जो सर्वज्ञ विद्यमान है वहीं तो हमारे अंग-संग विद्यमान रहते हैं।

मानव प्रेरणा का स्रोत

बेटा! आज का हमारा वेद-मन्त्र हमें क्या प्रेरणा दे रहा है क्योंकि मानव वास्तव में परम्परागतों से प्रेरणा का स्रोत्र है और प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है, प्रेरित होता रहता है और अपने जीवन को महान बनाने का प्रयास करता है। तो इसलिए प्रत्येक वेद का मन्त्र हमें सम्बोधित करता रहता है अथवा प्रेरणा देता रहता है। वह परमात्मा का जो अनुपम ज्ञान है वह प्रेरणा का स्रोत्र है या जितना भी ज्ञान और विज्ञान है यह आध्यात्मिकवाद है यह दूसरों से प्रेरणा प्राप्त करता रहता है और प्रेरित हो करके अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहा है। प्रकाशाम भूतम ब्रह्मा-मानव! बेटा देखो प्रकाश के लिए सदैव विवेचना करता रहा है। मानव कहता है हे मानव तू प्रकाश में चल और उस प्रकाश के लिए तू अपने को रत्त कर जहां प्रकाश से प्रकाश रहता है अंधकार नहीं होता। तो मेरे प्यारे! हमारे यहां वेद के आचार्यों ने कहा है क्या प्रकाश मानों हमारे यहां वेद को माना गया है परन्तु जब हम आचार्यों के समीप विद्यमान होते रहे हैं तो हम यह प्रश्न करते रहे हैं कि सूर्य का नाम भी तो विष्णु है और वह प्रकाशक है। अमृतम ब्रह्मा देखो आचार्य कहते हैं कि यह सूर्य नेत्रों का प्रकाश है परन्तु मानव के अन्तकरण को प्रकाशित करने वाला वेदरूपी प्रकाश है। तो हमें उस प्रकाश के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिए जिस प्रकाश के लिए हमारे आचार्यों ने, ऋषि-मुनियों ने नाना प्रकार का तप किया है और अपने को खेंचरी मुद्रा में ले गये हैं कहीं मानों संकल्पवादी बन करके प्रेरणा को प्राप्त होते रहें हैं। कहीं मानों प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान और देखो उदान में प्रवेश करते रहे हैं परन्तु मानव प्रकाश के लिए सदैव वेदनित होता रहा है। तो हमारे यहां बेटा! देखो अमृतम ब्रह्मा वेद का ऋषि कहता है यज्ञोमयी

विष्णु! मेरे प्यारे देखो याग अपने में विष्णु कहलाता है और विष्णु कहते हैं जो कल्याण कारक है। बेटा हम अपने में प्रकाश के लिए सदैव उपास्य बने रहें।

तप की व्याख्या

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि-मुनि अपना-अपना मन्तव्य प्रगट करते रहे हैं। आज मैं बेटा! तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में नाना ब्रह्मचारी प्रायः अपने में अनुसंधान करते रहे हैं और महर्षि अपनम ब्रह्मे ऋतम-महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातः कालीन न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते रहे हैं और अध्ययन में आया तपम ब्रह्मा वर्णस्सुतम प्रव्हे देवत्वाम तपाः वेद का ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें तप करना हैं और तपस्वी ही मानों प्रकाश में रत्त रहने वाला है परन्तु प्रकाश के लिए रत्तम ब्रह्मा प्रकाशाम तपाः वह तप किसे कहा जाता है? तो यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के तपों की विवेचना की जाती है। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्रियों के ज्ञान और विज्ञान को जानने का नाम तप है। इन्द्रियों से सुदृष्टिपान करना ही हमारा तप है और तप उसे कहते हैं जो प्रत्येक अपने में सुकृतियों में रत्त रहने वाला इस सन्निधान में परणित हो जाता है। तो विचारवेत्ता कहते हैं हे मानव तू प्रकाश के लिए रत्त हो जा। तो बेटा! तपाम ब्रह्मा तपाम ब्रह्मे वह मानव को तपस्वी बनना चाहिए। तो तप के लिए उन्होंने बड़ी विवेचना की है। तो ब्रह्मचारियां को उपदेश देने लगे परन्तु देखो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आप क्या चाहते हैं? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि वेद-मन्त्र कहता है तपम ब्रह्मा तपो वर्णस्सुतम क्या हे ब्रह्मचारी! हमें तप करना चाहिए, प्रत्येक ब्रह्मचारी तपों में रहना चाहिए क्योंकि ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मणाम् ब्रह्मा ऋतम देवा क्या वह ब्रह्मचारी ही ब्रह्मणाम ब्रव्हे ब्रह्मचारी ही मानों देखो तपस्वी होता है जब वह ब्रह्म और चरी को, दोनों को, जानने के लिए तत्पर हो जाता है। हमारे यहां ब्रह्म नाम परमपिता-परमात्मा का है और चरी नाम प्रकृति का है। जो दोनों का समन्वय करने वाला होता है वह ब्रह्मचारी है। उसे आचार्यों ने बेटा ब्रह्मवर्चोसी कहा है और ब्रह्मवर्चोसी बनना चाहिए क्योंकि ब्रह्मवर्चोसी वह कहलाता है जो ब्रह्म में विचरण करने वाला है।

हमारे यहां जब बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मेरे प्यारे! देखो जब न्यौदा में वेद-मन्त्रों में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते रहे तो मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने तीन प्रश्न अपने शतपथ-ब्राह्मण नाम की पोथी में किए हैं। उन्होंने कहा है कि ब्राह्मण कौन है? तो वेद का ऋषि कहता है ब्रह्मवर्चासम ब्राह्मण ऋतो। क्या ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में जो स्वीकार करता है उसका नाम ब्राह्मण है। वह ब्रह्मवर्चस्व कहलाता है तो मानों वह ब्राह्मण है। दूसरा प्रश्न किया क्या ब्रह्मचारी कौन है? तो, उसने कहा ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मणा व्रतम मानों देखो ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है। ब्रह्म की चरी को चरने वाले का नाम ब्रह्मचारी है। जब पुनः प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी कौन है? उसने कहा जो रक्षार्थी होता है, अपनी रक्षा करता है। तन-मन मानों देखो मन, कर्म, वचन और मन-मस्तिष्क से जो अपनी रक्षा करता है उसका नाम ब्रह्मचारी है। उन्होंने जब पुनः से यह प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी कौन है? तो उन्होंने कहा था कि एक-एक श्वांस में जो श्वांस को मनका बना करके ब्रह्म-सूत्र में पिरोना जानता है वह ब्रह्मचारी है। वह ब्रह्म में विचरण करने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि कहता है ब्रह्मवर्णनम् ब्रव्हा ऋते। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी पोथी शतपथ-ब्राह्मण में यह वर्णन करते हुए कहा कि एक-एक श्वांस को जो ब्रह्म-सूत्र में पिरोने वाला है वह ही तो बेटा! देखो ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में जो प्रवेश करना जानता है वहीं मेरी प्यारी माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट कर लेती है और ब्रह्मचारी

मानों अपने को प्राणेश्वर देखो वह जो प्राणेश्वर परमपिता-परमात्मा है उससे वार्ता प्रगट करता है। तो आज मैं बेटा तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में नहीं ले जाऊंगा। आज मैं आध्यात्मिकवाद के गम्भीर क्षेत्रों में न जाता हुआ केवल यह क्या ब्रह्मचारी अमृत देखो उन्होंने कहा ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? तृतीय प्रश्न किया कि ब्रह्म की चरी को कौन चरता है और ब्राह्मण और ब्रह्मचारी ही ब्रह्मचर्य-अमृतम् मानों ब्रह्म की चरी को चरता है। चरी कहते हैं बेटा परमात्मा का जो अनुपम ज्ञान है अथवा विज्ञान है उसको चरने वाले को कहा जाता है चरम ब्रह्मे जो उसमें गति करता रहता है चरने का अभिप्रायः जो उसमें गतिवान होता है और वह चरेवेति मानों वह अपने में गतिवान बना रहता है। तो आओ बेटा! मैं इस सम्बन्ध में अध्यात्मिकवाद में तुम्हें ले जाता हुआ केवल यह कि ब्रह्मणां ब्रह्मे की तीन प्रसंग ले करके ऋषि बेटा अपनी वार्ता प्रगट करता है और कहता है यममं ब्रह्मा देवत्वाम देवो ब्रह्माः। तो मेरे प्यारे! देखो आज मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की उस विद्यालय की चर्चा कर रहा था जहां याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों को इस प्रकार की शिक्षा देते हैं और नैतिकवाद में ब्रह्मचारी को ले जा करके बेटा! वह आत्मा परमात्मा और चरी की वार्ता प्रगट करता है। ब्रह्मचारी बेटा! अपने में महानता की ज्योति में प्रवेश कर जाता है।

कितने होताओं के द्वारा याग करें

तो विचार आता है बेटा! जब उन्होंने इस प्रकार का उद्गीत विचार दिया तो इतने में यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी उपस्थित हो गये और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आप ने तप के लिए बड़ा बल दिया है और याग के लिए बड़ा बल देते हैं। प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ। बेटा! उन्होंने, ब्रह्मचारियों ने एक रूपक बनाया। एक ब्रह्मचारी यजमान बन गया एक ब्रह्मचारी बेटा! देखो प्रश्न करने लगा। ऋषि से बोले कि हे प्रभु! एक यजमान मेरे समीप उपस्थित है और वह यज्ञ करना चाहता है तो प्रभु! याग कैसे करें, कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए? तो बेटा! यज्ञशाला में होताओं का अपना बड़ा महत्त्व माना गया है। यह आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों से ओत-प्रोत होने वाले शब्द हैं जो ऋषि ने बेटा अपने वाक् को अपने विचारों में व्यक्त किया कि उन्होंने कहा कि यजमान याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो परमपिता-परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो उन्होंने बेटा इस ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया इसी प्रकार ये परमात्मा का जो मानवीयत्व है यह भी एक ब्रह्माण्ड के नाहि है मानों देखो इस ब्रह्माण्ड का स्वामित्व करने वाला परमपिता-परमात्मा है और यह इस शरीर का नेतृत्व करने वाला आत्मा है।

चौबीस होताओं के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो उन्होंने वर्णन करते हुए कहा क्या यजमान जब याग करना चाहता है तो इसमें मन, मस्तिष्क को एकाग्र करता हुआ और वह चौबीस होताओं के द्वारा याग करे। चौबीस होता कौन से होते हैं बेटा! उन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि चौबीस होताओं में दस इन्द्रियां हैं और दस प्राण हैं। प्राणो में प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत्त, धनञ्जय कुरू और ऋकल ये दस प्राण कहलाते हैं और पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, पांच कर्मेन्द्रियां हैं मानों यह देखो दस। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार यह मानों चौबीस होता कहलाते हैं जिनके द्वारा बेटा यजमान अपने में याग करता है और वह कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा क्या प्राण ही तो भक्षण करने वाला है, प्राण ही है तो मानों देखो स्वाहा कह करके हूत करने वाला है। तो इस प्रकार ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा क्या हे यज्ञदत ब्रह्मचारी यजमान याग करना चाहता है तो चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए और चौबीस होताओं में दस प्राण हैं, दस इन्द्रियां हैं सर्वत्र जगत मानों देखो इसी में निहित रहता है। तो वैदिक आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने क्या हे यज्ञदत

ब्रह्मचारी यह चौबीस होताओं के द्वारा यजमान याग करे।

सत्रह होताओं के द्वारा याग

उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं जानना चाहता हूँ कि यजमान याग करना चाहता है कितने होताओ के द्वारा याग होना चाहिए? उन्होंनें कहा कि यजमान याग करना चाहता है तो सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। सत्रह होता कौन से होते हैं-मेरे प्यारे! दस प्राण हैं, पंच-तन्मात्राएं हैं और मन और बुद्धि यह मानों सत्रह होता कहलाते हैं और सत्रह होताओं के द्वारा जब यजमान याग करता है तो वह कहता है जब इस शरीर को त्यागा जाता है तो मुनिवरो! देखो यह स्थूल शरीर को त्याग करके यह सूक्ष्म शरीर रूप में मानों देखो आत्मा इस शरीर को त्याग देता है स्थूल को त्याग देता तो यह सूक्ष्म शरीर रह जाता है। सूक्ष्म शरीर में बेटा! देखो दस प्राण हैं और मन और बुद्धि और पञ्च-तन्मात्राएं कहलाती हैं। जब इस शरीर को त्याग करके आत्मा अपने चित्त के मण्डल को ले करके चला जाता है जिसमें बेटा देखो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। तो वैदिक आचार्यों ने वर्णन करते हुए कहा तपस्वियों ने ब्रह्मणां ब्रह्मा कृतो देवा मानों देखो वह सत्रह होताओं के द्वारा यजमान याग करे उसमें पंच प्रकृति की तन्मात्रा हों, दस प्राण हों और मन बुद्धि हो मानों देखो उसी के द्वारा अपने में देखो स्वाहा कहने वाला हो, उद्गीत गाने वाला हो। मेरे पुत्रो! देखो जब इस शरीर को त्याग करके आत्मा जाता है तो यह सूक्ष्म शरीर आत्मा का एक लोक कहलाता है यह इसको त्याग करके चला जाता है। उन्होंने कहा कि यजमान इस प्रकार अपने में याज्ञिक बनें।

ग्यारह होताओं के द्वारा याग

तो मेरे पुत्रो! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो वर्णन करते पुनः यज्ञदत ब्रह्मचारी ने प्रश्न किया हे प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? तो उन्होंने कहा कि यजमान याग करना चाहता है तो सत्रह न हो करके ग्यारह होताओं के द्वारा यजमान याग करे। मेरे प्यारे! देखो ग्यारह होता कौन से-मानों देखो दस इन्द्रियां हैं और ग्यारहवां मन है जो मुनिवरो! देखो रथ का सारथी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो जब यह शरीरम ब्रह्मा यह ग्यारह होता कहलाते हैं देखो दस-इन्द्रियां पांच-कर्मेन्द्रियां पांच ज्ञानेन्द्रियां और इसमें मानों देखो मन, मन इनमें देखो इन इन्द्रियों का सारथी बना हुआ है। जब इनको एकाग्र करके यजमान याग करता है तो मेरे प्यारे! देखो उसका याग सफलता को प्राप्त होता है अपने में महानता का जन्म हो जाता है। यह मनस्तम ब्रह्मा व्रतम देवत्वाम लोकाम हिरण्यम ब्रथाः तो मुनिवरो देखो यह अपने में याज्ञिक बना हुआ है परन्तु देखो ऋषि ने कहा कि प्रत्येक इन्द्रियों का जो देवत्व है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो स्वामित्व करने वाला है वह मन है यह मन ही सारथी है परन्तु मन ही जागृत है और मन ही सुषुप्ति है और मन ही मानों देखो स्वप्न को प्राप्त होता रहता है। बेटा! जब यह मानों देखो आत्मा के साथ में मन जागरूक रहता है तो संसार का द्रष्टा बना रहता है इन्द्रियों के साथ रहता है और जब यहीं मन जब स्वप्नवत में प्राप्त हो जाता है तो बेटा देखो शरीर में नद-नदियाँ नहीं होती परन्तु यह निर्माण करता रहता है यह निर्माणीत बना हुआ है और जब यह सुषुप्ति में चला जाता है तो बेटा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार मानों अपनी साम्यावस्था में परणित हो जाते है और यह मन मुनिवरो देखो वह आत्मा की शातम ब्रह्मे यह मन अपने में चित्त के साथ में रमण करता है। तो मेरे प्यारे! देखो जब उस प्रकार का विचार आचार्य ने वर्णन किया तो उन्होंने कहा इस प्रकार ग्यारह होताओ के द्वारा यजमान याग करे।

नौ होताओं के द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा,

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने हे ब्रह्मचारी! देखो यह नौ होताओं के द्वारा यजमान याग करे। इस मानव के शरीर में जब प्रभु ने इस मानव शरीर का सृजन किया तो इसमें नौ द्वारों का निर्माण किया मानों देखो नौ द्वार, नौ द्वारों में मानों देखो दो श्रोत्रों के छिद्र और दो नासिका के, दो नेत्रों के और एक मुखारबिन्दु और मानों एक उपस्थ और एक मानों यह नौ द्वार कहलाते हैं। इन नौ द्वारों में नौ ऋषि विद्यमान हैं जो अपने में याग कर रहे हैं। बेटा! किसी में जमदग्नि है किसी में कश्यप है तो किसी में वशिष्ठ है और किसी में विश्वामित्र है जो विश्व को अपना मित्र बना लेता है। इसी प्रकार बेटा देखो किसी में अत्रि है वाणी के द्वार पर देखो अत्रि विद्यमान है इसलिए अति आहार कर जाता है उसे अत्रि कहा जाता है। तो बेटा यह नौ द्वारो वाला जो हमारा मानवीयत्व शरीर कहलाता है आचार्यों ने बेटा इसका वर्णन करते हुए कहा है कि यह नौ द्वारम ब्रह्मा इनके द्वारा यजमान याग करे इनको एकाग्र इनके देवत्व को जान करके और जब वह अपने में याज्ञिक बनता है तो बेटा यज्ञम ब्रह्मा सफलम ब्रह्मे वह अपने में महानता को प्राप्त हो जाता है।

सप्त होताओं के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो उन्होंने पुनः कहा, यज्ञदत ने क्या प्रभु यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा यजमान याग करे? उन्होंने कहाँ यजमान को याग करना है तो वह देखो सप्त होताओं के द्वारा याग करे। वह सप्त होता बेटा देखो दो नेत्र है और दो श्रोत्र और मुनिवरों देखो दो नासिकाएं और एक मुखारबिन्दु यह सप्त यह मानों देखो सप्त होता कहलाते हैं। सप्त होता अपने में याग करते हैं ला करके नाना प्रकार का साकल्य आत्माम ब्रह्मणा देखो जपतम ब्रह्मे वह चित्त मण्डल में बेटा देखो उसे प्रवेश करते रहते हैं चित्राम भूतम ब्रह्मा। मेरे प्यारे! देखो कोई भी मानव साधक बनना चाहता है, परमात्मा के समीप जाना चाहता है तो मेरे प्यारे! देखो वह सप्त होताओं को जान करके मानों देखो परमपिता-परमात्मा की प्रतिभा में रत्त हो जाता है। आओ मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया वर्णन करने वाले आचार्य ने कहा, याज्ञवल्क्य ने कहा क्या इसी प्रकार जब हम सप्त होताओ को जानने लगते हैं तो हम सप्त-मण्डल में प्रवेश कर जाते हैं नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का स्वामित्व करने लगते हैं।

पंच होताओं के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो उस समय यजमान ने पुनः कहा देखो या अमृतम देखो यज्ञदत ने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा यजमान याग करना चाहता है तो पंच होता होने चाहिए। मानों यह पंच-महाभूत हैं और पंच-महाभूतों में बेटा अन्तरिक्ष है और देखो वायु है और तेजोमयी अग्नि है और जल और देखो गुरुत्व जिसे पृथ्वी कहा जाता है। यह पंच-महा और तरल-तवम ब्रह्मे जलम ब्रह्मा ऋतम मानव इनको जान करके याग करने वाला हो। जितना विज्ञान है संसार में चाहे वह परमपिता-परमात्मा से गुथा हुआ हो चाहे वह मानवीयता से गुथा हुआ हो परन्तु तीन प्रकार के परमाणुओं को जाना जाता है। सबसे प्रथम मानों तेजोमयी परमाणु और तरलत्व और देखो गुरुतव इन परमाणुओं को जानता हुआ मेरे प्यारे! इन परमाणुओं को वायु गति देता है और मुनिवरो देखो अन्तरिक्ष में वह गमन करते हैं इसी प्रकार जब हम परमाणुवाद में प्रवेश करने लगते हैं तो जितना संसार का विज्ञान है चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाला हो चाहे वह विज्ञान मानों देखो सूर्य-मण्डल में रमण करने वाला हो चाहे वह मंगल का वैज्ञानिक हो चाहे वह ध्रुव-मण्डल का वैज्ञानिक क्यों न हो परन्तु वह किसी भी लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाला विज्ञानवेत्ता वह इन तीन गतियों में रमण करता रहता है। वह मानों देखो तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व मानों देखो इन परमाणुओं में गमन करता रहता है। इन्हीं परमाणुओं से बेटा! देखो वायु इन परमाणुओ को गति देती है और अन्तरिक्ष में

गमन करता है तो मानों देखो यह अमृत बन जाता है। मैनें तुम्हें बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा था मेरे प्यारे देखो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के विद्यालय में बेटा ब्रह्मचारी अपनी विज्ञान देखो वैज्ञानिक यन्त्रो में देखो भ्रमण करते हुए वह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में गमन करते रहे हैं। बेटा! बहत्तर-बहत्तर लोकों का भ्रमण करने के पश्चात् यन्त्र उनका पुनः देखो आश्रम में प्रवेश हो जाता था। आज मैं बेटा! तुम्हे विज्ञान में नहीं ले जाना चाहता हूँ विचार विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरो देखो यह परमाणुवाद है। परमाणुवाद के ऊपर भी विशेष चर्चा नहीं। आचार्य ने कहा है कि इन पंच-महाभूतों को जान करके जब यजमान याग करता है तो प्रकृति के ऊपर मानों उसका अधिपथ्य हो जाता है और देखो प्रकृतिवाद को जब नीचे दबा कर लेता है तो उसका ऊर्ध्वामयी गमन करने लगता है।

तीन होताओं के द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा प्रभु! यजमान याग करना चाहता है कितने होता हां? जब मुनिवरों देखो यज्ञदत ने ऐसा कहा तो ऋषि ने कहा क्या तीन के द्वारा देखो यजमान याग कर सकता है। वह तीन कौन है बेटा-रजोगुण, तमोगुण-सतोगुण। इन तीन गुणात्मक को जानने का नाम ही बेटा! देखो हमारे यहां तीन होताओं के द्वारा याग करना है। मानों देखो त्रिगुणा कौन तीन गुणो वाला यह जगत है जो सर्व में व्यापक रूप से प्राप्त किया जाता है। मेरे प्यारे! देखो सतोगुण में पालना है, रजोगुण में शासन है और तमोगुण में बेटा उत्पत्ति का मूल विद्यमान होता है मानों देखो यह तीनो ही गुण त्रिगुणात्मा जो प्रकृति है यह ब्रह्माण्ड है इसको जानना हमारे लिए बहुत अनिवार्य हैं परन्तु जब हम देखो एक-एक वस्तु के ऊपर विचार करते हैं तो मुनिवरो देखो वही सतोगुण है और वही रजोगुण है और वही मानों देखो सतोगुण माना जाता है और वहीं मानों वही तमोगुण की प्रतिभा में निहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो माता के पिता के हृदय में यह कामना उत्पन्न हुई कि हम मानों देखो हम अपने में सन्तान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति को अवृत करना चाहते हैं तो वहां तमोगुण तो विशेष है परन्तु उसमें सतोगुण भावनाओं में विद्यमान रहता है रजोगुण में अनुशासन अनुरूप रहता है। तो बेटा! देखो वह रजोगुण में भी मानों तीनो गुण विद्यमान होते हैं और सतोगुण में मुनिवरों देखो सत्य में रहने वाला यह मानव है। तो विचार आता रहता है बेटा त्रिगुणात्मक इस जगत को जानना बहुत अनिवार्य है। विचारवेत्ताओं ने कहा है बेटा! इसमें जब इस प्रकार की आभा में हम रत्त हो जाते हैं तो यह संसार हमारे लिए खिलवाड़ बन जाता है और हम परमपिता-परमात्मा के अमूल्य जगत में प्रवेश करने लगते हैं। हम यह स्वीकार करते हैं कि परमात्मा है परन्तु वह अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपान करा रहा है।

दो होताओं के द्वारा याग

तो मेरे प्यारे! देखो पुनः यज्ञदत ने कहा प्रभु यजमान याग करना चाहता है कितने होताओं के द्वारा याग करे? तो उन्होंने कहा कि यजमान याग करना चाहता है केवल दो से हूत करने वाला हो। मेरे प्यारे! देखो परमात्मा और प्रकृति दोनों के द्वारा याग करता रहता है। तो मुनिवरो देखो दोनो के सन्निधान मात्र से यह जगत बेटा देखो हमें दृष्टिपात आता रहता है। यह मानवीय जगत क्या ब्रह्माण्ड क्या सर्वत्र मानों एक दूसरे में ओत-प्रोत हो रहा है एक दूसरे में एक दूसरे की प्रतिभा निहित रहती है।

तो विचार आता है देखो ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी तुम पुनः प्रश्न करोगे तो एक ही ब्रह्म है जिसकी उपासना करनी है। वही ब्रह्म मानों देखो सर्वत्र जगत का मूलक है और उसको जानने वाला ही मानों देखो यहां सत्य को अपनाता रहता है विवेक में परणित हो जाता है। यह तीनों गुणात्मक जगत को त्याग देता है और त्याग करके मानों देखो वह अपने में मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। मोक्ष उसे कहा जाता है जहां

अन्तःकरण में कोई भी संस्कार न हों, संस्कारों से विहिन हो जाने का नाम ही बेटा मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करना है। तो मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया तो यज्ञदत उनके चरणों में ओत-प्रोत हो गये और यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! आप ने हमें दीक्षित बनाया है, आपने हमें मानों देखो अज्ञान से प्रकाश में पहुचाया है। तो मेरे प्यारे! देखो परमात्मा का जो ज्ञान है वह बड़ा अनुपम है इसके ऊपर प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! अनुसन्धान करता रहा है, अन्वेषण करता रहा है। शिष्य वह कहलाता है जो आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके आत्मिक चर्चा करता है आत्मा के प्रति मानों देखो लोक आत्मा का जो परिवार है, कुटुम्ब है उसको जानने का प्रयास करता है और वह दीक्षा देने का अधिकारी है जो मानों देखो सर्वत्र विज्ञान का एक मूलक कहलाया गया है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार-विनिमय केवल हमारा यह कि हम परमपिता-परमात्मा की महानता और उसकी महिमा को जानना हमारा कर्त्तव्य है। तो मेरे प्यारे देखो आज का हमारा विचार क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के शिष्य मानों यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी ने एक रूपक बनाया और रूपक बना करके उन्होंने यज्ञ की प्रतिक्रिया क्योंकि भौतिक-याग और आध्यात्मिक-याग दोनों को समन्वय मानों दोनो का सम-अमृतम ब्रह्मा देखो दोनों के रूप को जनाने का उन्होंने प्रयास किया। क्या भौतिकवाद यह है और आध्यात्मिकवाद यह है। आध्यात्मिकवाद में मेरे प्यारे! देखो हम सदैव रमण करते रहें। आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जहां आत्मा का ज्ञान हो और परमात्मा के विज्ञान में हम रमण करने वाले हों। मेरे प्यारे! यह परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है जिसमें मानव देखो अपनी मानवीयता को सदैव अपने में धारण करता करता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ परन्तु विचार-विनिमय क्या कि हम अपने में उस महानता को जानने का प्रयास करें। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! आपने जो मानों चौबीस होताओं का वर्णन किया है चौबीस होताओं में प्रभु देखो यह जो ब्रह्माण्ड है यह चौबीस खम्बो का मानों देखो, भवन कहलाया जाता है जितना यह ब्राह्माण्ड है इसमें चौबीस स्तम्भ कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो इसमें दस प्राण हैं प्राणो का दस से आगे विभाजन नहीं हो सकता और मानों देखो इसमें मन विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! देखो दस इन्द्रियां हैं और मन, बुद्धि, चित्त अहंकार यह आन्तरिक जगत कहलाता है जिस आन्तरिक जगत को जानने वाला योगेश्वर बेटा! देखो अपने को योगी कहलाने का अधिकारी नहीं होता जब तक वह अन्तःकरण में अपने अन्तःकरण को नहीं जान लेता। वह आन्तरिक-जगत कहलाता है जिसमें मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार कहलाते हैं। मेरे प्यारे देखो चित्त में संस्कारों का समूह है और मन, बुद्धि मानों देखो मन आत्मा के प्रकाश में मानों देखो अवस्थाओं का विभाजन कर रहा है, प्राणों का विभाजन कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो स्वप्नवत में भी विभक्त क्रियाओं में रमण कर रहा है।

बुद्धि

मेरे प्यारे! देखो बुद्धि कहते हैं जहां मानों देखो बुद्धि चार प्रकार की कहलाती है बुद्धि, मेद्या, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो बुद्धि ने दृष्टिपात किया और देखो वह बुद्धि मेधा ने उसका निर्माण कर लिया है और निर्माण करके बेटा देखो वह ऋतम्भरा मौन हो गई है और ऋतम्भरा में जा कर योगेश्वर मौन हो जाता है तो बुद्धि, मेद्या, ऋतम्भरा और प्रज्ञा में मेरे प्यारे! देखो परमपिता-परमात्मा की सृष्टि का साक्षात्कार दर्शन कर लेता है। वह मेरे पुत्रो देखो वह चार प्रकार की बुद्धि कहलाती है देखो बुद्धि, मेद्या, ऋतम्भरा, प्रज्ञा इसी प्रकार बुद्धि के अवान्तर भेदन है जैसे ऋतम्भराम भूतम ब्रह्मा वर्णो बेटा देखो यहां नाना प्रकार की बुद्धियों में कहीं देखो बेटा राजत्व भी आता है कहीं मेद्या भी और कहीं मुनिवरों देखो अहिल्या नाम भी बुद्धि को माना

गया है। बुद्धि के नाना प्रर्यायवाची शब्द हैं जैसे सुनीता है जैसे मानों कृतिका है और रजवेतु है। बेटा देखो यह नाना प्रकार के पर्यायवाची बेटा देखो बुद्धि के शब्द आते रहते हैं। आज मैं देखो प्रर्यायवाची शब्दों में नहीं जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय यह मुनिवरों देखो बुद्धि चार प्रकार के यह मन के भेदन कहलाए जाते हैं।

अहंकार

मुनिवरों देखो अहंकार जो संसार को मिलान में लाता है अथवा पिण्ड बनाता है जितने भी पिण्ड हैं चाहे वह माता के गर्भ में निर्माणीत होते हो निर्माण करने वाला प्रभु है परन्तु देखो एक अमृतम ब्रह्मा एक यह जो ब्रह्माण्ड है इसमें लोक-लोकान्तरों के पिण्ड बनते हैं। मेरे प्यारे! देखो यह पृथ्वी के पिण्ड़ जब पिण्ड़ों का निर्माण करने लगता है योगेश्वर और विज्ञानवेत्ता को बेटा देखो पृथ्वीयों को जानता रहता है। मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज मुनि के यहां जब पृथ्वीयो को जाना गया तो बेटा! तीस लाख पृथ्वीयों को जानने का उन्होंने प्रयास किया। तीस लाख पृथ्वी उन्होंने जानी परन्तु देखो सूर्य-मण्डल इतना विशाल मण्डल बना जो बेटा देखो जिसमें तीस लाख पृथ्वीयाँ ही समाहित हो जायें। तो मेरे प्यारे! देखो यह जो नाना प्रकार के पिण्ड़ रूप बने हुए हैं यह सर्वत्र मानों देखो अहंकार के कारण हैं और यहीं मानव के शरीर में जो पिण्ड़ों का निर्माण होता है चाहे वह माता के गर्भ में होता हो, चाहे पृथ्वी के गर्भ में होता हो इस सर्वत्र का मानों देखो पिण्डो का निर्माण मानों देखो इन्हीं के कारणो से वृत्त होता रहता है।

तो विचार बेटा! मानों देखो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार मानों देखो चित्राम भूतम देखो चित्त कहते हैं जहां जन्म-जन्मान्तरो के संस्कार विद्यमान होते हैं। मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है देखो वायु मुनि महाराज एक समय बेटा देखो लगभग पचासी वर्ष तक मौन हो गये और मौन हो करके चित्त को जानने लगे-मैं चित्त को जानू मौन हो करके। मेरे प्यारे! वह वायु का सेवन करते थे। वह अपने में मानों देखो जानते पचासी वर्षों के तप का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने बेटा देखो अपने एक लाख जन्मों के चित्त में संस्कारों को जानने का प्रयास किया। मेरे प्यारे देखो, जब तक संस्कारों से विहीन हमारा चित्त मंडल नहीं होगा तब तक मुनिवरों देखो मोक्ष की पगडंडी को प्राप्त नहीं कर सकते। हम परमपिता-परमात्मा की सृष्टि को निहार सकते हैं परन्तु उसमें हम प्रवेश कर सकते हैं परन्तु जिसको हम मुनि कहते हैं मुनिम ब्रह्मा मुनिम व्रतम देवत्वाम ब्रव्हे वेद का मन्त्र कहता है कि मुनि उसी को कहते है जो ज्ञान हो करके देखो बाल्य प्रवृत्ति बन जाती है।

तो आओ बेटा! देखो मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ। मैं बेटा! तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है मुनिवरो देखो यज्ञमानम ब्रह्मा व्रतम देखो यज्ञनम ब्रह्मा यहां प्रत्येक शुभ क्रियाकलाप को याग कहा गया है तो याग में परणित होना हमारा कर्तव्य है। तो मुनिवरो देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना वाक् प्रारम्भ किया और प्रारम्भ करने के पश्चात् याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मौन हो गये और ये कहाँ हे ब्रह्मचारियो! तुम्हारा देखो गहन अध्ययन देखो तुम्हारा ब्रह्मवर्चोसी है जब यह सफलता को प्राप्त होंगे विद्यालय जब ही ऊँचा बनेगा जब तुम देखो अपने में ब्रह्मवर्चोसी तपस्या में परणित हो जाओगें। तो बेटा! यह वाक् उच्चारण करके और ऋषि अपने में मौन हो गया। यज्ञदत ने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और देखो वह ब्रह्मचारियों ने, सबने नतमस्तिष्क हो करके कहा धन्य है प्रभु! आपके मानों अमूल्य वचनों को, आप ने जो हमारे अज्ञान को समाप्त किया आपको धन्य है। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ब्रह्मचारी दोनों मौन हो गये। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो देखो आचार्यों का कर्तव्य है क्या प्रातः कालीन ब्रह्मचारियो को न्यौदा में वेद-मन्त्रों का अध्ययन करते हुए और ब्रह्मचारियों को बेटा उस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनका जीवन पवित्र हो जाए।

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता-परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए मेरे प्यारे! देखो आत्मा जिस गृह में रहता है उस गृह को जानना बहुत अनिवार्य है। यदि हम अपनी आत्मा के गृह को नहीं जान सकते, पंचमहाभूतों के लोक को नहीं जान सकते तो हम आध्यात्मिकवाद में अग्रसर नहीं हो सकेगें। हम प्रेरणा को प्राप्त करते रहें, और प्रेरित हो करके एक-एक वेद-मन्त्र हमें प्रेरणा देता रहता है। यह है बेटा आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथम्मनाः वायु गतं माऽहं आपाः। ओ३म् रथं मा योरेवं भद्राः। अच्छा भगवन्। आज्ञा। दिनाँक 21-जून-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : श्री कृष्णलाल बत्तरा, इन्द्री, करनाल।

११ महर्षि वाजश्रवा का याग 26-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रां का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारें यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी यह जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांण्ड के मूल में वह परमपिता-परमात्मा विद्यमान हैं। इसीलिए हमारा प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेद-मन्त्र इस परमपिता-परमात्मा की गाथा गा रहा है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणानुवादन करते रहते हैं और उसके गुणों का वर्णन करते हुए परमपिता-परमात्मा की महिमा को निहारते रहते हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा में आने वाला नहीं हैं वह सीमा से रहित है तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गान गाते रहते हैं और उसकी महिमा को निहारते रहते, विचारते रहते हैं कि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसकी महिमा प्रायः महानता में सदैव गमन करती रहती है। तो आओ मुनिवरों हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः हम अपने में विचार-विनिमय करते रहें।

आत्मा को प्रेरणा

आज का वेद-मन्त्र कह रहा था वेदम् ब्रह्मणा व्रतम् देवम् आत्मा वेदमन्त्र कह रहा है हे आत्मा! तू महान उस देव के समीप चल और तू अपनी चेतना से चेतना का मिलान कर जिस चेतना के चेतना से मिलान होते ही मानवीय अपनी चेतना में जब तत्पर हो जाता है तो उसी में वह समाहित हो जाता है। तो हमारे वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार की वार्ताएं आती रहती हैं। मानव यह विचारता रहता है कि मन ब्रह्मणा व्रतम् देवाः हमारे आचार्यों ने बेटा इसके ऊपर बहुत अन्वेषण किया और विचार-विनिमय किया और ऋषि-मुनि अपने में विचार-विनिमय करते अपने में समाहित होते रहे हैं और समाहित हो करके ही मानों अपने में समाहित हो करके अपने में मौन हो जाते हैं। तो आओ मुनिवरों देखो इस सम्बन्ध में आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूंगा। आज का विचार केवल यह कि हम तुम्हें एक स्थली में ले जाना चाहते हैं जहाँ साहित्यिक विचार आता रहता है और साहित्यिक विचार-वेत्ताओं ने नाना प्रकार के महापुरूषों की प्रतिभा का प्रायः वर्णन किया है।

महर्षि वाजश्रवा की पिपासा

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब मैं उद्दालक गोत्र के ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों में जब प्रवेश होता हूँ तो उनका क्रियाकलाप कितना महानता में रहा है। बेटा! एक समय वाजश्रवा अपने आसन पर विद्यमान हैं और वाजश्रवा मानों अपने ऋषि-मुनियों के समीप विद्यमान थे। मानों देखो जिसमें महर्षि विभाण्डक, महर्षि भृंगी, महर्षि श्वेता स्वन्धनी मानों यह सब विद्यमान थे। तो वाजश्रवा अपने आसन पर विद्यमान हो करके कुछ वार्ता प्रगट कर रहे थे। उन्होंने महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से कहा हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि मैं मोक्ष को जानना चाहता हूँ, मोक्ष में प्रवेश करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि ऐसा

तुम्हारे विचार में क्यों आया? उन्होंने कहा कि यह मानव की एक पिपासा बनी रहती है प्रत्येक मानव अपने में देखो शान्त होना चाहता है। प्रत्येक आत्मा, आत्मवेत्ता मानों यह चाहता है कि मैं संसार को जान करके उसमें समा जाऊं। तो प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि मैं उसमें समाहित होना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों विचार आया? उन्होंने कहा कि प्रत्येक मानव प्रत्येक परमाणु अपने में रत्त हो रहा है। जब सृष्टि का प्रारम्भ होता है तो एक-एक परमाणु मानों देखो द्वितीय परमाणु का निर्माण करता रहता है और निर्माण करके वह संसार एक पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आने लगता है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में हमारे शरीर रूपी पिण्ड का निर्माण हुआ है। निर्माण करने वाला वह चैतन्यदेव है परन्तु वह जो माता के गर्भ-स्थल में एक पिण्ड का निर्माण हुआ। परन्तु तरलत्व पदार्थ के द्वारा ही पिण्ड का निर्माण होता है गुरूत्व अपनी आभा में रत्त रहने वाला है। तो इसी प्रकार मेरी भी एक पिपासा बनी हुई है क्या मैं मानों देखो पिण्ड रूप को न चाह करके व्यापक रूप अपना बनाना चाहता हूँ।

याग की विवेचना

मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहा क्या हे वाजश्रवा! तुम्हारा जो गोत्र है उद्दालक गोत्र है और उद्दालक गोत्र में बहुत से ब्रह्मवेत्ता हुए हैं और उन ब्रह्मवेत्ताओं में तुम्हारी उत्सुकता बनी हुई है। उन्होंनें कहा प्रभु! मेरी इच्छा यही है कि मैं ब्रह्मवेत्ता बनू परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहां सम्भवा ब्रह्मेण ब्राहा उन्होंने कहा कि तुम याग करो। महर्षि वाजश्रवा ने कहां प्रभु! यह मेरी परम्परा से ही एक अभिलाषा बनी हुई है। हमारे पूर्वजों की भी यह एक इच्छा बनी हुई है क्या मैं मानों देखो ब्रह्मणे उन्होंने याग किया। याग के ऊपर अन्वेषण करना उनका कर्तव्य बना रहा है तो इसीलिए मैं भी याग करने के लिए तत्पर हूँ परन्तु याग कहते किसे है? महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि द्रव्य का उपयोग करने का नाम, सदुपयोग करने का नाम याग है। उन्होंने कहा प्रभु याग कि मैं और विवेचना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हूत और प्रहुत का नाम भी याग माना गया है। उन्होंने कहा हुत-प्रहुत किसे कहते हैं? उन्होंने कहा हुत कहते हैं आहुति देने को, प्रहुत कहते हैं मानों देखो पुरोहितों की आज्ञा का पालन करना। अमृताम भुतम ब्रह्मा वेदाम ब्रह्मे पुरोहिता और वह पुरोहित कहलाते हैं जो पराविद्या के देने वाले हैं। जैसे परमपिता-परमात्मा का नाम पुरोहित है और वह परा में रमण करने वाला ऐसे जो महापुरूष होते हैं वह पुरोहित कहलाते हैं। मेरे प्यारे उन्होंने कहा बहुत प्रिय परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि मेरे विचार में तो वही अमृतम पुरोहित है।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि वाजश्रवा ने कहा प्रभु याग किसे कहते है? उन्होने कहा याग उसे कहते हैं जो आध्यात्मिकवाद को जानने वाला है प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में, समान को उदान में जो मिलान कराना जानता है वह पांच ज्ञानेन्द्रियों को और कर्मेन्द्रियों के विषयों को ले करके प्राण में हुत कर देता है और जब प्राण में हूत कर देता है तो मानों वह आत्मा में आत्मा का याग करने वाला है वह आध्यात्मिक याग कहलाता है। जो ज्ञान रूपी अग्नि में मानों देखो अपने साकल्य, इन्द्रियों का सर्वत्र साकल्य बना करके उसमें हुत करने वाला है उसे आध्यात्मिक याग कहते हैं। मेरे पुत्रों उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज याग क्या है? उन्होंने कहा जितने भी सुक्रिया-कलाप है उन सर्वत्र का नाम याग है। सुविचार बनाना, संकल्प में रहना और प्रभु की सृष्टि को निहारना ही मानों देखो याग कहा गया है। मेरे पुत्रां! देखो जब महर्षि विभाण्ंडक मुनि महाराज उनका उत्तर देते रहे तो ऋषि ने यह निश्चय किया कि हे प्रभु! मैं मोक्ष की अभिलाषा वाला हूँ मैं अपने को मानों देखो याग में परणित कराना चाहता हूँ और मैं याग में हूत करना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा बहुत प्रिय तुम याग करो।

मोक्ष की पगडंडी

तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या वाजश्रवा ने यह निश्चय कर लिया कि जितना मेरे द्वारा द्रव्य है उस द्रव्य को मानों देखो हुत और प्रहुत में मुझे परणित करना है। मेरे प्यारे देखो वाजश्रवा ने यह निश्चय करते हुए पुनः विभाण्डक से यह प्रश्न किया कि महाराज इससे क्या मुझे मोक्ष प्राप्त हो जायेगा? उन्होंने कहा नहीं ऋषिवर एक मार्ग तुम्हें प्राप्त होगा और उस मार्ग में तुम्हारी तीव्र इच्छा होनी चाहिए। तीव्र जब प्रक्रिया बन जायेगी जब तीव्र इच्छा हो जायेगी तो तुम्हारा तुम्हें मार्ग प्राप्त होगा और उसमें प्राण और अपान को मिलान करने का प्रयास होगा। यहाँ मन और प्राण का दोनों का समन्वय हो जाएगा मन मानों देखो आत्मा का प्रतिनिधि है और प्राण ब्रह्म का प्रतिनिधि है दोनो का जब मिलान होगा तुम्हें मानों देखो तुम्हारा चित्त मण्डल निष्क्रिय होना प्रारम्भ हो जायेगा वह संस्कारों से रहित हो जायेगा। तो इसलिए तुम्हारा जीवन एक महान और पवित्रता में परणित हो जायेगा मोक्ष की पगडंडी तुम्हें प्राप्त हो जायेगी। मेरे पुत्रों देखो विभांण्डक मुनि महाराज और ऋषि का, उद्दालक गोत्र के वाजश्रवा का ऐसा ही विचार-विनिमय हो रहा था।

ब्रह्मवर्चोसी

विचार-विनिमय होते इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि वैशम्पायन का भी आगमन हो गया और वैशम्पायन दोनों महापुरूषों को दृष्टिपात करके बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन ने कहा क्या विचार-विनिमय हो रहा है ऋषिवर? महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि प्रभु! हम ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करते रहे हैं, हम ब्रह्मवर्चोसी बनने की हमारी इच्छा बनी हुई है कि ब्रह्मवर्चोसी बनें। मेरे प्यारे! देखो उन्होनें कहा प्रभु ब्रह्मवर्चोसी किसे कहते है? तो महर्षि वैशम्पायन ने यह कहा तो ऋषि कहते हैं विभांण्डक जी, क्या हे प्रभु! इसको तो हम भी जानना चाहते हैं। उन्होने कहा मेरे विचार में तो यह है कि ब्रह्म और वर्च मानों ब्रह्म और चरी-चरी नाम प्रकृति का ब्रह्म नाम परमात्मा का है और वह ब्रह्म और चरी दोनों में परणित होना, दोनों को जानने का नाम, दोनों को यथायोग्य जान करके इसको वर्चस्व बनना है। मेरे पुत्रों देखो जब ऋषि ने इस प्रकार का उत्तर दिया तो दोनों ऋषि अपने में मौन हो गये। मेरे प्यारे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आ रहा है, ऐसा मुझे स्मरण है कि दोनो ऋषियों का अपना एक विचार-विनिमय हो रहा था। परन्तु सांयकाल को सभा उनकी विसर्जन हो गई और यह निश्चय हो गया कि अमुक समय में यहां यज्ञ होगा और मैं द्रव्य को सर्वत्र याग में हुत करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो जब मैं त्यागी और तपस्वी, त्यागी नहीं बनूंगा तो तप नहीं आयेगा और मैं यदि तप नहीं होगा मेरा द्रव्य से मोह बना रहेगा तो मैं इस मोह के कारण मानों देखो अपने में घोर संस्कारों को जन्म देने वाला बनूंगा। तो यह महर्षि बाजश्रवा ने अपने में निश्चय कर लिया। तो बेटा! देखो सभाम् ब्रव्हे अब उन्होंने अपने गृह में जा करके अपनी दिव्या से बोले हे देवी! मेरा यह मोक्ष को जाने की इच्छा बनी है और मैं सर्वत्र द्रव्य का याग करना चाहता हूँ। उनकी देवी ने कहा प्रभु आप को धन्य है यदि आपके ऐसे विचार बने यह तो हमारा सौभाग्य है। क्योंकि गृह में जहां भी इस प्रकार के विचार बनते हैं तो वह गृह मानों उस गृह का सौभाग्य जागरूक होता है और मानव अपने में मानवीयता की प्रतिभा में रत्त होता है। तो बेटा! देखो वाजश्रवा ने अपनी पत्नि से कहा पत्नि बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता से कहा हे बाल्य! ब्रह्मचारी ब्रह्मचरिस्यामि गतम ब्रह्मणा व्रतम हे ब्रह्मचारी! तुम ब्रह्मचारी हों परन्तु देखो नाचिकता ने कहा क्या प्रभु! मैं ब्रह्मचारी ब्रह्मण सम्ब्रहे अभी मैं पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं बना। उन्होंने कहा क्या त्रुटि है? क्या प्रभु! मेरे पितर ब्रह्मचारी वह होता है जो अपने एक-एक श्वांस को मनका बना करके ब्रह्म-सूत्रों में पिरोने वाला होता है वह ब्रह्मचारी है। मानों देखो जब एक-एक श्वांस गति कर रहा है और वह श्वांस का मनका बना करके ब्रह्म सूत्र में पिरोता है वहीं तो ब्रह्मचारी है ब्रह्मचरिष्यामि

ब्रह्मणाए तत्वम् ब्रह्म और वही ब्राह्मण कहलाता है। परन्तु देखो ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मचारी वह है जो चरी और ब्रह्म को दोनों को एक रूप में दृष्टिपात करता है वही तो ब्रह्मचारी है। मेरे प्यारे! देखो यह उच्चारण करके ऋषि ब्रह्मचारी मौन हो गया। जब ब्रह्मचारी मौन हो गया तो पिता ने कहा कि मेरा ब्रह्मचारी महान बनेगा। परन्तु देखो उसी वाक् को ले करके वह शान्त हो गये।

याग

उन्होने अपने यहां सुन्दर शिल्पकारों से यज्ञशालाओं का निर्माण कराया और यज्ञशालाओं का जब निर्माण हो गया तो ऋषि-मुनियों को निमन्त्रण दिया और उन्होंनें निमन्त्रण दे करके बेटा महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उस याग के उदगाता बनें और वैशम्पायन उस याग के ब्रह्मा बनें और मुनिवरों देखो उनके वाचसुति ब्रह्मचारी बेटा वहां ब्रह्मणे पुरोहित बन करके याग प्रारम्भ किया। स्वयं यज्ञमान बनें और यज्ञमान बन करके जब याग का प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने बेटा वेद-मन्त्रों में ब्रह्मसुजम ब्रह्म चित्रम रथम ब्रह्मा चित्रम देवम ब्रह्मा ऋतम देवा असुकी दिव्याम भूतम ब्रह्मा मानों देखो उन्होंने वैशम्पायन से ये कहा कि यजमान के व्रतों होने से क्या हे प्रभु! वेदमन्त्र यह कहता है कि अग्नि की धाराओं हेतू मानों देखो चित्रों का गमन होता रहता है और वह द्यौ-लोक में प्रवेश होते रहते हैं तो क्या प्रभु यह तरंगवाद है या विज्ञानवाद है यह आध्यात्मिक विज्ञान है या भौतिक विज्ञान है। उस समय वैशम्पायन ने कहा कि देखो चित्राम् भुतम ब्रह्मे वायु स्तंभ यह जो वायु में मानों चित्र हमारें अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके जब यह चित्र रमण करते रहते हैं तो वह चित्राम गतम ब्रह्मा मानों देखो द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं, द्यौ में उनकी निष्टा बन जाती है रथम् ब्रह्मा देखो के यजमान का रथ बनकर के भी जाता है ऐसा बेटा उन्होंने अपना मन्तव्य प्रगट किया परन्तु याग प्रारम्भ हो गया। जब पारायण याग प्रारम्भ हो गया तो मेरे प्यारे! देखो उनका याग चलता ऋषि-मुनि आते प्रश्न करते रहते परन्तु उनकी सन्तुष्टि की जाती वेद-मन्त्र के द्वारा क्योंकि वेद तो ईश्वर का गान गाता है जैसे माता का पुत्र माता का गान गाता है। बिना पुत्र के देखो माता; माता नहीं, माता ही मानों देखो माता का निश्चय ही उसका पुत्र कराता है। इसी प्रकार मनम् ब्रह्मा मानों देखो जैसे माता की गाथा को गाने वाला पुत्र है जैसे यह पृथ्वी ब्रह्मांण्ड की गाथा गाती है। जब इस संसार में विज्ञानवेत्ता होते हैं तो वह पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण करते हैं, पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान करते हैं और अनुसन्धान करते हुए मानों देखो प्रथाम् भुतम ब्रह्मा देवम यह माता वसुन्धरा है इसके गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ विद्यमान् रहता है। तो इनको देखो अमृतम ब्रह्मा वही तो अमृत है। यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती है सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक जब भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं उन्होंने अणु और परमाणुओ को जानने का प्रयास किया है तो उन्होने पृथ्वी की वसुन्धरा को जाना है, उसके गर्भ को जाना है और उस वसुन्धरा को जान करके ही मुनिवरों देखो मानव लोक-लोकान्तरो की यात्रा में सफलता को प्राप्त हुआ है।

महर्षि भारद्वाज-मुनि का विज्ञान

मुझे बहुत सा काल स्मरण आता है। भारद्वाज-मुनि का वह जीवन स्मरण आता रहता है जब भारद्वाज-मुनि के यहां ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि दोनों अन्वेक्षण कर रहे थे और अन्वेक्षण करते हुए मानों देखो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो गुरूत्व, तरलत्व और तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणुओं से वाहनों का निर्माण होता है और वह निर्माण हो करके उस पर विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरो को भ्रमण करते। मुझे बेटा वह काल स्मरण है जब महर्षि भारद्वाज मुनि का देखो यन्त्र अन्तरिक्ष में रमण कर रहा है वह यहां से अपनी उड़ाने उड़ता है पृथ्वी के आश्रम से ऋषि के और वह

सबसे प्रथम मानों देखो चन्द्रमा में जाता है चन्द्रमा से अपनी उड़ाने उड़ता हुआ वही यान मेरे प्यारे देखो बुध में जाता है बुध से उड़ान उड़ करके वही शुक्र में जाता है शुक्र से उड़ान उड़ता है वही मंगल में जाता है मंगल से उड़ान उड़ता है तो स्वाति-नक्षत्र में जाता है जब स्वाति से अपनी उड़ान उड़ता है तो वशिष्ट-मंडल में चला जाता है और वशिष्ठ-मंडल से उड़ान उड़ता है तो अरूणधति में प्रवेश हो जाता है अरूणधति-मंडल से उड़ान उड़ता है तो मृचिका-मंडल में प्रवेश करता है मृचिका-मंडल से उड़ान उड़ता है तो रोहिणी-केतु-मंडल में प्रवेश करता है रोहिणी-केतु मंडल से उड़ान उड़ता है तो मुलकेतु-मंडल में प्रवेश कर जाता है मुल-केतु-मंडल से उड़ान उड़ता है तो भामान्तु-मंडल में प्रवेश करता है भामान्तु-मंडल से उड़ान उड़ता है तो अखलेश्वर-मंडल में प्रवेश कर जाता है और अखलेश्वर-मंडल से उड़ान उड़ता हुआ तो मौन-मृचिका में प्रवेश हो जाता है और मौन-मृचिका से अपनी उड़ान उड़ता है तो रोहिणी में प्रवेश हो जाता है जब रोहिणीमंडल से उड़ान उड़ता है तो वह केतु-मंडल में चला जाता है केतु-मंडल से उड़ान उड़ता हुआ बेटा! देखो, विचार मैं विशेष नही केवल यह क्या वह देखो बेहत्तर-लोकों का भ्रमण करके वह पुनः भारद्वाज के आश्रम में प्रवेश होता रहा है। तो आज मैं बेटा तुम्हें विज्ञान के युग में नही ले जा रहा हूँ मैं विज्ञान की वार्त्ता तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरों देखो नाना प्रकार के लोकों का अन्त में अपनी उड़ान उड़ता हुआ और अपने में अपनेपन का ही भान करता हुआ और ऋषि अपने में मौन हो जाता है।

याग में दक्षिणा

तो मेरे पुत्रों! देखो आज मैं तुम्हें विशेषता में न ले जाता हुआ केवल यह कि हमारा वेद का मन्त्र, वेद का ऋषि क्या कहता है। वेद का ऋषि कहता है सम्भवः ब्रह्मणा लोकाम। बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था वाजश्रवा के याग की। मैं विशेष दूरी न चला जाऊँ। विचार-विनिमय यह मुनिवरों देखो यहां इस प्रकार का विज्ञान ऋषि-मुनियों के मष्तिकों में, उनके आश्रम में, उनके क्रियाकलापों में सदैव रमण करता रहा है। तो मेरे पुत्रो देखो मैं याग की चर्चा कर रहा था। जब याग प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! नाना ऋषिवर आते रहे विज्ञान की वार्ता, चित्रों को वर्णन आता रहा। मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण है बेटा छः माह तक वह याग प्रारम्भ रहा और छः माह याग के सम्पन्न होने के पश्चात जब पूर्णता को प्राप्त होने लगा तो मुनिवरों देखो वाजश्रवा ने ऋषि-मुनियों से कहा प्रभु! अब क्या कार्य रह गया है शेष। उन्होनें कहा वेद कहता है दक्षिणाम भुतम ब्रह्मे मेरे प्यारे! उन्होंने कहा मैं कौन सी दक्षिणा प्रदान करूँ। उन्हांने कहा दक्षिणाम ब्रह्मणें कृतो सुतेही क्या जो देखो यज्ञमान के हृदय में त्रुटियां हैं उसे प्रदान करो, पुरोहित को दो और यदि त्रुटि तुमने पुरोहित को प्रदान कर दी हैं तो उसमें तुम्हारा आत्म कल्याण होगा और मानों देखो, बाह्य पालन-पोषण के लिए द्रव्य भी एक दक्षिणा का रूप है। उन्होंने कहाँ पहले भगवन्। बाह्य जगत में अपने को सिमट जाऊँ तो उन्होंने बेटा देखो नाना मुद्राए और गऊओं के सहित वह दक्षिणाम भूतम ब्राह्मणों को प्रदान करने लगे। उन्होंने बेटा! बहुत सी गऊए जो वृद्ध थी जिनको देने से कोई लाभ नहीं होता। यदि वृद्ध हैं और अपने कार्य से निवृत हो गई हैं उस द्रव्य का दान देना भी मानों वह पाप है जो दुसरों को देने से लाभ नहीं होगा।

नचिकेता वाजश्रवा संवाद

तो मुनिवरों देखो वह सात वर्ष का ब्रह्मचारी नचिकेता विद्यमान है। नचिकेता ने कहा मेरा पिता तो धर्म के स्थान में अधर्म कर रहा है। नचिकेता ने कहा हे पितृ। आप भी देखो जब यह द्रव्य आपकी सम्पदा है गऊ भी सम्पदा है आप जिन गऊओं को ब्राह्मणों को दान दे रहे हैं उनमें से बहुत सी गऊए वृद्ध हैं और वृद्ध वह दुग्ध नहीं देगीं परन्तु देखो, उसको देने से आप पाप के स्वामी बने हैं। नचिकेता के वाक्यों को श्रवण करने वाले

वाजश्रवा ने कहा, उद्दालक गोत्रीय ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम ब्रह्मचारी हो अमृतम शान्तमभुतम ब्रह्मे। नचिकेता ने कहा प्रभु यह तो मैं स्वीकार कर लूंगा परन्तु मैं भी तो आपकी सम्पदा हूँ मुझे किसे दोगे। वाजश्रवा ने कहा ब्रह्मचारी तुझे मृत्यु को दुंगा और मृत्यु उच्चारण करके ब्रह्मचारी मौन हो गया क्यांकि यह विचारों का अन्तिम विचार होता है। जब मृत्यु के लिए कहा जाता है तो अन्तिम यह सूत्र है यह अन्तिम मानों देखो एक वेद माला का मनका है। यह शब्द मानों देखो अन्तिम चरमसीमा का अन्तिम ब्रहे है। तो यह जब उन्होने अपने में स्वीकार कर लिया तो वाजश्रवा सांयकाल तक दक्षिणा दे करके शान्त हो गये और अपने मानों कक्ष में विश्राम गृह में पहुंच गये। जब विश्राम गृह में पहुंचे तो बालक नचिकेता माता के द्वार पर पहुंचे। माता ने कहा कहो ब्रह्मचारी आज कैसे शोकातुर हो? उन्होंने कहा हे माते-श्री मुझे पिता ने मृत्यु को कहा है और हमारा जो गोत्र है यह उद्दालक गोत्र है उस उद्दालक गोत्र में मानों देखो, नाना वंशलज हुए हैं। हमारा जो यह गोत्र है, वंश चल रहा है ये मानों देखो हमारा वंशलज ब्रह्मे यह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र में मानों यह अस्सीवा वंश चल रहा है। हमारा और उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ है वह हरितत गोत्रां से हुआ है उसमें लगभग देखो लाखों वंशलज चले गये और हरितत गोत्र का निकास अंगिरस ऋषि से हुआ है और अंगिरस गोत्र में भी मानों देखो एक लाख वंशलज चले गये हैं। हे प्रभु! अंगिरस ऋषि देखो उनका जो निकास हुआ वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है और अथर्वा में भी मानों देखो लाखो वंशलज चल गये। हे प्रभु! हे मातेश्वरी इनमें कोई ब्रह्मचारी मिथ्यावादी नहीं हुआ जो पिता की आज्ञा का पालन न करने वाला हो और योगेश्वर न हो तो माता मझे पिता की आज्ञा का पालन करना है मुझे उनकी वाणी को स्वीकार करना है। उन्होंने कहा जाओ पुत्र पिता के कक्ष में चले जाओ। जब वह पिता के कक्ष में पहुंचे माता की आज्ञा पा करके। आचार्य ने कहा आओ ब्रह्मचारी, वाजश्रवा ने कहा कहो नचिकेता। उन्होंने कहा हे पितृ। हमारा गोत्र मानों उद्दालक गोत्र है और उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए परन्तु किसी का वाक् मिथ्या नही हुआ। हे प्रभु! आप ने मुझे मृत्यु को कहा है मुझे मृत्यु को समर्पित कर दीजिए अन्यथा तुम्हारा वाक् मिथ्या हो जाएगा। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है वाजश्रवा ने विचारा हे नचिकेता तुम तो पितृभक्त हो अमृताम भूतम ब्रह्मणे व्रतम देवा मृत्यु-हे ब्रह्मचारी! जाओ तुम मृत्यु को चले जाओ।

नचिकेता का मृत्यु पर मनन

मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने नमस्कार करके चरण स्पर्श किए और यह कहा प्रभु! मैं मृत्यु को जा रहा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्मचारी ने कोई पाप नहीं किया था जो शरीर का विच्छेद हो जाता परन्तु देखो वह विचारने लगा एक वट वृक्ष का जब एक वट वृक्ष के नीचे विद्यमान हो करके विचार-विनिमय करने लगा और ऋषि ने भी कहा पिता ने मुझे मृत्यु को कहा है, मृत्यु है क्या? यदि मैं शरीर को त्यागने को मृत्यु कहता हूँ तो यह मृत्यु नहीं बनती। जब जिसका निर्माण हुआ उसका विच्छेद अवश्य है उसका रुपान्तर होना तो रुपान्तर को मृत्यु नहीं कहते। यदि शरीर और आत्मा का दोनो का विच्छेद होना ही यह भी मृत्यु नही बनती परन्तु मृत्यु क्या है जो पिता ने कहा है कि तुम मृत्यु को चले जाओ। अब ब्रह्मचारी चिन्तन करने लगा। उनके द्वारा बेटा देखो अमृतम प्रजापति आ पहुंचे। प्रजापति ने कहा हे बालक नचिकेता क्या विचार कर रहे हो ब्रह्मचारी। उन्होंने कहा प्रभु! मैं मृत्यु के सम्बन्ध चिन्तन कर रहा हूँ क्योकि मातम ब्रह्मणे व्रतम-माता के गर्भ से एक बाल्य का जन्म होता है और जन्म हुआ उसका निर्माण करने वाला चैतन्य देव है। माता के अन्धकार कूप में उसका निर्माण होता है। माता लोरियो का पान कराके योग्य बना देती है परन्तु देखो वह मृतम ब्रह्मे मृत्युम ब्रहा मैं मृत्यु को पिता ने कहा है कि तू मृत्यु नहीं बन पाती। परन्तु देखो निर्माण को करने वाला कोई और है रुपान्तर हो रहा है। यह जगत की

जब प्रलय होती है तो रुपान्तर हो जाता है ऐसे मानव शरीर का भी निर्माण हुआ है तो उसका रुपान्तर हो जाता है। ब्रह्मचारी जब यह चिन्तन करने लगा क्या मृत्यु तो बनता ही नहीं। हां विचार-विनिमय करते हुए उन्होंने कहा प्रभु! मृत्यु कहते किसे हैं? आचार्य भी विद्यमान हो करके दोनों चिन्तन करने लगे। उन्होंने कहा मेरे विचार में तो ऐसा वेद में एक मन्त्र आता है तान्यम भुतम अज्ञानम ब्रह्मे ऋतम देवत्वाम अज्ञानम भूतम यह वेद का मन्त्र कहता है कि अज्ञान का नाम मृत्यु है। ब्रह्मचारी तुम अज्ञान को त्याग करके देखो प्रकाश में आ जाओ तो देखो मृत्यु समाप्त हो जायेगी मृत्यु तुम्हारे निकट नहीं आयेगी क्योंकि अंधकार का नाम ही तो मृत्यु है। ब्रह्मचारी ने विचार किया कि उन्होंने विचारा मुझे ऐसे महापुरूष के द्वारा जाना चाहिए जिसने मृत्यु को विजय कर लिया है।

नचिकेता का यमाचार्य के गृह में प्रवेश

मेरे प्यारे! देखो वह भ्रमण करते वहां से गमन करते हैं और भ्रमण करते वह यमराज मानों देखो यमाचार्य के गृह में पहुंचे। यमाचार्य देखो गृह में नहीं थे उनकी पत्नि शकुन्तका थी। जब शकुन्तका के चरणों को उन्होंने स्पर्श किया और ब्रह्मचारी ने कहा मातेश्वरी आचार्य कहां हैं, मृत्यु को विजय करने वाले आचार्य कहां है? माता ने कहा ब्रह्मचारी तुम आओ अन्न जल का पान करो आचार्य कहीं भ्रमण करने गये वह आते होंगे। परन्तु देखो उसने कहा नहीं जब तक मैं अन्न जल का पान नहीं करूंगा जब तक मझे आचार्य का दर्शन नहीं हो जाएगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियम ब्रहे वह बालक नचिकेता द्वार पर विद्यमान हो गये। सात वर्ष का ब्रह्मचारी बेटा द्वारपाल बना हुआ है। तीन रात्रि और तीन दिवस हो गये हैं और तीन दिवस के पश्चात् यमाचार्य गृह में आये। पत्नि व्याकुल हो रही थी। पत्नि ने कहा, शकुन्तका ने कहा प्रभु! हमारी तो मृत्यु हो गई है। यमाचार्य ने कहा देवी मैंने मृत्यु को विजय किया मृत्यु कैसे हो गई? उन्होने कहाँ कि हमारे यहाँ वेद-मन्त्र में आया है अजागम अथग प्रमाण ही देवाम अस्सुतम देवो प्रमाण ही देवाम अस्सुतम देवो प्रमाण ब्रीहि गृह पुन्याय ब्रह्मे देवा वेद का मन्त्र कहता है कि एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म की जिज्ञासा वाला गृह में यदि अन्न जल से पीड़ित रह जाता है तो गृह-आश्रम में रहनें वालो के पुण्य ले जाता है और वहां अपने पाप कर्मों को त्याग देता है। यह वेद का मन्त्र कहता है। प्रभु! तो हम तो इसलिए पापी है। हम गृह हैं, गृह स्वामिनी हूँ और मेरा विचार यह बना है कि ब्रह्मचारी अपने पुण्य छोड़ हमारे पुण्य ले जा करके पाप को त्याग देता है। उन्होंने कहा नहीं देवी यह वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है परन्तु मैं प्रयास करूंगा।

नचिकेता यमाचार्य संवाद

बेटा! देखो उन्होंने देवी को त्याग करके वह नचिकेता के समीप पहुंचे। नचिकेता ने ऋषि को दृष्टिपात करके उनके चरणो की वन्दना की और वन्दना करते हुए अमृतम प्रसन्न हो गये। उन्होने कहा हे नचिकेता तुम्हें तीन रात्रि तीन दिवस हो गये हैं तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ तुम तीन वरों में जो इच्छा हो वह स्वीकार करो। बालक नचिकेता ने कहा हे पितर! हे यम मृत्यु को विजय करने वाले देवता मैं यह चाहता हूँ कि मेरे पिता ने जिस अभिलाषा से सर्व द्रव्य देखो वह याग में हूत कर दिया है वह मेरे पिता की इच्छाएं पूर्ण हो जानी चाहिए। यमाचार्य यथार्थ और देखो तथास्तु कह करके शान्त हो गये। उन्होंने कहा मैं भगवन द्वितीय वचन में चाहता हूँ क्या यह अमृतम यह मानों देखो स्वर्ग क्या है? ऋषि ने कहा अमृतम स्वर्गम ब्रह्मा देवम और तीसरा वचन मेरा यह कि आत्मा शरीर को त्याग करके कहां जाता है? मेरे पुत्रों! बालक नचिकेता ने जब गुरू से यह प्रश्न किया तो गुरू बड़े प्रसन्न हुए। उन्हांने कहा नचिकेता तुम यहां अन्न जल का पान करो मैं तुम्हारे प्रश्नों का तुम्हें उत्तर दुंगा। यमाचार्य के वाक् पान करते हुए नचिकेता बड़े प्रसन्न हुए और उन्होने उन्हें अन्न जल का पान कराया। वह प्रसन्न हो गये और प्रसन्न हो करके उन्होंने यह कहा हे नचिकेता! तीन प्रकार की अग्नियों की पूजा

करने का नाम स्वर्ग कहा गया है। तीन प्रकार की अग्नि गार्हपत्य, गृहपत्य और वैश्वानर यह तीन प्रकार की अग्नि हैं इन अग्नियों का पूजन करने वाला ही मानों देखो स्वर्ग का स्वामी बनता है। सबसे प्रथम ब्रह्मचर्य में गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन होता है, गार्हपत्य में ब्रह्मचारी तपता है अपने ब्रह्मचर्य से और वह विद्या को देखो सजातीय बनाता है और सजातीय बना करके उसका अध्ययन करता है विद्या का और उस समय देखो याग में परणित हो जाता है और आध्यात्मिक और भौतिक याग दोनो यागों में परणित हो करके ही मानों देखो अपनी विद्या का अध्ययन करता है और वह विद्वान देखो बुद्धिमता में प्रवेश होता है अपने में समाहित हो जाता है वह मानों देखो प्रथम अग्नि है। द्वितीय अग्नि का नाम गृहपत्य नाम की अग्नि है जिससे गृह ऊंचे बनते हैं जो भी माता-पिता बनना चाहता है वह अपने में यह विचार ले कि हमें देखो अपने विचारों को ऊंचा बनाना है और गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करना देखो अपने गृह में याग करना है दर्शनों का अध्ययन करना है और जिस क्रियाकलाप को देखो माता-पिता करते हैं उसी क्रियाकलाप को पुत्र-पुत्रियाँ, सन्तानें करने लगती हैं। जब एक सूत्र में सब हो जाते हैं क्रियाकलाप हो जाता है तो गृह स्वर्ग बन जाता है। वह गृहपत्य नाम की अग्नि है। तृतीय अग्नि का नाम वैश्वानर है। जिसमें बेटा! देखो गृह-स्थली को त्याग करके विद्यालयों में जो अग्नि प्रदीप्त है जो ब्रह्मचारियों को जो विद्या प्रदान की जाती है यह तीन प्रकार की अग्नियों की पूजा करने का नाम ही बेटा देखो स्वर्ग कहा गया है। ऋषि ने अपना सूक्ष्म, बेटा! मैं इसकी विवेचना तो कल ही करूंगा आज तो केवल तुम्हें परिचय दे रहा हूँ और परिचय यह कि ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में विद्यमान है और वह ब्रह्मचर्य का अध्ययन करता हुआ वह गार्हपत्य नाम की अग्नि को अपने में चेता रहा है विद्या के द्वारा, अपने प्राणायाम और साधना के द्वारा मेरे प्यारे! देखो वही बुद्धिमता ब्रह्मणे अपने ब्रह्मवर्चोसी को अपने में महान बनाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो नचिकेता को जब यमाचार्य ने कहा कि इन तीन प्रकार की अग्नियों का पूजन करने का नाम याग है और वह इस प्रकार का याज्ञिक पुरुष होता है वही मानों देखो तीन प्रकार की अग्नियों को जानने वाला स्वर्ग का स्वामी बनता है।

तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ मैं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और परिचय क्या है कि वाजश्रवा ने ऋषि-मुनियों के समीप विद्यमान हो करके यह कहा कि प्रभु! मैं याग करना चाहता हूँ मैं अपने को स्वर्ग में ले जाना चाहता हूँ मैं अपने को मोक्ष में ले जाना चाहता हूँ। तो मानों देखो नचिकेता ने यमाचार्य से ये ही प्रश्न किया कि मेरे पिता की इच्छा पूर्ण। हो तो मुनिवरों देखो हमारे यहां दार्शनिक पुरुषों ने इसका बड़ा महत्व और इसका वर्णन किया है और यमराज उसे कहते हैं जो मृत्यु को विजय कर लेता है। यम कहते हैं मृत्यु को, जो मृत्यु को विजय करता है वही यमराज कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने मृत्यु को विजय किया और याम अमृतम नचिकेता को उन्होंने अपना मन्तव्य प्रगट कराया। तो बेटा आज मैं इतना ही वाक् तुम्हें प्रगट करूंगा। शेष चर्चाए तुम्हे मैं कल प्रगट करूंगा। तीन प्रकार की अग्नि और मानों देखो कुछ और भी चर्चाऐं, आत्मा की चर्चाऐं मैं कल प्रगट करूंगा। आज का विचार अब यह सम्पन्न होने जा रहा है।

आज के विचारों का अभिप्राय यह कि प्रत्येक मानव को अपने में अपनेपन को जान करके अपने में समाहित हो जाना चाहिए और अपनी महानता में रमण करना चाहिए। जिस महानता में रमण करने वाला मानव देखो अपनी मानवीयता में रत्त हो करके अपनी मानवीयत्व में रम बम ब्रह्मा वाचस्सुतम देवत्वाम वह देवताओं को प्राप्त हो जाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः कि प्रत्येक मानव को अपने में अपनेपन को विचारना

चाहिए प्रभु का चिन्तन करते हुए प्रभु की सृष्टि को निहारना चाहिए कि वह प्रभु कितना रचनाकार है, कितना देवत्व को प्राप्त हो रहा है। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदां का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम्माहम् प्राची रथम्। ओ३म् रथम् मन्थाः प्राची वरूणाश्वमाम् आपा रथम् ब्रह्मणाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनॉक 26-जून-1992

समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : श्रीमति शर्बती देवी, खुर्रमपुर, गाजियाबाद।

१२ यमाचार्य-नचिकेता संवाद 27-जून-1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारें यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस महामना परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुण-गान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा वेदज्ञ है वेदाम् प्रकाशाम भूतम ब्रह्मणां व्रतम देवा। वेद का आचार्य यह कहता हैं कि वेदाम् प्रकाशाम भूतम ब्रह्मा जो मानों देखो पंच-महाभूतों को जो प्रकाश देने वाला है वह मानो ईश्वर वेदज्ञ कहलाता है। अमृतम प्रकाशाम अन्तःकरण सुतम ब्रह्मा वेद का आचार्य कहता है कि यह वेद मानव के अन्तःकरण का प्रकाशक है क्योंकि हमारे यहां वेद नाम प्रकाश को माना गया है। हम आचार्यों से यह कहा करते थे क्या हे पूज्यपाद! प्रकाश तो आप सूर्य को कहते हैं। तो उन्होंने कहा कि जैसे मानव के नेत्रों का प्रकाश यह सूर्य है इसी प्रकार हमारे अन्तःकरण का जो प्रकाशक है अन्तः करण को जो प्रकाश में लाने वाला है वह वेद कहा जाता है। तो इसलिए प्रत्येक मानव को अपने अन्तःकरण में पंच-प्रकार की अग्नियों का चयन कराना चाहिए। तो हमारे यहां जैसे नेत्रों का देवता यह सूर्य है इसी प्रकार अन्तःकरण का जो देवता है, प्रकाशक है वह हमारे यहां वेदाम प्रकाशाम भूतम ब्रह्मा वह वेद है जो पंच-महाभूतों को प्रकाश में लाने वाला है। तो विचार आता रहता है, वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू अपनी मानवता को जानने का प्रयास कर क्योंकि वेद का मन्त्र हमें नाना प्रकार की आख्यायिकाऐ प्रगट कर रहा है और वेद का मन्त्र हमें कहता है हे मानव! तू आत्मा को जानने का प्रयास कर जो तेरे पंच-महाभूतो के लोक में विद्यमान रहता है।

आत्मा का लोक

एक समय बेटा! महर्षि साकल्य मुनि ने ऋषि महर्षि जालवी से यह कहा कि प्रभु आत्मा का लोक क्या है? तो उन्होंने एक वेद-मन्त्र को उद्गीत रूप में गाया और यह कहा वरणाम ब्व्हा प्रकाशाम भूतम ब्रह्मण लोकाम मानो उन्होंने कहा कि पंच-महाभूतों का जो लोक है, आत्मा का यह जो लोक है यह पंच-महाभूत हैं। पंच-महाभूतां का निर्माणवेत्ता वह चैतन्य-देव है और यह आत्मा उसमें वास करने वाला है। तो यह जो हमारा मानव शरीर है यह पंच-महाभूतों का लोक है। यह आत्मा का लोक क्योंकि लोक कहते हैं गृह को और जो उसमें वास करता है वह उसी का लोक कहा जाता है। तो विचार आता रहता है कि आत्माम भूतम लोकाम वर्णस्सुतम मानो देखो वह हमारा वरणीय देव है जो पंच-महाभूतां को प्रकाश में गतिवान बनाने वाला है। तो मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो वह मौन हो गये।

दो प्रकार का विज्ञान

इसलिए आज का हमारा वेद-मन्त्र कहता है हे मानव! तू वेद को जानने का प्रयास कर। वेद में नाना प्रकार की आख्यायिकाए आती हैं और उस ज्ञान को पान करने वाला ही अन्तःकरणीय प्रकाश वाला बन जाता है। हमारे यहां दो प्रकार के विज्ञान प्रायः परम्परागतों से रहे हैं। एक विज्ञान जो भौतिकवाद कहलाता है और दूसरा विज्ञान जो आध्यात्मिकवादी है। तो बेटा देखो! आध्यात्मिक-वेत्ता जब वह अपने पंच-महाभूतां से उपराम होता है परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार कर लेता है तो वह जानो कि वह आध्यात्मिकवादी परमपिता-परमात्मा के राष्ट्र में चला गया है और भौतिक विज्ञान मानो देखो उसे कहा जाता है जो अणु और परमाणु के ऊपर अन्वेषण करता रहता है और लोक-लोकान्तरों की यात्रा में प्रवेश करता रहता है। मुझे बेटा वह काल

स्मरण आता रहता है जब भारद्वाज मुनि के यहां नाना प्रकार की विज्ञानशाला और महर्षि सोमकेतु ऋषि महाराज अपने में अन्वेषण करते और ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि दोनों उनके सहायक बन करके नाना प्रकार के यन्त्रो का निर्माण करते रहे हैं और यन्त्रो में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के लोक लोकान्तरो की उड़ाने उड़ते रहे हैं। बेटा मुझे वह काल स्मरण है जब महर्षि भारद्वाज-मुनि के यहां कुम्भकरण अपनी अध्ययन क्रियाओं में लगे हुए थे और महाराजा कुम्भकरण वह नाना-यन्त्रों में विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरों की यात्रा करते रहे हैं।

आज बेटा! मैं तुम्हे विज्ञान के वागंमय ने नहीं ले जाना चाहता हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि मानव आध्यात्मिक-वेत्ता बन करके अपनी आत्मा का चिन्तन करना चाहिए और आत्मा का चिन्तन जब तक नहीं होता जब तक भौतिक विज्ञान को नहीं जान लेते और भौतिक विज्ञान मानो देखो उस आत्मा के लोक को कहा जाता है क्योंकि परमपिता-परमात्मा का जो राष्ट्र है परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है उसमें आलस्य और प्रमाद नहीं होता है वह अन्धकार से रहित है। जहां आलस्य और प्रमाद नहीं है तो वहां सदैव प्रकाश रहता है और जहां प्रकाश रहता है वहां जीवन रहता है और जहां जीवन रहता है वहां परमात्मा के राष्ट्र को मानव निहारता रहता है। अन्धकार में मृत्यु है और प्रकाश में जीवन है तो हमें जीवन के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। तो बेटा हमारा वेद-मन्त्र नाना प्रकार की आख्यायिकाओं का वर्णन करता रहता है। आज मैं बेटा उस सन्दर्भ में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

स्वर्ग का मार्ग

विचार-विनिमय केवल हमारा यह आत्माम भूतम ब्रह्मा आत्मा के ऊपर हमारा चिन्तन होना चाहिए। आत्म-चिन्तन करने वाला इस संसार की नाना प्रकार की त्रुटियों से उपराम हो जाता है। तो आओ बेटा! देखो तुम्हें मैं उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहां मुनिवरो देखो उद्दालक-गोत्र के ब्रह्मचारी नचिकेता अपने आचार्य, यमराज के द्वारा नाना प्रकार के प्रश्न कर रहे हैं, अपनी जिज्ञासा प्रकट कर रहे हैं। हमारे यहां दो प्रकार का प्रसंग होता है-एक प्रसंग वह होता है जो अपने को मानो कुछ उद्देश्य लिए हुए होता है और एक वह होता है जो जिज्ञासा से युक्त होता है। तो बाल ब्रह्मचारी नचिकेता जो जिज्ञासु है और जिज्ञासु यथार्थता में प्रवेश करना चाहता है। मेरे प्यारे! उन्होंने आचार्य से कहा हे प्रभु मैं अमृताम ब्रह्में वरणं ब्रहे जैसे मेरे पिता की इच्छा पूर्ण आप ने की है उसी प्रकार मैं स्वर्ग में जाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। उन्हांने कहा हे ब्रह्मचारी! तुम गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करो और गार्हपत्य नाम की अग्नि वह होती है जैसे आचार्य के समीप जब ब्रह्मचारी जाता है वह ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करके कहता है। हे ब्रह्मचारी! आओ मैं तुझे मृत्यु से पार कराना चाहता हूँ। तो बेटा वह कहता है चक्षु में शुन्धामि, प्राणं में शुन्धामि, श्रोत्रं में शुन्धामि त्वचा में शुन्धामि। वह शुन्धामि कहता हुआ कहता है ब्रह्मचारी तुम इन्द्रियों से पार हो और तू प्रत्येक इन्द्रियां से देखो उपरामता को प्राप्त हो जिससे मृत्यु तेरे निकट न आये। मेरे प्यारे ब्रह्मचारी अपने में रत्त हो जाता है और वह एकन्त स्थली में जब अध्ययन करता है तो ब्रह्मचारी अध्ययन करता है अपनी इन्द्रियों को मृत्यु से पार ले जाता है। मेरे प्यारे देखो अग्नि का अग्नि में और तरलत्व मानो आपो में और गुरुत्व इन्द्रियों का जो प्रधान है वह गुरुत्व पृथ्वी में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे देखो इसी प्रकार जब ऋषि ने अमृतम ब्रह्मा जब ऋषि ने देखो यह वर्णन कराया कि तम गार्हपत्य नाम की अग्नि का अध्ययन करो और तुम ब्राह्मण बन जाओ। हे ब्रह्मचारी तुम ब्रह्मवेत्ता बन करके ब्रह्मवर्चोसी बन जाओ। उन्होंने कहा प्रभु! मैं ब्रह्मवर्चोसी कैसे बनूंगा मैं ब्रह्म को कैसे जानू? उन्होंने कहा ब्रह्म और चरी को ऊपर से अपने में धारण करो। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति

को, दोनों को अपने में समावेश कर लो और जो यह तुम्हारा सूत्र देखो यह जो प्राणमयी सूत्र चल रहा है इस सूत्र को मनका बना करके और यह मानों देखो जैसे माला मनको से बनती है और सूत्रो से बनती है। सूत्र और मनके दोनों का समन्वय होता है इसी प्रकार तुम मानो देखो इन दोनों इन मनको को सूत्र में पिरो दो ब्रह्म सूत्र में पिरोने से ही तुम्हारी माला बन जायेगी और वह माला देखो अपने में देखो धारयामि बन जाती है। तो विचारवेत्ता ने जब ऐसा वर्णन किया, ऋषि ने, तो बेटा देखो नचिकेता अपने में मौन हो गये।

द्वितीय अग्नि को उन्होंने कहा कि गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करो और गृहपत्य नाम की अग्नि में मानो देखो मेरी माता और पितर दोनों जाते हैं। मुझे बेटा वह काल स्मरण आता रहता है ऋषि कहता है क्या जब मदालसा ने अपने में, अपने गर्भस्थल में आत्मा का प्रवेश हो गया तो माताएं बेटा उस विद्या को प्रायः जानती रही हैं जिस विद्या से मुनिवरो देखो गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रगट करती हैं माँ। मेरे प्यारे! देखो गर्भ की आत्मा ब्रह्मणा देखो माता मदालसा साधना में परणित रही। जब बाल्यकाल में देखो योगीजन प्राणो को सूत्र में लाना जानते हैं और प्राण को एक दूसरे में मिलान करना जानते हैं उसे अन्तः शरीर में जो आत्मा विद्यमान है शिशु है उससे वह वार्ता प्रगट करती हैं। माता मदालसा ने जब आत्मा के गर्भ से वार्ता प्रारम्भ की तो उसने कहा हे बाल्य! शुद्ध, बुद्ध, निरंजन इस प्रकार का उद्गीत गाती हुई बोली हे आत्मा। तुमने प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को मुनिवरो देखो उदान में प्रवेश करती मिलान करती वह आत्मा गर्भ की आत्मा से माता वार्ता प्रगट करने लगती है। यह कोई नवीन विद्या नहीं है कि हम अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता न प्रगट कर सकें। प्रायः माताओं ने इस प्रकार की विद्या को जाना। ये विद्याऐं महर्षि दुर्वासा मुनि भी जानते थे। मानो देखो महर्षि दुर्वासा मुनि ने बहुत सी माताओं के गर्भम ब्रह्मं ब्रह्मे उन्होंने बेटा देवत्व को प्राप्त कराया। आज मैं दुर्वासा मुनि की चर्चा प्रगट नहीं कर रहा हूँ केवल यह कि एक-एक मन्त्र में जो-जो देवता जिस मन्त्र का वह देवता है उसी का व्यवधान करना यह माताओं का प्रायः कर्त्तव्य रहा है। तो जब माता इस प्रकार के क्रियाकलापों में परणित रहती हैं तो पितरजन भी मानो इसी प्रकार की विद्या का अध्ययन करते हैं और अध्ययन करते हुए कहते हैं आओ याग करें। प्रत्येक गृह में माता-पिता का याग करना, दर्शनों का अध्ययन करना और परस्पर मानो दार्शनिक चर्चाए करना बेटा! उन वार्ताओं को उनके गृह में रहने वाले, वास करने वाले ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणीयां सर्वत्र मानो माता-पिता के पद चिन्हों पर गमन करने वाले और वह मानो जो माता-पिता का जो क्रियाकलाप होता है उसी को बाल्य-बालिका ग्रहण करते हैं। मानो इसी प्रकार वेद का ऋषि कहता है हे मानव! यदि तू अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है गृह-स्वामी और गृह-स्वामिनी तो मानो दोनों को परस्पर प्रीति और ज्ञान की मानो पुष्पांजलियों को उत्पन्न करना है जिससे तुम्हारा गृह प्रकाश में प्रकाशित हो जाए। मेरे पुत्रो देखो जब इस प्रकार ऋषि ने जब वर्णन किया उन्होंने कहा हे बालक नचिकेता यदि कोई गृह-स्वामी और गृह-स्वामिनी अपने को ऊंचा बना लेते हैं तो गृह में रहने वाले बाल्य-बालिका उनके पदचिन्हों पर अपनी क्रियाओं में रत्त हो जाते हैं, गृह स्वर्ग बन जाता है और वह विचार रूपी जो अग्नि है जो गृहपत्य नाम की अग्नि कहलाती है जिससे गृह उदबुध होते हैं और गृहों में प्रकाश आता है मेरे प्यारे देखो एक महानता की ज्योति जागरुक हो जाती है। तो विचार-विनिमय करने का अभिप्राय यह कि मुनिवरो यह गृहपत्य नाम की अग्नि है जो गृह मैं सदैव परणित रहती है। विचारो का नाम अग्नि है। माता-पिता जब वेद का अध्ययन करते हैं और वेद का अध्ययन करते हैं अंगो और उपांगों को जान करके उसके अनुसार क्रियाकलाप करते हैं तो बाल्य-बालिका, गृह मानो देखो स्वर्ग बन जाता है। तो इस प्रकार उच्चारण करके ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी! यह गृहपत्य नाम की अग्नि कहलाती है और गृहपत्य नाम की अग्नि को ऊंचा बनाना तुम्हारा कर्तव्य है।

तृतीय अग्नि का नाम मानो देखो, आवहनीय नाम की अग्नि कहते हैं। आवहनीय कहते हैं जो विद्यालयों में पनपती रहती है। हमारे यहाँ देखो भगवान-मनु से जब कालेत्वर ऋषि ने यह प्रश्न किया क्या महाराज देखो इस संसार को ऊंचा बनाने के लिए शिक्षा-प्रणाली कैसी होनी चाहिए? तो मुनिवरो भगवान्-मनु ने यह कहा हे ऋषिवर! मेरे विचार में तो यह आता है क्या शिक्षा-प्रणाली में जब विद्यालयों में शिक्षा देने वाले महान होने चाहिए। शिक्षा देने वाले मानो अपनी इन्द्रियों के क्रियाकलापों से उपराम होने चाहिए। जब वह वानप्रस्थ और देखो वानप्रस्थी दोनो ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणीयों को शिक्षा देते हैं तो वह संसार के क्रियाकलापों से उपराम हो जाते हैं। ब्रह्मचारी को देखो पुरुष वानप्रस्थ शिक्षा देने वाला हो और ब्रह्मचारिणीयो को मानो देखो जो गृह से उपराम हो गये हैं त्याग पूर्वक बेटा देखो वह विद्यालयो में ब्रह्मचारिणीयों को अपना उपदेश दें। जिससे उनकी किसी प्रकार की किसी भी इन्द्रिय की कामना न रहते हुए ऐसा जो वानप्रस्थी है वह मानों देखो दोनों वर्गों को ऊंचा बना देगा। बेटा देखो ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी उस विद्या को पान करके अपने में महानता का दर्शन करेगें। तो मेरे प्यारे! देखो उसी के लिए हमारे यहाँ भगवान् मनु ने एक नियम बनाया कि जो वानप्रस्थी है राष्ट्र का उस पर अधिपथ्य होना चाहिए। राष्ट्र का ही मानो देखो वहां उस विद्वानों के द्वारा अध्ययन की प्रतिक्रिया होनी चाहिए उनका आहार और व्यवहार वह सब राष्ट्र पर उनका दायित्व होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो वह अमृतम ब्रह्मा वह नाना प्रकार की विद्या दे करके ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणीयों को ऊंचा बनाते हैं तो समाज ऊंचा बन जाता है।

संन्यासी

तो इस प्रकार मुनिवरो देखो यह तीन प्रकार की अग्नियां हैं-एक में ब्रह्मचारी तपता है द्वितीय में मानो देखो मातृ-पितृ तपते हैं और तृतीय में मुनिवरो देखो वानप्रस्थ तपता है और चतुर्थ जो अग्नि है उसमें बेटा! संन्यासी तपता रहता है। संन्यासी इसीलिए मानो देखो अग्नि वस्त्रों को धारण करता है जैसे अग्नि का स्वरूप होता है ऐसे ही मानो देखो ज्ञानी और विवेकी जो संन्यासी होते हैं उनका देखो वस्त्र भी ऐसा ही हो और अन्तःकरण भी इसी प्रकार ज्ञान से तपा हुआ होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो विचार आता रहता है इस प्रकार देखो यह अग्नि में अपने प्रभु का ध्यानावस्थित होते हैं जिससे ज्ञानाम भूतम ब्रह्मा जैसे राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा था महाराज ये अग्नेय वस्त्रों का अभिप्राय क्या है? तो याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा अग्नेय वस्त्रों का अभिप्राय वस्त्र अग्नेय हों या न हों परन्तु देखो अग्नेय वस्त्र भी हों और अन्तःकरण भी उसके अनुसार होना चाहिए तो वह मानो मानव देव पुरी को प्राप्त हो जाता है वह देवत्व को धारण कर लेता है।

मुनि व ऋषि

तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया और ऋषि यह उच्चारण करके मुनिवरो देखो वेदी तक चले गये। उन्होंने कहा कि मुनि उसे कहते हैं जो अंगो और उपांगो से जानने वाले और विवेकी पुरुष मुनिवरो देखो जो बाल्य-प्रवृत्ति का बन जाता है उसको मुनि कहते हैं और ऋषि उसे कहते हैं जो मानो अपने ऋषित्व में रमण करने वाला, अपने में अनुसन्धानवेत्ता और अणु और परमाणुओं को अपने में धारण करके नाना लोक-लोकान्तरो की उड़ाने उड़ने वाला हो वह ऋषि कहलाता हैं क्या मुनि प्रवृत्ति को धारण करके अपने विवेक को अपने में लाने का प्रयास करेगा।

नचिकेता की परीक्षा

मेरे पुत्रो! देखो ऋषि ने इस प्रकार अपनी विचारधारा व्यक्त की और वह ऋषि मौन होने लगे इतने में बेटा नचिकेता ने कहा हे प्रभु! आप ने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है मैं स्वर्ग में चला जाऊंगा परन्तु वहां

जाने से पूर्व मेरा एक प्रसंग और है। उन्होंने कहा क्या? क्या मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहां जाता है? हे प्रभु! यह मेरी जिज्ञासा बनी रहती है। मैं आचार्यों से प्रश्न भी करता रहता हूँ परन्तु मेरी जिज्ञासा देखो वह बलवती होती रहती है प्रभु! मेरे प्यारे! देखो नचिकेता ने जब ऐसा कहा तो यमाचार्य ने विचारा कि यह ब्रह्मचारी प्रश्न तो किए जा रहा है परन्तु यह इस विद्या का अधिकारी भी है अथवा नहीं। उन्हांने कहा मैं व्रणे उन्होंने मुनिवरो देखो एक रथ स्वर्ण से सुशोभित मानो श्रृंगारित करते हुए और मुनिवरो देखो उस रथ को सब मानो देखो अश्व का जो श्रृंगार है वह भी स्वर्ण का है और उसमें विद्यमान होने वाली कुछ सुन्दरियां हैं और अंग-संग मानो देखो उसमें बंधा हुआ एक मानो देखो गौ इत्यादि दुग्ध देने वाले पशु है। उन्होंनें कहा हे ब्रह्मचारी! नचिकेता तुम पृथ्वी के राज को भोगो यह मैं तुम्हें पृथ्वी का राज दे रहा हूँ। तुम आत्मा के विषय में क्या प्रश्न करते हो मानो देखो आत्मा के प्रसंग में बड़े-बड़े महापुरुष चले गये हैं और देखो वह अन्त में नेति-नेति कह करके शान्त हो गये हैं। तो हे प्रभु, हे ब्रह्मचारी तू मानो देखो इन नाना सुन्दरियों को भोग और यह दुग्ध देने वाला पशु है इसका पालन कर और देखो यह पृथ्वी के राज को भोगो तुम अधिपति बनों, तुम मानो प्रजापति बनों और तुम पृथ्वी के राजा बन करके राज को भोगो। बालक नचिकेता मौन हो करके बोले हे प्रभु! आपका वाक् तो बड़ा विचित्र है परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ प्रभु! एक सुन्दरी से मेरा स्नेह हो गया है और वह सुन्दरी मेरे से पूर्व उसका निधन हो गया तो मुझे अपार कष्ट होगा। यह मुझे नहीं चाहिए। हे प्रभु! यदि दुग्ध देने वाला पशु है पशु से भी मुझे प्रीति बन गई है तो वह भी मेरे संस्कारो की उपलब्धि में सहायक बनेगा संस्कारों में जन्मों का प्रादुर्भाव होगा। तो हे प्रभु! देखो मैं दुग्ध देने वाले पशु को भी नहीं चाहता। हे भगवन्! यदि मैं पृथ्वी के राज को भोगू तो मानो देखो कहीं राष्ट्र में क्रान्तियां रही हैं कहीं राष्ट्र में मानव मानव का हनन कर रहा है। हे प्रभु! देखो कहीं राष्ट्र में नाना प्रकार की क्रान्तियां आ रही हैं स्वार्थवश हो करके, हे प्रभु! देखो वह मुझे मेरे संस्कारों को जन्म देता रहेगा और मैं मानो देखो उस राष्ट्र को नहीं चाहता जिसमें नाना प्रकार की मानो देखो हिंसा हो। मैं अहिंसा में परणित होना चाहता हूँ। हे प्रभु! मुझे यह अश्व नहीं चाहिए, स्वर्ण नहीं चाहिए क्योंकि महापुरुषो का जो स्वर्ण है वह मानो यह स्वर्ण नहीं है महापुरुषों का यदि कोई स्वर्ण है, आभूषण है तो उसका ज्ञान है और ज्ञान में जब वह रत्त रह जाता है तो वह स्वर्ण बन जाता है।

उन्होंने एक आख्यायिका प्रगट की। उन्होंने कहा क्या एक महात्मा रहते थे गंगा तट पर मानो देखो जलाशय के तट पर रहते थे। वह नग्न थे। एक समय देखो अयोध्या का राजा भ्रमण करते हुए मुनिवरो देखो उस मार्ग में जा पहुंचा। दृष्टिपात किया एक महात्मा नग्न हैं और वह प्रभु का चिन्तन कर रहे हैं, मनन कर रहे हैं। राजा ने विचारा क्या मैंने तो यह प्रतिज्ञा की है कि मेरे राष्ट्र में कोई दीन नहीं रहना चाहिए धनवान धनम ब्रह्मे धन से दीन नहीं रहना चाहिए। यह साधु तो, यह पुरुष तो देखो नग्न रहता है और इसके द्वारा वस्त्र भी नहीं हैं। उन्होंने अपने मन्त्री-गणों से कहा जाओ कुछ मुद्रा दे करके आओ। महात्मा के द्वारा पहुँचे कि महाराज राजा ने यह मुद्रा दी हैं। ऋषि ने कहा जाओ किसी दीन को दे दो। राजा के समीप पहुँचे मन्त्री उन्होंने कहा प्रभु दीन के लिए कहा है। राजा ने विचारा कि यह मुद्रा सूक्ष्म हैं। उन्होंने और विशेष मुद्राएं दीं और मुद्राएं जब दी तो उनके द्वारा मन्त्रियों ने कहा लीजिए भगवन्। उन्होंने कहा जाओ किसी दीन को दे दो। मेरे प्यारे! देखो वह अमृतम राजा के समीप पहुँचे। राजा ने मुद्राओं को विशेष मुद्रा और दे करके महात्मा के समीप पहुँचे और महात्मा से कहा कि महाराज यह स्वीकार कीजिए। उन्होंने कहा राजन् मैने कई समय कहाँ है तुम किसी दीन को दे दो। राजा ने कहा प्रभु मेरे राष्ट्र में आपसे दीन कोई नहीं जिसके द्वारा वस्त्र भी नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं तो राजाओं का राजा हूँ। उन्होंने कहा क्या जब तुम राजा के राजा हो तो तुम्हारे द्वारा सेना कहाँ है राष्ट्र को,

राष्ट्र की सेवा करने के लिए। उन्होंने कहा राजन् मेरा कोई शत्रु ही नहीं है इसलिए मुझे सेना की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा तो तुम्हारे द्वारा द्रव्य कहाँ हैं राष्ट्र के क्रियाकलाप के लिए। उन्होंने कहा कि मेरे द्वारा एक रसायन ऐसी है, मैं मानो देखो रसायन से स्वर्ण बना लेता हूँ और राष्ट्र का पालन चलता है। बेटा! राजा ने विचारा उन्होंने कहा कि मेरा स्वर्ण बना दीजिए। अमृतम बेटा! उस समय राजा मुझे कह करके मौन हो करके अपने राष्ट्र को चले गये। विश्राम गृह में पहुँचे तो उन्हें निद्रा नहीं आ पाई और यह अपने में विचारने लगा कि महात्मा से मैं उस रसायन को जानूँ जिससे स्वर्णपति बन जाऊँ मैं। तो बेटा! देखो राजा मध्य-रात्रि में वहाँ से गमन करते महात्मा के समीप पहुँचे। महात्मा ने कहा कौन? उन्होंने कहा कि मैं राजा हूँ। ऐसे इस समय कैसे? उन्हांने कहा प्रभु! मुझे जो आप मानो देखो वह प्रसमं ब्रहे वह मुझे देखो मेरा स्वर्ण बना दीजिए अपने यत्र से। उन्होंने कहा अरे राजा! बोलो कि दीन तुम हो या मैं हूँ? राजा ने कहा प्रभु दीन तो मैं ही हूँ परन्तु मेरा स्वर्ण बना दीजिए। अच्छा, तुम मेरे द्वारा आया करो, नित्यप्रति। मुनिवरों देखो वह राजा उनके यहाँ आने लगे। उन्होंने उन्हें आत्मा परमात्मा का ज्ञान दिया। क्या यह आत्मा यह है, परमात्मा यह है, प्रकृति यह है। जब बेटा उन्हें ब्रह्मज्ञान हो गया, महात्मा ने अपने योगाभ्यास से दृष्टिपात किया कि अब राजा दीन नहीं रहा है उन्होंने कहाँ राजन, जब वह पूर्ण ज्ञानी हो गया, विवेकी बन गया, क्या हे राजन! मैं तुम्हारा अब स्वर्ण बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहाँ हे ऋषिवर! जो मेरा आप स्वर्ण बनाना चाहते थे वह स्वर्ण मेरा बन चुका है, मुझे स्वर्ण की आवश्यकता नहीं है।

आत्मा शरीर को त्यागकर कहाँ जाता है?

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या कि मानव का ज्ञान और विवेक जो है वह सब से महान द्रव्य है, यह स्वर्ण है, यह मानव की सम्पदा है इस सम्पदा को अपने में धारण करना चाहिए। तो मेरे प्यारे देखो अमृतम ब्रह्मा वर्णस्सुतम बालक नचिकेता ने कहा प्रभु! आप मेरा स्वर्ण बना दीजिए। प्रभु! मैं मानो यह द्रव्य नहीं चाहता। हे प्रभु! मैं आपकी शरणागत हूँ। आप ने मृत्यु को विजय किया यम आपको कहते है आप मुझे मेरा स्वर्ण बना दीजिए। मैं न तो द्रव्य मानो देखो दुग्ध देने वाला पशु चाहता हूँ, मैं यह न स्वर्ण चाहता, न पृथ्वी का राज चाहता इसमें देखो राजा-महाराजा सब नारकिक हो करके चले गये हैं। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने विचारा यह ब्रह्मचारी तो सुयोग्य है। उन्होंने कहा नचिकेता तुम्हें धन्य है क्या तुम दो आश्रमों को त्याग करके ब्रह्म-ज्ञान में प्रवेश कर रहे हो आओ तुम विराजो। वह एक पंक्ति में विद्यमान हो गये और उन्होंने कहा कि आत्माम भूतम ब्रह्मा लोकाम यह आत्मा जब शरीर को त्यागता है तो इस आत्मा के तीन प्रकार के शरीर कहलाते हैं। यह स्थूल शरीर है जिसमें चौबीस अव्ययों का निर्माण किया गया है। इसमें दस इन्द्रिया हैं और दस प्राण हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार है। यह मानो देखो चौबीस खम्बों का यह मानवीय शरीर कहलाता है और जब यह शरीर का विच्छेद होता है तो आचार्य कहता है कि अन्तम ब्रह्मा ऋतम देवा जब यह शरीर को त्यागता है आत्मा तो मेरे प्यारे! यह सूक्ष्म शरीर को ले करके जाता है और अमृतम ब्रह्मा व्रते मानो अमृत को प्राप्त हो करके और जैसा इसका अन्तिम शरीर को त्याग करके जैसा मन में विचार होता है, बुद्धि में तारतम्य होते है उसी के अनुसार मानव देखो अन्तरिक्ष में चला जाता है और यह तीन प्रकार की चार प्रकार की वायु में भ्रमण करता है। एक इन्द्र नाम की वायु है, एक मृचि नाम की वायु है, एक स्वेधज नाम की वायु है और एक अग्नि वायु कहलाती है। मानों देखो उस अग्नि में इस आत्मा के संस्कारों का मन्थन होता है और मन्थन जब होता है तो जब यह पुनः किसी माता के शरीर में संस्कारों के आधार पर जन्म लेता है। तो यह पूर्व देखो संसार को जान करके उसे वह जन्म के संस्कारों की आभा मानो बनी रहती है परन्तु देखो स्थूल स्मरण शक्ति उसमें लुप्त हो

जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो माता के शरीर में प्रवेश हो जाता है। तो विचार आता रहता है ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी! देखो आत्मा शरीर को त्याग करके वायु में भ्रमण करता है। पुनः माता के शरीर में प्रवेश करता है और यहीं आत्मा है जो मानो देखो सूक्ष्म-शरीर को जान करके उसमें मन, बुद्धि है, दस प्राण है और पञ्च तन्मात्राए होती हैं परन्तु उनमें वह मथन करता हुआ मेरे प्यारे कारण में प्रवेश हो जाता है। कारणा में ब्रह्मणां वृतम देखो यह वह एक मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है और मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करके जब मन जब मानो देखो ज्ञान और प्रयत्न एक सूत्र में जहां आए वहां केवल देखो आत्मा केवल यह आत्मा रह जाता है परन्तु देखो वह अमृतम ब्रह्मा मोक्ष की पगडण्डी को, पगडण्डी पर गति करने लगता है और वह जो परमपिता-परमात्मा चैतन्य हैं जो संसार का रचियता है, निर्माण करने वाला, संहार करने वाला और मानो देखो उसका पालन करने वाला है उस परमात्मा की प्रतिभा को प्राप्त हो करके अपनी मोक्षाणाम बुह्मे ऋतम देवा मेरे प्यारे! वह अपनी आभा में परणित हो जाता है।

आज मैं देखो उस आत्मा की इतनी गम्भीर विवेचना नहीं। तो ऋषि कहता है, यमाचार्य हे बालक नचिकेता! तुमने यह जान लिया मानो देखो आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहां जाता है अन्त मथे तो मथा मानो देखो अन्त में शरीर को त्यागते समय जो विचार रहते हैं उन्हीं विचारो की एक मानो एक सूत्र बना करके उसी पर रमण करता है और वह देखो मन्तव्य करके और वह माता के शरीर में प्रवेश हो जाता है।

देवलोक की आत्माएं

मेरे प्यारे! देखो यह ऋषि ने वर्णन किया कुछ आत्माएँ ऐसी हैं जो देवलोक को चली जाती हैं मानो योगाम्भासी हैं कुछ समय तक निद्वन्द हो करके योगी मानो देखो क्षेत्र में भ्रमण करती हैं। वह मुनिवरो देखो मोक्ष नहीं हुआ परन्तु कुछ आत्माओं को जीवन मुक्त कहते हैं। जीवन मुक्त उसे कहते है जो जीवन मानो देखो जीवन से वह मुक्त हैं, मरण से मुक्त हैं। मानो देखो जीवन से भी मुक्त हो जाते हैं परन्तु वह मध्यम योगम ब्रह्मे वेद की आख्यायिका कहती है जीवन मानो इसलिए जो शरीरों को सुइच्छा से धारण करते हैं और सुइच्छा से अपने शरीर को त्याग देते हैं। बेटा! जैसे मदालसा का जीवन मुझे स्मरण है जब मदालसा ने यह कहा था मैं संस्कार राजा से जब करा सकती हूँ जब मेरी इच्छा के अनुसार मानो मैं अपने क्रियाकलाप को करूं। राजा ने स्वीकार कर लिया। जब उनके तीन ब्रह्मचारी देखो ब्रह्मवेत्ता बन गये एक राजा बन गया तो उस समय उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि मैं अब बारह वर्ष के पश्चात् अपने शरीर को स्वेच्छा से त्यागूंगी। माता मदालसा ने जब बारह वर्ष का ब्रह्मचारी हो गया उस समय अपने राजा, पति को और एक सौ एक स्थली पर पुत्र को निहित करके उन्होंने कहा राजा अब मैं शरीर को त्याग रही हूँ। अब राजा ने कहा देवी मैं कहाँ जाऊंगा? उन्होंने कहा मैं नहीं जान पाती, मैं प्रतिज्ञा बद्ध हूँ, मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई है। मैं, जितना मुझे कार्य करना था वह मैने किया है। मैनें तीन ब्रह्मचारियों को ब्रह्मवेत्ता बनाया एक राजा है। मेरे प्यारे! देखो माता ने एक वस्त्र दे करके ब्रह्मचारी के कण्ठ में स्थिर करके और उसने गायत्री मन्त्रों का जप किया और प्राण को अपान में, अपान को समान में, व्यान में प्रवेश करके शरीर को त्याग दिया। मेरे प्यारे! देखो वह देव-लोक को प्राप्त हो गई।

यौगिक प्रतीति व अद्भुत आत्माएँ

मुनिवरो! देखो वह अद्भुत आत्मा होती है वह एक क्षेत्र ऐसा है जहां जिन आत्माओं का मोक्ष नहीं होता परन्तु वह उन लोकों में, उन आत्माओं के क्षेत्र में वह भ्रमण करती हैं कुछ समय वहाँ रहती हैं परन्तु जब उनका भोग वितरित हो जाता है तो पुनः माता के शरीर में प्रवेश हो जाती हैं और वह उन पुण्यवानों के गृह में जन्म लेती हैं जहां पुनः मानो वह योग में परणित हो करके पूर्व के अभ्यास की मुनिवरों देखो वह आत्मा मानो

योगाभ्यास में परणित हो जाती हैं। बेटा मैं गम्भीर क्षेत्रों में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि अभ्यस्थ का विषय है यह परन्तु में तुम्हे परिचय करा रहा हूँ। कुछ आत्माएं मानो यौगिक होती हैं कुछ आत्मा मानो एक प्रतीति होती हैं और मेरे प्यारे! देखो कुछ ऐसी होती हैं जो अद्भुत हैं। मेरे प्यारे! देखो वह शरीरणाम ब्रह्मा लोकाम व्रतम देवा। मेरे प्यारे देखो ऋषि ने कहा हे नचिकेता शरीर को त्याग करके आत्मा कहां जाता है, अपने-अपने लोक में प्रवेश करता है।

मेरे प्यारे! देखो नचिकेता बड़े प्रसन्न हुए और नाचिकेता ने कहा प्रभु। आपको धन्य है आपने मेरा अज्ञान दूरी किया। आपने मुझे मृत्यु से पार कराया है प्रभु! आप को धन्य है। आप वास्तव में यमाचार्य, यम हैं। यमाचार्य उसे कहते हैं जो यम मानो देखो मृत्यु को विजय कर लेता है। आपने वास्तव में मृत्यु को विजय किया है और मृत्यु विजय वह करता है जो ज्ञानी और विवेकी होता है जो संस्कारों को उद्बुद्ध करने वाला होता है।

अभ्यास से संस्कार उद्बुद्ध हो जाते हैं

मेरे प्यारे! देखो अंगिरस ऋषि गोत्र में श्वेतकेतु अंगिरस जिन्होंने बेटा! एक सौ पच्चीस वर्ष तक मुनिवरो देखो वह मौन हो गये थे और मौन हो करके अपने चित्त के संस्कारों को उद्बुद्ध करने लगे? तो बेटा देखो वह एक सौ पच्चीस वर्ष तक मुनिवरो देखो दो लाख पचानवे हजार पांच सौ बावन जन्मों के संस्कारों को बेटा चित्तमण्डल में जान पाये थे ऋषिवर। तो आज बेटा! देखो मैं उन वाक्यों में जाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि ऋषि बड़े अभ्यासी और अपने में अन्वेषण करने वाले वह मौन रह करके और वायु के तत्त्वों से अपने ऊदर की पूर्ति करने वाले रहे हैं। बेटा देखो वह पत्र और पुष्पों को अमृतम जिससे मन की धाराओं का जन्म होता है जिनसे मानो आत्मा को आत्म-तत्त्व को जानने का अवसर प्राप्त होता है वह कौन आत्मा है जो बेटा वायु का सेवन करती हैं। मुझे स्मरण है एक सौ पच्चीस वर्ष तक जब अंगिरस ने तप किया तो बेटा! एक समय हम पूज्यपाद गुरुजनों के द्वारा उनके आश्रम में पहुँचे तो वह खेत्री मुद्रा से अपने में देखो वह उन पोषक तत्वों को ग्रहण करते जिससे उदर की पूर्ति हो जाती। मेरे प्यारे! देखो पोषक तत्व अपने प्राण के द्वारा प्राण को अपान में मिलाकर के देखो शीतली से वह जल को सिंचन करते रहते उसी से उदर की पूर्ति होना और अन्तःकरण में जो संस्कार विद्यमान थे उन्हीं को जानना बेटा! एक ऋषि का क्रियाकलाप है। बेटा! गाड़ीवान रेवक की विचारधारा भी ऐसी रही। गाड़ीवान रेवक मुनि ने एक सौ पांच वर्ष तक गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत किया और वह इसी प्रकार का अभ्यस्थ होते रहे। मेरे प्यारे! देखो खेचरी-मुद्रा से जल को लेना और देखो कुम्भक प्राणायम करने से मुनियों देखो वह वह पोषक तत्वों को लेना मेरे प्यारे! देखो प्राण की प्रतिष्ठा को जान करके ही मुनिवरों देखो जन्म जन्मान्तरों के संस्कारो को जाना जाता है। तो आज बेटा मैं इस क्षेत्र में तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ केवल यह क्या निस्सम ब्रह्मा ऋतम देवा-वेद का ऋषि कहता है हे मानव तू इतने गम्भीर क्षेत्र में चल जहां परमात्मा का राष्ट्र ही तुझे प्राप्त हो जहाँ परमात्मा की महिमा ही तुझे महिमावादी बन करके संसार-सागर से पार हो जाये।

तो बेटा! देखो नचिकेता देखो अपने में सन्तुष्ट हो गया और यमाचार्य के चरणों में ओत-प्रोत हो गया और यमाचार्य ने अपना सौभाग्य स्वीकार किया कि यह ब्रह्मचारी मेरे जीवन में पात्रता को प्राप्त हुआ क्योंकि विद्या का पात्र बना जाता है जिस विद्या का जो पात्र है वह विद्या उसी को प्रदान करनी चाहिए। नचिकेता ने उस विद्या का अभ्यस्थ किया। बेटा! वह सागर से पार होने का ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसी बन गया।

तो विचार आता रहता है बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ मैं तो केवल तुम्हें परिचय

देने के लिए आता हूँ व्याख्यता नहीं हूँ केवल परिचय देने के लिए आता हूँ। परिचय यह क्या मुनिवरो देखो उस आत्मा को जानने का प्रयास करो हमारे अन्तःकरण में जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हैं उनको जानो और जान करके ही मुनिवरो देखो यह आध्यात्मिकवाद कहलाता है। आध्यात्मिकवाद में पहुँचो जहाँ परमात्मा का राष्ट्र ही तुम्हें प्रतीत होगा। तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आज का वाक् अब यह सम्पन्न होने जा रहा है कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा मैं शेष चर्चाए कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु रथं वाचन्नमः। ओ३म् ग्राहणाऽहम् अच्छा भगवन्! आज्ञा। दिनाँक : 27-जून-1992 समय : रात्रि 8 बजे। स्थान : श्रीमति शर्बती देवी, ग्राम खुर्रमपुर, गाजियाबाद।